

श्रीमद् राजचद्र प्रणीत तत्त्वज्ञान मार्थः

```
मनारान
मनुगाई म मोदी, अध्यक्ष
थीमद राजचाद माधम,
स्टेशन बगास, वाया बाणव
पोस्ट मोरिया-३८८१३ (गुजरात)
चौषी आयृत्ति
प्रव ३२००
विक्रम संबन् २०४२
र्दस्वी सन् १९८६
```

वर्दमान मुद्रणालय वाराणसी-२२१००१ अहो सत्पुरुपना वचनामृत मुद्रा अने सत्समागम ! गुपुष्त चेतनने नागृत करनार पडती वृत्तिन स्थिर राखनार, दर्शनमात्रयी पण निर्नेष, अपूर्व स्वभावने प्रेरक. स्वरूप प्रतीति अप्रमत्त समम् अने पण बीतराग निवित्रस्य स्वमावना कारणमूत,-छेन्ले अयोगी स्वमाव प्रगट करी अनत अञ्याबाध स्वरूपमा स्थिति करावनार । त्रिकाळ जयवत वर्ती ! 🍱 शांति शांति शांति

गद्य विभाग fauu सवर

१ पुष्पमाळा

⊋ মহারীবি

अनक्रमणिका

वृष्ठ ŧ

15

٠,

1	बंत्रीय योग	4.1
Y	स्मृतिमा राजवा सीम्य महावावयी	4 4
·	स्तातावत	419

वयनामृत घोडा वास्यो प्रमादने साथ आस्मा॰

७२ अननानवधी क्रोध० UY नीचना दोप न बाववा जोरिए

७६ कमें ए जड वस्तु छे० 99 बमगति विचित्र हो निरतर मैत्री प्रमोट॰ ** 90

१२ बीज बाई शोध मा० 64

निराबाधाणे जनी मनोवृत्ति बह्या **वर छै**० £3

60

माई बाटलु तार अवस्य करवा जेवू छे० c٤ ŧ٧

समजीने अल्पभाषी धनारन० 6

	4	
\$ \$	सहज	64
१७	नीचना नियमो पर बहुल र आपवु	८५
16	महावीरना बोधने पात्र कीण ?	6
18	हे जीव ! तुभामा मा०	20
₹•	विद्वासची वर्ती अ यथा०	48
38	'अणुष्टत्' बाचा वगरत् ०	٩.
77	सहज प्रश्नृति	42
33	वसनावली	93
38	पुराणपुरुपने नमोनम	44
२५	जीव स्वभावे दोपित छे॰	99
२६	जे जे प्रकारे आत्मान चितन क्यों होय०	99
२७	हे परमकृपालुदेव ।	100
२८	मुमुनु जीवने आ काळने विपेठ	800
79	नित्यनियम	202
30	सव विभावपी उदासीन॰	१०४
3 \$	जे क्याय परिणामधी अनत०	\$ 0 E
₹?	अनवानुबधीनो बीजो प्रकार लख्यो छे॰	१०९
\$ \$	प्रयम प्रमा एम कहा है के	220
źΧ	एवमूत दृष्टियी ०	११२

	-	
	•	
14	समस्त विष्य मणु वरीने •	2 2 3
\$4	करता योग्य कई कहा होय ः	\$ \$ \$
30	'ज्ञाननु पछ विरति छे '	114
16	सब जीव गुलने इच्छे छे॰	\$ \$ ¥
9.5	सन्पृहतोना अगाव गम्भीर भयमने •	155
¥۰	आंत्मद्रगाने पामी∙	110
¥ŧ	अपार महा मोहबद्धने •	115
¥₹	है काम ! हे मान ! हे संगठत्य !	225
٧٩	है सर्वोत्हष्ट सुसना०	233
**	जैस भगवान जिले निरूपण क्यु छ०	130
*4	सर्वज्ञोपन्च्य बारमा०	171
*4	प्राणीमात्रनीरहाक०	171
\$10	वीतरागनी वहुओ।	१ २२
*4	अन्य धरणना आपनार॰ (छ पद)	123
*5	बारममिद्धि अय	र∙१
५०	मनने सर्दने आ बर्चु छे॰	215
५१	चित्रमां तम परमार्थनी •	7Y 0
યર	एकांतमा अवगाहवाने अर्थे आत्मसिद्धिः	586
41	ध मापना	388

	_	
पद्य	विभाग —	
8	म्र यारम्भ	175
9	नाभिनन्दन नाय०	१ २९
3	प्रमु प्रापना—जङहळ ज्योति स्वरूप०	830
Y	ससारमा मन वरि॰	137
4	मुनिने प्रणाम	₹₹?
Ę	काळ कोईने नहि मुके	१३३
٥	धम विष	१३५
۵	सर्वमा य धम	0F \$
3	भक्तिनी उपदेश	2 7 8
80	ब्रह्मचर्यं विषे सुभाषित	\$88
11	सामान्य मनोरच	625
१ २	सुष्णानी विनिन्नता	183
13	अमुल्य तत्व विचार	144
18	जिनेस्वरनी वाणी	848
१५	पूणमाहिका मगल	180
\$6	अनि यादि भावना	140
१७	सुसभी सहेली हैं०	141
16	भिन्न भिन्न मठ देखीए॰	848
		•

	ć	
15	कोक पुरुषमस्याने कहारे •	141
२०	आञ्ज मने उछरग॰	१५६
78	होत बागवा परिगवा॰	144
२२	भारत माचा भित्र गया०	140
23	बीजा गायन बहु क्याँ ।	146
٩¥	बिना नयन पावे नहीं •	245
24	हे प्रमु हे प्रमु॰	.73
25	यम नियम संबम्	111
२७	जह भावे अड परिणम०	158
२८	जिनवर महे छे जान सन ॰	225
35	अपूर्व अवसर एवी।	150
10	मुळ भारग मामळो॰	101
32	प्य परमपद बोध्यो॰	104
32	धन्य रे दिवस०	800
44	बह ने चैतु य ब ने॰	105
14	सद्गुस्ता सपरेनाधी ०	160
94	इच्छे जे जोगी जन॰	141
34	बात्मति द	121

श्रीमद् राजचद्र प्रणीत

तत्त्वज्ञान

माथी ॐॐ

(१) ॐ पुष्पमाळा

 रात्रि व्यतिक्रमी गई, प्रमात चयु, निद्रापी मुक्त चया भावनिद्रा टळवानो प्रयत्न करणो
 कालीय राष्ट्रि अने गई जिल्ली पर राष्ट्रि पेउली जायो

नावानहा टळवाना प्रयत्न वरणा व्यतीस रात्रि अने गई जिंदगी पर दिन्ट पेरनी जाओ सफ्ळ पपेला चखतने माटे आनद मानो, अने आजनी दिवस पण सफ्ळ करो निष्पळ थयेला दिवसंपे मादे

परचात्ताप करी निष्मळता विस्मत करो

प्रशास क्षेत्र अनुवास स्वति स्वत घर्ड नही ५ सर्वे प्रत्य व एका बनाव तारायी जो न बन्यो होय तो परी परीते हारण

६ अपटित हायी यया होय तो शरमाईने मन सवा बायाना योगची से स करवानी प्रतिका से जो स स्वतः होय हो गगारसमागम सारा बाजना

दिवसना सीच प्रमाणे माग पाइ ---(१) १ प्रहर--भितासम्ब

(२) १ प्रहर-धर्मकतस्य (३) १ प्रहर-आहारप्रयोजन (४) १ प्रहर-- रिवाप्रयोजन

(५) २ प्रहर-निन (६) २ प्रष्टर--गरारप्रयोजन ८ प्रहर

८ जो सु स्वामा होय हो त्वचा बगरनी बनितान स्वरूप विचारीन संसार भणी दक्टि बरजे

जो तन धर्मेनु अस्तित्व अनुकूछ न बाक्य होय तो नीचे बहु छ ते विचारी करें ---

(३) तुजे इच्छे छेत शामाटे मळतूनयी[?] (४) चित्रविचित्रतानु भयोजन गु छे ?

नधी ?

!o जो तने अस्तित्व प्रमाणमूत लागतु होय अने तेना मुळतत्त्वनी आनवा होय ता नीचे वह छ ---

११ सब प्राणीमा समद्रदिट ---१२ विया मोई प्राणीने जीवितव्यग्हित करवा नही.

गजा उपरात सेनाथी काम लेव नहीं **१३ जिंबा सत्पृष्यों जे रस्ते चाल्या ते**

१४ मुळतत्त्वमा क्याय भेद नथी, मात्र दिप्टमा भेद छे एम गुणी आगय समजी पवित्र घममा प्रवतन करजे

१५ तू गमें से धम मानती होय तेनी मने पलपात नयी.

मात्र बहेबाव सात्यय वे जे राहची ससारमळ नादा

थाय ते भक्ति, त घम अने त सदाचारने त सेवजे

१६ गमे तटली परतत्र हो वोपण मनयी पवित्रताने

विस्मरण वर्षा बगर आजनी दिवस रमणीय वरजे

१८ सारा द अनुसना बनाबोनी नाथ आजे बाईने दु स आपवा सन्पर चाय ता सभारी जा १९ राजा हो के रक हा-- गमे ते हा परन्तु आ विचार विचारी सदाचार भणी आवजी में आ कायाना

पुद्गल थोडा बषतने माटे मात्र साहात्रण हाथ मुमि मागनार स २० श राजा हो तो फिलर नहा पण प्रमाद न कर

बारण नीचमा नीच अधममा अपम व्यभिचारनी गमपातनो निवणनो चण्डालनो मसाईनो अन बन्यानी एवी क्ण त साम छै ती पछी ? २१ प्रजाना दुल, अपाय वर एन तपासी जई माज

ओष्टांकर स पण हेराजा! बाळने घेर आवलो परूजी हे २२ वकील हो तो एची अर्घा विचारने मनन करो जज २३ श्रीमत हो सो पैसाना उपयोगने विचारज रळवान

बारण आजे शाधीने क्हेजे

२४ वा यादिरमा व्यापारची थती असस्य हिमा समारी "यायसपन्न व्यापारमां आजे साह चित्त होंच

२५ जो तु कसाई होय तो तारा जीवना सुसनी विचार

२६ जो तु समजणो बाउक होय तो विद्या भणी अने आज्ञा भणों दिष्ट कर

दिष्टि कर

दिवसमा प्रवेश कर

मणी दिष्ट कर

स्थितिथी स्मरण कर.

धरी आजना दिवसमा प्रवश कर

२७ जीस युवान होय वो उद्यम अने ब्रह्मचय मणी

२८ जो तू वृद्ध होय तो मोत भणी दिष्ट करी आजना

२९ जो त स्त्री होय तो तारा पति प्रत्यना घमवरणीने सभार - दोव थया होय तनी क्षमा याच अने क्ट्ब

२० जो तु विव होय ता असभवित प्रशसान सभारा जई बाजना दिवसारा प्रवश कर ३१ जो त कुपण होय ता .--

३२ जो तु अमलमस्त होय तो नपोलियन बानापाटने बन्ने

३३ गई कारे कोई कृत्य अपूण रह्यु हाय तो पूर्ण करवानी सुविचार करी आजना दिवसमा प्रवश कर

३४ आजे की करवनो आरम करवा घारतो हो तो विवक्षी समय, शक्ति अने परिणामने विचारी बाजना दिवसमा प्रवेश बर ३५ पग मक्तापाप छ, जोता झर छ अने माथ मरण रह्य छ ए विचारी आजना दिवसमा प्रवा गर ३६ बधोर १म करवामां आज तार पढ्य हाय सो राज पुत्र हो हो पण शिभाचरी माय करी आजना दिवसमा प्रवेग करजे ३७ भाग्यशाली हो तो तना आनदमा बीजाने भाग्यणाली करजे, परतु दुर्भाग्यमाली हा तो आयनु बुरु करता रोकाई आजना निवसमा प्रवेश करज ३८ धर्माचाय हो तो तारा अनाचार भणी बटानन्ध्ट मरी आजना दिवसमां प्रवश करने ३९ अनुचर हो ता त्रियमा त्रिय एवा दारीरना निभाव नार तारा अधिराजनी निमक्हलाली इ.ची आजना दिवसमा प्रवश करते

४० दुराचारी हो ता सारी आरोग्यता, भय परसन्ता स्थिति या मुख एन विचारी आजना न्विसमा प्रवा

कर-र

४१ दुःबी हो तो (आजनी) आजीविषा जेटली आसा राखो आजना दिवसमा प्रवेश करने ४२ घमकरणीनो अवस्य घबत मेळवी आजनी व्यवहार विद्विमा त प्रवेश करने

19

४३ नदापि प्रथम प्रवेशे अनुसूळता न होग तो पण रोज जता दिवसनु स्वस्य विचारी आजे गमे त्यारे पण ते पवित्र वस्तुनु मनन वरले ४४ खाहार, विहार निहार ए मवधीनी सारी प्रक्रिया सप्यामी आजना निवासन प्रवेश करले

४५ सु कारीगर हो तो आळम अने धानिना गेरउपयोगगो विचार करी जई आजना दिवसमा प्रवश करजे ४६ तु गमे ते घषापी हो परतु आजीविकार्षे अन्याय सपन प्रत्य उपाजन करीश नहीं

४७ ए स्मृति ब्रह्म क्या पढ़ी शोचकियापुत्त पर्द भगवद् भित्तमा कीत पर्द शामपता पाच ४८ सत्ताप्रयोजनमा जो शु तारा हितने अर्थे अपृक समुदायनु बहित करी नाखतो हो तो अटक्के ४९ जुकमीने, कामोने, अताबीने उत्तेषन आएतो हो वो

अटकजे

संपत्तिमा प्राह्म करण ५१ जिंदगी टूनी छ अने जजाळ छाती छै। माटे जंजाळ

टूनी कर तो सुमक्षे जिंदगी खावी शागरी ५२ स्त्री, पुत्र कुटुब रूल्मी इत्यादि बचा सुल सारे पेर होत सीपण ए मुलमा गीणताए दुन्हा रह्मु से एम

गणी आजना त्विसमा प्रवेश कर ५३ पवित्रतानु मुळ सदाचार छे

५४ मन दोरगी गई जतु जाळववाने — ५५ यचन शात मपुर नोमळ, सत्य अन शौच बोल्यानी शामा य प्रतिशा लई जाजना दिवसमा प्रया नरज

५६ काया मळपूजनु अस्तित्व छे, ते माटे हुआ गु अयोग्य प्रयोजन करी आनद मानु छु? एम आज विकासन

विचारजें ५७ सारे हाथे नोईनी लाजाविका लाज सूटवानी होय सो,~

५७ हारे हाथे कोईनी बाजाविका बाज तूटवानी होय हो,-५८ बाहारिक्रयामा हव सें प्रवश क्यों मिलाहारी अक्यर सर्वोत्तम बादशाह गणायो ५९ को आजे दिवसे तने सुवानु मन पाय, तो ते वखते ईश्वरमित्तपरायण यजे. के सत्शास्त्रनो लाम लई लेजे ६० हसमजुछ के एम यबु दुघट छे, तो पण अभ्यास सवनो सपाय छे ६१ चाल्यु आवतु वैर आजे निमृळ कराय तो उत्तम, नहीं तो तेनी सावचेती राखजे ६२ सेम मनुबैर वधारी ना नहीं कारण वैर करी वेटला

६३ महारभी हिमायुक्त व्यापारमा आजे पडवु पहतु होय मो अटक जे ६४ बहोळी ल्दमी मळता छता आजे अ यायथी कोईनो

काळनु सुख भोगवव छे ए विचार तत्त्वज्ञानोओ

करे छे

जीव जतो हाय तो अटकजे

६५ वसत अमूल्य छे, ए बात विचारी आजना दिवसनी

२,१६,००० विषठनो उपयोग करजे ६६ वास्तविक सुन्व मात्र विशाममा छे माटे जजाळ

मोहिनीची आजे अम्यतरमोहिनी बघारीण नही

निम्पाधिमय होय ता उपाधिमय ४७ राजसून इन्छी

सारो आजनो दिश्य अपितन कराण नहां

% वोहींग सने कब्दू क्यन क्यू हाय स बगतमा घहन
पारता—निरुपमांगी पण

९९ विवासी भूक माटे ताने हसने, परसु सब् हमब्
करोधी न पाय स प्रिनत रामजे

०० आजे वह बुद्धिप्रभाव नथाओं हाय आरिमक प्रिन जबवाड़ी होय, पवित्र हुएयेनी बृद्धि करी हाथ सीत,—

१०१ अयोग्य रीते आजे सारी कोई वानिनी जपयोग

बरीस महीं —मर्पातकापनधी बरवा पत्र हो पापमीह रहेन १०२ सक्ता ए पर्मनु बीजहबरून छ प्रकाए बरी सरकता सेवाई होंग हा आवनो दिवन हवाँसन छ १०३ बाई राजपनी हों वे बीजननदना हो परत्य मने

तनी कई दरकार नया मर्यात्राय। यतवा में ता नु पण पवित्र ज्ञानीओए प्रशसी छे १०४ सदगणधी करीने जो तमारा उपर जगतनो प्रगस्त माह हुशे तो है बाई, तमने हू बदन कर छू १०५ बहुमान, नग्रभाव विशुद्ध अत करणथी परमातमाना

गुण सबधी चितवन श्रवण मनन कीतन, पूजा, अर्चा ए ज्ञानीपुरवोए वसाण्या छे, माटै आजनो दिवस शोभावजी १०६ मतशील्यान सुखी छे दुराचारी दुखी छे ए बात जो मान्य न होय तो बर्यारधो तमे लग राखी ते

वात विचारी जुआ १०७ वा सघळानो सहलो उपाय आजे वही दउ छु के दोपन ओळखी होपन राज्या

रै०८ रुपवीट्वीके कमानुक्रम गमे ते स्वरूपे आ मारी कहेली, पवित्रताना पुष्पोधी छवायेली माळा प्रभा

तना बखतमा, सायका है अने अप अनुकूल निवृत्तिए विचारवायी मगळदायक थरी विशेष श कर ?

**

(२) महानीति

है सत्य पण नरणानय बोल्यूं
निर्मेष स्थिति राजनी
3 वैरामी हुन्य रामवु
४ दमन पण बेरामी राजनु
५ दुगरनी तळटोमा वचार योग सामवो
६ बार दिवस पलीनग स्थाननी
७ काहार विहार आळम निहा ६० ने मा करनो
८ सहारनी जगपियी जेम बन सेम विरक्त पन्

६० मुहस्यापना विवर्ध नरका ११ तत्वयम समाजावाके प्रणीत करको १२ वेरात्य अने गमीरमावयो व्यव् १३ सम्ब्री स्थिति तेमज १४ विवेशी विनयी अने प्रिय राग मर्यादित बोज्ज १५ विवेशी विनयी अने प्रिय राग मर्यादित बोज्ज १५ साहस बर्तव्य पहेला विचार रासको १९ प्रावेश प्रगारय प्रमानने हुर करवो

१७ १७ सचळु कतव्य नियमित ज राखवु १८ शक्ल भावधी मनुष्यनु मन हरण करवु १९ शिर जता पण प्रतिशा भग न करवी २० मन, वचन अने गायाना योग वडे परपरनी त्याम २१ वेश्या, कुमारी, विधवानी तेमज त्याग २२ मन, बचन, काया अविचारे वापव नही २३ निरीशण कर नही २४ हाबभावयी मोह पाम नही २५ बातचीत कह नही २६ एकाते रह नहीं २७ स्तुति कर नही २८ चितवन कर मही २९ म्यूगार बाच नही ३० विशेष प्रसाद छउ मही ३१ स्वान्ष्टि भोजन लउ नही ३२ सुगधी द्रव्य वापच नही **१३ स्नान** मजन कर नही

३५ बाम विषयने लिख भावे याच नही.

¥Υ

३६ वीयनो ध्याघात कर नही

३७ वघार जळपान ४६ नही ३८ फटाश दुष्टियी स्त्रीने नीरखु नही ३९ हसीने बात कर नहीं (स्त्रीयी) ४० शृगारी बस्त्र नीरख् नही ४१ दपतीसहवास सेवु नही ४२ मोहनीय स्थानकमा रह नही ४३ एम महापुरनोए पाळवु ह पाळवा प्रमरनी छू ४४ लोगनियामी हरू नही ४५ राज्यभयमी त्रास नही ४६ असत्य उपन्या आपु नही ४७ किया सदोषी कर नही ४८ बहुपद राख के भाख नही ४९ सम्यक् प्रकार विश्व भणी दृष्टि कर ५० निःस्वायपण विहार कर

५१ अपने मोहनी उपजाने एनो देशाव कर नहीं ५२ धर्मानुरक्त दशनधी विचक ५३ सद प्राणीमा सममाव राखु ५४ क्रोची वचन माखु नही ५७ अपय्य प्रतिज्ञा आप नही

५८ सुन्दियो वर्षमा मोह राजु मही ५९ सुज डुप्त पर सममाब कर ६० सारिभोजन कर नहीं ६२ जेसायो नगो, से सेबु नहीं ६२ प्राणीने दुस थाय एवु मृया मासु नहीं ६३ अतिबिनु मन्मान कर

६४ प्रस्तातमानां भक्ति वच ६५ प्रसंक स्वयव्यक्षेत्र भाषावान मानु ६६ तम दिता मेति तुल्ल ६७ विदानोने सम्मान आयु ६८ विदानोची माया बम्म नही ६९ मायाबीने विदान कृत नही ७० कोद सर्यनेने निन्दु नही ७१ कायनों सुर्वित कर नहीं

७२ एकपनी मतभेद बाधु नही ७३ बजान पगने बाराप नही ७४ आत्मप्र'ांसा इच्छु नही ७५ प्रमाद कोई कृत्यमा करं नहीं ७६ मासादिक आहार करू नहीं ७७ तृष्णाने समाबु ७८ तापपी मुक्त यतु ए मनोकता मानु

७९ ते मनोरम पार पाडवा परायण धवु ८० योगवड हृदयने गुक्ट करवु ८१ असरय प्रमाणयी बावपूर्वि कर नही ८२ असम्बद्ध क्याना कर नही ८२ लोक बहिद प्रणीत कर नही

८४ शानीनी निंदा वह नहीं ८५ वैरीना गुणनी पण स्तुति कह ८६ वैरमाव कोईथी राखु नही ८७ मातापिताने मुक्ति बाटे चढाबुं ८८ हवी बाटे तेमनो बदले आप

८७ मातापिताने मुक्ति बाटे चढावुं ८८ रूडी बाटे तेमनो बदलो आपु ८९ तेमनी मिय्या आज्ञा मानु नही ९० स्वस्त्रीमां सममावयी बर्से

९२ चतावळो चारू नही

3 \$ ९३ जोसभेर चालु नही ९४ मरोडधी चाल नही ९५ उच्छ खल वस्त्र पहेर नही ९६ वस्त्रन अभिमान करु नही ९७ वधारे बाळ राख नही ९८ चपोचप वस्त्र संज नहीं ९९ अपवित्र वस्त्र पहेर नही १०० ऊनना बस्त्र पहेरवा प्रयत्न कर १०१ रेशमी वस्त्रनो त्याग मरु १०२ शात चालयी चाल १०३ खोटो भपको कर नही १०४ उपनेशकने देवथी जोउ मही १०५ द्वेपमात्रना त्याग वर १०६ राग दृष्टियी एने वस्तु आराधु नही १०७ वरीना सत्य वचनने मान आप १०८

१०९ 110

22 117 223 ttr 114 ११६ बाळ राखु मही (गु०) ११७ व घरो रासु मही १९८ गारी करं नही-आगणा पासे ११९ पळियामा अस्व बन्ता राखु नहीं (सायु) १२० पाटल कपडा राख् नहीं (साथ) १२१ बणगळ पाणी पीच नही **१**२२ पापी जळ नाह नहीं १२३ नघारे जळ ढोळ नही **१२४ व**नस्पतिने द स आपु नही १२५ अस्वच्छना राख नहा रि६ पहीरन राघेल माजन वह नही २७ रसॅंद्रियनी वृद्धि कर नहीं २८ रोग बगर औपवन सेवन कर्≕नही २९ विषयनु औषुष् साउ नही ३० होटी

१३३ आजीविका माटे धम बोचु नही १३४ बखतनो अनुपयोग करु नही १३५ नियम यगर छत सेबु नही

११६ प्रतिका, यत तोडु नहीं ११६ प्रतिका, यत तोडु नहीं ११७ सत्य वस्तुन खडन कर नही ११८ तस्त्रानमा शक्तिय चान नहीं

१३९ तस्य आराघता लोकनिदाया डह नहीं १४० तस्य आपता माया मर नहीं १४१ स्वापने सम मासु नहां १४१ स्पापने सम मस्य

१४२ चारे वाने मडन कर १४३ घम बढे स्वाय पेदा कर नहीं १४४ घम बढे अर्थ पेदा कर १४५ जडता जोईने आक्रोश पामु नहीं

१४६ खेदनी स्मृति आणु नही १४७ मिस्पास्वने विस्त्रन षरु १४८ वसस्यने सस्य कहु नही १४९ भ्रागारने चत्तेजन आपु नही

१५२ बोटी मोहिनी पेटा वर नही १५३ विद्या विना मुर्ख रह मही १५४ विनयने आराधी रह १५५ मायावित्तयनी त्याग कह १५६ अदत्तादान लंड नही १५७ वलेश कर नही १५८ दत्ता अनीति एउ नहा १५९ द खी करीने धन लंड नहीं १६० खोटो सोल तोळ मही १६१ खोटी सानी पुरु नही १६२ सोटा सोगन साउ नही १६३ हासी कर नही १६४ समभावधी मृत्युने जीउ १६५ मोतची हप मानवा १६६ कोईना मोतची हमबु नही १६७ विदेही हृदयन करना जड १६८ विद्यान् अभिमान वर नही

१५० हिंसा वडे स्वाय चाहु नही १५१ सुष्टिनी खेन बचार नही

२५ १७० अपू य आचायन पुजु नही

A sale to be supplied

१७१ लोट बपमान तने आपं नही १७२ अवरणीय व्यापार वर्ष नी १७३ गुग सगरन बनतत्व सन् नहीं १७४ तत्वन सप असाजित सर्ग नहा १७५ धास्त्र बांचं १७६ पोताना मिच्या तर्'न उत्तेजन आपू नही १७७ सर्वे प्रवारती समान चाह १७८ सतीयनी प्रयाचना बर १८९ स्वात्मनिक करं १८० शामाच मिल कर १८१ धनुपासर याउ १८२ निरमिमानी पाउ

१६९ गुरुनो गुरु बनु नहीं

रेट४ बर्गा दया साउ १८५ विशेषधी नयन ठडा वर १८५ सामान्यची मित्रभाव राख १८७ प्रत्येश चानुना निमम वर्ष

१८३ मनुष्य जातिना भद्र न गण्

१८८ सादा पोशावने पाइ १८९ मधरी वाणी भाष १९० मनीबीरखनी बुद्धि कर्र १९१ प्रत्यक परिषद्व सहन कर १९२ आत्मान परमे वर मान १९३ पत्रन तार रस्त घडात (पिता इच्छा कर छे) १९४ खोटा लाइ लडावं नही १९५ मलिन राख नही १९६ अवळी वानधी स्तृति कर्ष मही १९७ मोहिनीमाव नीरख नही १९८ प्रतीन बशवाळ योग्य गुणे कर १९९ समबय जो उ २०० समगुण जीव २०१ तारो सिद्धांत घटे सेम ससारव्यवहार न चराव २०२ प्रायेशने बारसञ्यक्त उपनेना २०३ सत्त्वची कटाळ नही २०४ विषवा छ वारा धमने अगीवृत कह (विधवा

इच्छा करे छ) २०५ सुवासी साज सज नही २०६ घमकथा कर २०७ नवरी रहु नही २०८ सुच्छ विचारपर जञ नही २०९ ससनी अदेलाई करू नही

२१० ससारने अनित्य मान्

२७

१११ पृत्र ब्रह्मचर्यन् रेवन करु १११ परिपेर जड नहीं १११ वोरेष पृत्र साथे बान करु नहीं ११४ चषळताथी चालु नहीं, ११५ ताळी दई बात करु नहीं ११६ पृत्य-राण राखु नहीं ११७ कोईना कहाणी रोज आणु नहीं ११८ कोईना कहाणी रोज आणु नहीं ११८ कोइटांच्यी चस्तु नीरस्त नहीं

२२२ नीतिषी चालु २२३ वारी आज्ञा वोडु नही ५२४ अविनय वरु नही

२२० हुन्यमी बीजु रूप राखु मही २२१ सेव्यनी शुद्ध मिन करु (सामान्य)

२६३ ष्टदयने लीवरूप राख २६४ हृदयने जळरूप राख् २६५ हृदयने तेल्ह्य राखु २६६ हृदयने अग्तिरूप गर्ख २६७ हृदयन आदगरप राखु २६८ द्वदयने समुद्रस्य राख् २६९ बचनने अमृतरूप राख् २७० यचनने निद्रारूप रागु २७१ बचनने तुपारूप राश् २७२ वचनने स्वाधीनरूप राम् २७३ काथाने कमानरूप राख् २७४ कामाने चचळरूप राखु २७५ कामाने निरपराधी राखु २७६ मोई प्रकारना चाहना राख महा (परमहस) २७७ तपस्वी छु, बनमा तपन्त्रया वर्या वरु (वपस्त्रीनी इच्छा) २७८ शीवळ छाया सर छ २७९ समभावे सब सुख सपादन कर छ २८० मायाची दूर रह छ

२८२ सब स्यागबस्तुने जाणु छ २८३ खोटी प्रश्रसा कर नहीं (मु॰ ब्र॰ उ॰ गृ॰ सामा य) २८४ खोटु बाळ बापु नही २८५ खोटी वस्तु प्रणीत करु नही २८६ बुट्यक्लेश कर नहीं (गृ० छ०) २८७ अम्यास्यान घाष मही (सा०)

२८८ पिगुन थउ नही २८९ वसत्यधी राचु नही (२) २९० खडखड हुमू नही (स्त्री) २९१ कारण विना मो मलकाब नही

२८१ प्रपचने त्यागु छु

२९२ कोई वेळा हसू नही २९३ मनना आनद करता आत्मानदन चाहु २५४ सर्वने ययातच्य मान आपु (गृहस्य)

२९५ स्यितिनो गर्वे करु नही २९६ स्यितिनो खेद वह नही

२९७ सोटो उद्यम कर नही

२९८ अनुसमी रह नही २९९ सोटो सलाह बापु नही. (गृ॰) ३४ ३३७ मास्तिकतानो चपदेग बापु नहीं (उ०) ३३८ वयमा परणु नहीं (गु०)

११९ बय पछी परणु नही १४० बय पछी १नी भोगवु नही १४१ बयमा स्त्री भोगवु नही १४९ जुमार पलीने बोलावु नही १४९ जुमार पलीने बोलावु नही १४४ जुमार प्राप्त गुलु नहा

वेश्वर बरागी अभाव गणु मही (गू॰ मू॰) वेश्वर कब्द बबत बहु मही वेश्वर हाच जगामु नही वेश्वर अयोग्य स्परा कव नही वेश्वर बार दिवस स्परा कव नही

३४७ सारोग्य स्पर्ध कर नहीं
३४८ सार दिवस स्पर्ध कर नहीं
३४८ सारोप्य उनके लापू नहीं
३५० रजस्कामा मोतवु नहीं
३५० रजस्कामा मोतवु नहीं
३५० रजस्कामा स्वेतवु नहीं
३५० रेज्यारासित सेवुं नहीं
३५६ रेज्यारासित सेवुं नहीं
३५६ सेव पर ए नियम, स्वाय लागू कर
३५४ राज्यममा सोटी रजीवजी हुट नहां
३५५ सोटी सेवें पडाडु नहीं

३५६ दिवसे भोग भोगव् मही ३५७ दिवसे स्परा कर नही १५८ अवभाषाए बोलानु नहीं ३५९ कोईन यत भगाय नही

34

३६० झाझे स्थळे भटक नही ३६१ स्वाय बहाने काईनो त्याग मुकानु नही ३६२ क्रियाशाळीने नि द नही ३६३ नान धित्र निहाळ नही

३६४ प्रतिमाने निन्दु नही ३६५ प्रतिमाने नीरख नही ३६६ प्रतिमाने पूजू (वेवळ गृहस्य स्थितिमा) ३६ पापयी घम मानु नही (सव)

३६८ सत्य बहेबारने छोड़ नहीं (सय) ३६९ छळ कर नही ३७० मम्न सुख नही

३७१ नग्न नाह नही

३७२ बाह्य लूगडा पहेर नहीं

३७३ झाझा अलवार पहेंच नही ३७४ अमर्यादायी चालु नही

३७५ उतावळे साद बोलु नही ३७६ पति पर दाव राखु नही (स्त्री) ३७७ सुच्छ समोग मोगववो नही (गु॰ उ०) ३७८ खेदमा भोग भोगववी नही ३७९ सायकाळे भोग भोगववी नही **३८० सायकाळे जमन्** नहीं ३८१ वह पोदये भीग भोगवबी नहीं ३८२ ऊपमाधी करी भोग मागववो नही ३८३ ऊपमाची कठी जमव नही ३८४ घौचकिया पहेलां कोई क्रिया बरवी नही ३८५ क्रियानी काई जरूर नधी (परमहस)

३८६ ध्यान विना एकाते रह नहीं (मुण्युण्या वाज्या ३८७ लपुशकामां तुष्छ पार्च नही ३८८ दीघशकामा बखत लगाडु नही ३८९ ऋनुऋतुना शरीरधर्म साचवु (ग०) ३९० आत्माना ज मात्र घमकरणी साचवु (मृ०)

३९१ अमीग्य मार बधन कर्ह नहा ३९२ व्यातमस्वतत्रवा सोउ नहीं (मृ० गृ० ४०) ३९३ वधनमा पढ्या पहला विचार वरु (क्षा०)

३९४ प्रवित भीग समार नहीं (मु॰ गृ॰) 36 ३९५ बयोग्य विद्या साधु नहीं (मुं० गृ० व० छ०) ३९६ बोधु पण नही ३९७ वण लपनी वस्तु ल र्च नहीं १९८ नाह नहीं (म०) ३९९ दावण कर नहीं ४०० ससारमुख चाहु न[ु]ी ४०१ नीति विना ससार मोगवु नहीं (गृ०) ४०२ प्रसिद्ध रीते कुटिलताची मोग वणवु नहीं (गृ०) ४०३ विरहत य गूषु नहीं (मु॰ गृ० प्र॰) ४०४ बयोग्य जपमा जापुं नहीं (मृ० गृ० ब० उ०) ४० (स्वार्थ माटे कोच व र नहीं (म० गृ०) ४०६ बादयश प्राप्त करु नहीं (उ०) ४०७ अपनादची खेद वर नही ४०८ धर्मद्रव्यनी उपयोग करी शकु नहीं (गृ०) ४०९ दर्गान के-धममा कांबु (ग्रं) ४१० सबसंग परित्याग करु (परमहस) ४११ तारो बोपेली मारी धर्म विसाठ नहीं (मर्ब)

४१२ स्वप्नानद सेंद कर नहीं

४१३ आजीविक विद्या सेवं नहीं (म०) ४१४ तपने येथु नहीं (गु० वा०) ४१५ वे बलतयी वघार जम् नही (गु० मु० ऋ० छ०) ¥१६ स्त्री मेळो जम् नहीं (ग० छ०)

४१७ कोई साथे जम नहीं (स०)

४३१ याचकनी हासी कर नहीं

14

४१८ परस्पर कवळ आपु नही, लख नही (सo) ४१९ वधारे ओछ पथ्य साधन कर्ड नहीं (म०) ४२० नीरागीना बचनोने पुज्यमावे मान आप ४२१ नीरानी प्रयो बान ४२२ तत्वने ज प्रहण करु ४२३ निर्माल्य अध्ययन कर नही

४२४ विचारशक्तिने सोलव् ४२५ ज्ञान विना तारो धर्म अगीरत कर नहा ४२६ एकोष्ठबाद एउ नहीं

४२७ नीरागी अध्ययनो मुखे कर ४२८ धर्मकथा श्रवण कर ४२९ नियमित क्रतंब्य चक् नहीं ४३० अपराधशिया तोड् मही

४३४ दू सीनो हासी कर नही ४३५ क्षमापना बगर शयन वर नही ४३६ साळसने उत्तेजन आपुं नही ४३७ सुष्टिक्रम विरुद्ध वर्मे कई नही ४३८ स्त्रीहाय्यानी स्याग करे ४३९ निर्मुत्त साधन ए विना संघळ स्यागु छ ४४० ममंलेख गर नही ४४१ परद से दाझ ४४२ अवराधी पर पण क्षमा कर ४४३ अयोग्य लेख लख नही ४४४ बागप्रयनो विनय जाळवं ४४५ घर्में राज्यमां इत्य सापता माना म कर्ट ४४६ नम्र बीरत्वयी तरव बोप्

४४७ परमहसनी हांसी वरु नहीं ४४८ आदर्ग जोड नही ४४९ आदर्गमां जोई हमुं नहीं ४५० प्रवाही पुरापमा मोड जोडं क्ले

४३२ सत्पात्रे दान आपु ४३३ दीननी दया खाउ ४५१ छत्री वहातु नही ४५२ अयोग्य छवी पहाबु नहीं

४५३ अधिकारनी गेरउपयोग बंद नही ४५४ सोटी हा कह नही ४५५ केशने उत्तेजन आपु नही ४५६ निता वह नहीं

४५७ कर्तेब्य नियम चत्र नही ४५८ न्निष्यांनो गेरउपयोग कव नही ४५९ उत्तम गक्तिने साध्य बर्ध ४६० धक्ति बगरन कृत्य कर नही

४६१ देग बाळाटिन ओळस ४६२ इत्यन परिचाम जाउ ४६३ कोईनो उपकार ओळव नही ४६४ मिच्या स्तुति कद नही ४६५ खाटा देव स्थाप नहीं ४६६ मन्पित धर्म घलाव नही ४६७ सुध्टिस्यभावने अधर्म कह नहीं ४६८ सर्व थेष्ठ महत्र जीवननायक मान ४६९ मानता मानु नहीं

88

४७३ माननी अभिलापा राख नही ४७४ आलापादि सेव नहीं ४७५ बीजा पासे बात करू नही ४७६ टुक् रूप राख् नहीं ४७० च माद सेवु नही

४७८ रौद्रादि रमनो अपयोग कर नही ४७९ शास रसने नि द नही ४८० सत्कर्ममा आहो आवु नहीं (मृ० गृ०)

४८१ पाछो पाडवा प्रयत्न करु नही ४८२ मिथ्या हठ लउ नहीं ४८३ अवाचकने दुःव आपु नही

४८४ खोडीलानी सुखशाति वघार ४८५ नीतिशास्त्रन मान बाप

४८६ हिसक घमने बळगु नही

४८७ अनाचारी धर्मने बळग नही

४८८ मिथ्यावारीने बळगु नही

४८९ श्रृंगारी धर्मने वळगु नही ४९० लगान धमने वळगु नही ४९१ वेवळ ब्रह्मने वळगु नही

43

४९२ केवळ उपासना सेवु ननी
४९३ नियतगढ सेवु नहीं
४९४ भावे सृष्टि अनादि अनत कडू नहीं
४९५ इस्से मृष्टि सादिशंत कडू नहीं

४९९ दृष्यापने निन्दु नहीं
४९६ दृष्यापने निन्दु नहीं
४९७ निप्पापीने चचळतापी छळु नहीं
४९८ हारीरती मच्सी कर नहीं
४९९ बयोग्य यपने योलातु नहीं
५०० आजीविका वर्षे गाटक कर नहीं
५०१ मा, यहैनपी एकाते रह नहीं

५०० आंजीविका वर्षे मारक कर नहीं
५०१ मा, बतैनपी एकाते रह नहीं
५०२ पूर्व नेतीहोजीने हमा आहार त्या जब नहीं
५०३ एक्ट स्वीहोजीने हमा आहार त्या जब नहीं
५०३ एक्ट स्वीहोजीने हमा आहार त्या कर नहीं
५०४ पीरव मूचनी नहीं
५०५ पीरवर्ग बद्दुन करव्यु
५०६ विजय कीति, यम सवएनी प्रास्त करका
५०७ कोईना परसंसार तीहको नहीं

५०५ शुक्ल धम खडवो नही ५१० निष्काम भोल आराघव ५११ त्वरित भाषा बोलवी नही ५१२ पापग्रंच गूचु नही ५१३ धीर समय भीन रह ५१४ विषय समय मौन रह ५१५ वेश समय मीन रह ५१६ जळ पीता मीन रह ५१७ जमता मीन रह ५१८ पगुपद्धति जळपान वरु नही ५१९ बूदको मारी जळमा पहुनही ५२० स्मशाने वस्तुमात्र चाखु नही

५२१ क्यु बाया बन्च नहीं ५२२ वे युव्दे साथे ग्रुषु नहीं ५२२ वे स्त्रीए साथे ग्रुषु नहीं ५२४ सास्त्रती खायावना बन्च नहीं ५२५ गुच आदिन नी तेम ख ५२६ स्वार्षे योग, तम साथु नहीं

५०८ अतराय नाखबी मही

٧ŧ

५२७ देशाटन बरु ५२८ देगाटन कर नही ५२९ घोमासे स्थिरता कर ५३० सभामा पान खाउ नही ५३१ स्वस्त्री साथ मर्यादा शिवाय पर नही ५३२ भलनी विम्मति षरवी नही ५३३ क० कलाल सोनीनी द्वाने वेसव् नही ५३४ कारीगरन त्या (गुरुत्वे) जव नहीं ५३५ तमाकु मेववी नही ५३६ सोपारी व बयत सावी ५३७ गोळ क्पमा माहवा पह मही ५३८ निराधितने आध्य नापु ५३९ समय विना व्यवहार बोल्यो नही ५४० पुत्र रूग्त कर ५४१ पुत्री लग्न कर ५४२ पुनलान कर्ड नही ५४३ पुत्रीन भणाव्या सगर रह नही ५४४ स्त्री विसामाठी घोध बर ५४५ तेओने घमपाठ शिसडाव

५४६ प्रत्येत रूपे हाति विराम राखवा ५४७ उपन्शकने सामान आपु

५४८ बनत गुणवर्मची भरली सुद्धि छ एम मानु ५४९ कोई काळ सत्त्व बढे करी दुनियामाथी दु स जशे एम मान्

५५० दरन अने सेद भ्रमणा छे ५५१ माणम चाह स व से पाने

५५२ घौर्य, बद्धि इ० मी सुखद उपयोग गरु ५५३ बोई बाळ मन दु शी मानू नहीं ५५४ पृष्टिनां दु म प्रनापन कर

५५५ सब साध्य मनारय बारण कर ५५६ प्रत्येक हत्त्वज्ञानीबोने वरमस्वर मान् ५५० प्रत्यक्ता गुणतस्य प्रहण कर ५५८ प्रत्येक्ना गुणन प्रपुत्त्रित कह

५५९ बुद्रवन स्वर्ग दनाव्

५९० सृष्टिने स्वर्गे बनाबु तो शुद्रुवन मान बनाबु ९९१ तस्वाचें सृष्टिने मुखा करतां हू स्वाय अपू

९६२ दृष्टिना अत्येक (-) गुणनी वृद्धि कर्ष ५६६ पृष्टिना दासल बता नुधी पाप पुष्प छे एम मानु ५२७ देगाटन कर ५२८ देगाटन कर नही ५२९ चीमासे स्विरता बरु ५३० समामां पान खाउ नहीं ५३१ स्वन्त्रा साथे मर्यादा सिवाय पर नहा ५३२ भल्नी विस्मृति शरबी नही ५३३ क ० कराल सोनीनी इकाने येसव नहीं ५३४ कारीगरने स्वां (गुरुखे) जब नहीं ५३५ तमाकु मेववी मही ५३६ सोपारी व बसत सावी ५३७ मोळ रूपमा नाहवा पन् नही ५३८ निराधितने आध्य आपु ५३९ समय विना व्यवहार बोलवो नहीं ५४० पुत्र स्नान कर ५४१ पुत्री लग्न कर ५४२ पुनञ्जन कर नही ५४३ पुत्रीन भणाव्या बगर रह नही

५४४ स्त्री विद्यानाळी नोध कर ५४५ तेओन धमपाठ शिसहाव

84

५४६ प्रत्येव गृहे शाति विराम राजवा

५५५ सर्व साध्य मनोरय धारण नर

५४७ जपे नक्ते समान आपु
५४८ अवत गुण्यमधी भएकी सृद्धि छ एम मानु
५४९ कोई काळे तत्व बढे करी हान्यामाधी दुग्य जपो
एम मानु
५५० दुग्य अने सेद भ्रमणा छे
५५१ माणत आहे त नरी सार
५५२ गोर्स, मृद्धि इन से सुबद उपयोग कर
५५२ गोर्स, मृद्धि इन से मानु नही
५५५ सुद्धिन हम सुमान कर

५५६ प्रयम तास्त्रानीकान परमेखर मानृ

५५५ प्रत्येत्रमु गुगतस्य प्रहान वरु

५५८ प्रत्येत्रमा गुगते प्रपुत्तिस्य वरु

५५९ शुद्धन स्थग बनाग् ता सुद्धिन मोग बनाग्

५६९ शुद्धन स्था बनाग् ता सुद्धने मोग बनाग्

५६१ तस्त्याम गुगते मुस्ति करता हु स्थाम अपु

६२ सुद्धिना प्रत्येत्र (-) गुगती गुर्कि वरु

५६३ सुष्टिना दाखळ बता सुधी पाप पुण्य छै एम मानु

५६४ ए मिद्रात तरवयमनो छ, मास्तिकतानो मधी एम मान ५६५ झदय दोवित कर नही ५६६ बालात्यवाधी बैरीने पण वश कर

५६७ मुं जे करे छ समा असमव न मानु ५६८ शका न कर, उपापु नहीं महन कर ५६९ राजा छता प्रजान हारे रस्ते घडाय

५७० पापीने अपमान आपु ५७१ न्यायने चाहुं वर्तुं ५७२ गणनिधिने मान बाप ५७३ तारो रस्तो सर्व प्रकार मान्य राम

५७४ घर्मालय स्थापु

५७५ विद्यालय स्थापं ५७६ नगर स्वच्छ राख ५७७ वघार कर नाख नही

५७८ प्रजा पर वात्सल्यता धराषु

५७९ कोई ब्यसन सेव् नहीं

५८० वे स्त्री परणु नहीं

५८१ तस्वनानना प्रायोजनिक अभावे शोजी परणु से अपवाद

५८२ वे () पर समभावें जोज ५८३ बेबक तत्त्वम राख् ५८४ बागान क्रिया तजी देख ५८५ नाग क्रिया सेववा माटे ५८६ क्यटने पण जाणवु ५८७ असूमा चेबु नहीं ५८९ सदमासा सची श्रेष्ठ मानु छु ५८९ सदमसा सची श्रेष्ठ मानु छु

100

५९२ ज्ञान बिना सपळी याचनाओ त्यागु छु ५९२ निदाजदी याचन गर्ज छु ५९५ जपुनिंस प्रवास कर्ज नही ५९५ जैनी सें ना कही से माटे शोगु के मारण मागु नही ५९६ जैस्पात करू नही

५९० सिद्धात मानीश प्रणीत करीश ५९१ धम महात्माओने समान दर्देग

५९६ वेहपात कर नहीं ५९७ व्यायामादि सेबीश ५९८ पीपपादिक प्रत सेतृ छु ५९९ बायेको माजम सेव छ

६०० अकरणीय किया ज्ञान साधु नही

86 ६०१ पाप व्यवहारना नियम बार्ध नहीं ६०२ द्वत रमण वर नही ६०३ रात्रे धौर-वर्म वरावु नही

६०५ अयोग्य जागृति भोगव नही ६०६ रसस्वाद सनघम मिथ्या कर नही ६०७ एकात बारीरिक धम आरापु नही ६०८ अनक देव पूजु मही

६०४ ठासाठास सोड ताणु नही

६०९ गुणस्तवन सर्वोत्तम गणु ६१० सदगुणन् अनुकरण कह ६११ श्रृगारी ज्ञाता प्रभु मानु नही

६१२ सागर प्रवास कर नही ६१३ आधम नियमने जाण ६१४ छोर-कर्म नियमित राखव ६१५ ज्वरादिकमा स्नान करवु नही

६१६ जळमा डूबकी मारवी नही

६१७ कृष्णादि पाप लेग्यानी त्याम कह छ

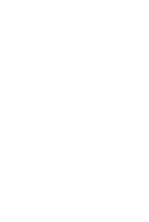
६१८ सम्यक समयमा अपध्याननी त्याम वर्ष छ

६१९ नाम मिक्त रोवीय नही

६२० कमा कमा पाणी पीठ मही ६२१ आहार अत पाणी पीउ नही ६२२ चाल्ठा पाणी पीउ नही ६२३ रात्रे गळ्या विना पाणी पीछ नही ६२४ मिथ्या भाषण कह नहा ६२५ सन् बादोने सामान आप ६२६ अयोग्य आले पृष्य नीरल नही ६२७ अयोग्य धचन भारा नही ६२८ उघाडे निर बर्स महीं ६२९ बारवार अवयवो नीरख नही ६३० स्वरूपनी प्रशासा कह नही ६३१ काया पर गृद्धभावे राज् नहीं ६३२ मार माजन वर नही ६३३ तीव हृदय राखु नहीं ६३४ मानार्थे कुत्व कर मही ६३५ बात्यचे पुष्य वर्ष नहीं ६३६ कि चन क्या द्रष्टात मस्य कहं नहीं ६३७ अवाणी यारे रात्रे चालु नहीं ६६८ शिल्लो गेरउपयाग गर्र मही

४९

६३९ स्त्रीपने घन प्राप्त कर नही ६४० बच्याने मातमावे सत्नार दड ६४१ अकृत धन लउ नहो ६४२ वळदार पायडी बाचु नहीं ६४३ वळदार चलोठी पहेर मही ६४४ मलिन बस्त्र पहेर ६४५ मृत्यु पाछळ शगधी रोज नहीं ६४६ व्यास्मानशक्तिने बाराप् ६४७ धमनामे केशमा पड नही ६४८ वारा घम माटे राजडारे क्स मुक् नही ६४९ बने स्यां सुधी राजनारे घट नही ६५० धीमताबस्यात वि० शाळाची कर ६५१ विर्धनावस्थानी शोक नदं नही ६५२ परदु:से हुर्प घर नहीं ६५३ जेम बने तेम धवळ बस्त्र सजु ६५४ दिवसे तेल नास् नही ६५५ स्त्रीए रात्रे तेल नाखव नहीं ६५६ पापपव सेव नही ६५७ घर्मी सुबशी एक कृत्य करवानी मनोरथ घरानू छु



६८० एक बुळमा व या आपु नही एउ नही ६८१ सामा पद्मना संगा स्वधमी ज होत्यीच ६८२ धर्मेक्तव्यमा उत्साहादिनो उपयोग मरीन ६८३ आजीविका अर्थे सामान्य पाप करता पण कपती

६८४ घमसिश्रमा मासा रम नही ६८५ चतुवर्णी धर्म श्यवहारमा भूलीश नही ६८६ सत्यवादान सहायमूत बईश ६८७ धृत त्यागने त्यागु छ

অর্হয়

[६९४ मोह त्यागु छ

६८८ प्राणी पर कोप करवी नही ६८९ वस्तुन तत्त्व जाणवु ६९० स्तुति, मक्ति नित्यकर्म विग्रजन वरु नही

६९१ अनय पाप कर नही ६९२ बारमोपाधि त्यागु छ

६९३ कुसग स्यागु छ

५३ ६९५ दोषनु प्रायश्चित्त करीश ६९६ प्रायश्चितान्किनी विस्मृति नही कर

५९५ आयारचता। त्या विस्मृति नहा कर ६९७ सप्रद्रा करता घमवग प्रिय मानीश ६९८ तारो घम विकरण पुत्र सेववामा प्रमाद नहीं कर

£88

() बश्रीम ग्रीग

सत्पुरुपो नीचना वत्रोस योगना मग्रह वरी आत्मान

उज्ज्वळ करवानु नहें छे

*१ निध्य पोताना जेवो धाय तने माटे तने श्रुतादिक भान आपवु

* पोताना आचायपणानु जे नात हाय तेनो अन्यने योघ आपनो अने प्रकास करवो * पाठातर-- १ भोणतायत्र योग माटे निध्ये आचाय

पाने आलोचना करती १ आपार्ये आलाचना बीजा पासे प्रकाशनी नहीं

44 ३ आपत्तिकाळे पण धर्मनु दृढपणु स्थागर्तु नही ४ सीर परलोशना सुखना फळनी बांछना विना सप वरव ५ शिक्षा मळी ल प्रमाणे यत्नावा वसव अने नवी शिशा विवेशयी प्रहण शरवी

६ ममल्बनी स्वाग बारबी ७ गुप्त तप करव ८ निलॉमता रासवी

९ परिपह सपसर्गने जीतवा १० सरळ जित्त राखव ११ बारमसयम शुद्ध पाळवो

१२ समनित शृद्ध रासव् १३ चिसनी एकाव्र समाधि राखवी १४ कपटरहित आचार पाळवो

१५ वितय करवायाग्य पुरुषानो यघायोग्य विनय करवो १६ संतीपची करीने तब्जानी मर्याटा टकी करी नासवी

१७ वैराग्य भावनामा निमान रहव

१८ मागारहित वत्तव

१९ शुद्ध करणीमा सावयान धनु

२० संबरने आदरको अने पापने रोक्वा

२१ पोताना दोप सममावपुरव टाळवा २२ सर्वे प्रकारना विजयसी विरक्त रहेव २३ मुळगुणे पंचमहावत विज्ञुद्ध पाळवा २४ उत्तरगुण पचमहात्रत विश्वद पाळवा २५ उत्साहपूरक कायोत्सर्ग करवी

२६ प्रमादरहित भान-ध्यानमा प्रवतन बरव् २७ हमशा आरमचारित्रमा सन्म उपयोगयी वत्य २८ च्यान, जिती द्रयता अर्थे एकाग्रतापूनक करवू २९ मरणांत दुःखबी पण भय पामको नही **१० स्त्रीआदिशना सगर्ने स्यागवी**

ए एने को योग अमुख्य छै

🎀 प्रापरिचत्त विनुद्धि व रवी १२ मरणशाले खाराधना वरवी

संचळा संबह करनार

परिषामे अनुष्ठ सुखने पामे छे

वि । ए० १९४० चैत्र

(¥)

स्मृतिमां राखवा योग्य महायाययो — १ एक भदे नियम ए ज आ जगतनो प्रवर्तक छ

२ जे मनुष्य सत्पूरणीना चरित्रगहस्यन पाम छे, से मनुष्य परमन्त्रर थाय छे

भ भवळ विश्व ए ज सव विश्वम हुःसनु मुळिपुं छ ४ मात्रानो मेळाप जने योग्रा सामे अति सभागम ए

बसे समान दु सदायक छै ५ समस्वभाषीनु भटवुं एन जानीओ एकांत कहे छै ६ इन्टियो तमने जाते अन सस मानो त करता सन स

६ इन्द्रियो तमने जाते अन सुख मानो त करता तन धर्मे जीतवामां ज सुख, आनद अने परमपद प्राप्त करती

शाप विना सत्तार नची अन सत्तार विना राग नची
युवावयनो सर्वस्य परित्याग परमपन्ते आपे छ
से सस्तान विचारमां पहोंचो के ज बस्त अतीहिय

स्वस्प छ

त्त थाओ वि०स०१९४०

🕻० गुणीना गुणमा अनुरक्त थाओ

वचनामृत

र आ तो अर्थेड सिद्धात भारजो क मयोग वियोग, सुख, हुग्च, मोद, आन" अगराग, अनुराग इत्यादि योग कोई व्यवस्थित कारणने रूईने रह्या छ

त्र एकात माथी के एकात कायदा रोग समान न आपको वे नौदेनी एक समागम करवा योग्य नथी छता ज्या मुधी तेवी दशा न याय त्या सुधी सत्युक्तनो समागम अवस्य नेवलो छटे छे

४ जे कृत्यमा परिणामे दुख छेतेने सन्मान आपता प्रथम विचार करो

५ कोईने अंत करण आपनो मही, आपो तेनापी भिनता रासनो नहीं, भिन्नता राखो स्या अन्त करण आप्यु ते न आप्या समान छे

त न आप्या समान छ ६ एक भीग भोगवे छे छता कमनी वृद्धि नधी करतो, अने एक भोग नथी भोगवतो छता कमनी वृद्धि करे छे, ए आश्चमकारक पण समजबा योग्य क्यन छे

७ योगानुयोगे बनेलु कृत्य बहु सिद्धिने आपे छ

६९ अतरम माहप्रचि जेनी गई ते परमात्मा छे ३० व्रष्ठ छईन उन्लामित परिणाम भागनो नही

महाबीरस्वाभीए सम्यननत्र आप्यां हता ७५ भगवतीमा बहेली पूद्गल नामना परिम्नालकनी बचा क्षस्त्रमानीओन बहेल संदर रहस्य छै

१९ एवनिष्ठाए आमीनी आगा आराचवा तरवज्ञान प्राच्य चाय छ ।
१९ क्रिया ए १४ उपयोग ए घम परिणाम ए मम, भ्रम ए निमाल, बहा ते आरता अने शका ए व गस्य छे प्रोक्ते समारती नहीं, आ उत्तम परंतु आनीओए मने आपी ।
१० जात जेम छे तम एवज्ञाननी दिन्छए जुओ अप धी गोहानी चार वेद एन्य करेंचा जीवानी शीमत् अप धी गोहानी चार वेद एन्य करेंचा जीवानी शीमत् ।

७६ बीरना कहेला शास्त्रमा मोनेरी वचनो छटक छटक वने गप्त छे ७७ सम्यक्तेत्र पामीने तुमे गमे ते धर्मशास्त्र विचारो सो पण आत्महित प्राप्त यशे ७८ इदरत, आ तारो प्रवल अयाय छे के मारी घारेली नीतिए मारी काल व्यतीत करावती नथी ! (क्दरव

٤ų

5

ते प्रवितकमें) ७९ माणस परमेश्वर बाय छे एम ज्ञानीओ बहे छे ८० उत्तराध्ययन भागन् जनमूत्र तत्त्वर्गप्टए पूना पूना खबलोको

८१ जीवता मराय सो फरी न मरवू पड़े एवा मरण इच्छवा योग्य छे

८२ कुतप्तता जेवी एक्के महादीप मने लागती नची ८३ वगतमा मान न हात ता अहीं ज मोक्ष होत !

८४ वस्तुने वस्तुगत जुओ

८५ धर्मनु मुळ वि० छे

८६ तेन नाम विचा ने जेनायी अविचा प्राप्त न याय ८७ बीरना एक बाबयने पण समजी

१०८ सर्व धास्त्रनं एव तत्त्व मने मळ्य छे एम बहु सी मार्च अहपन मधी १०९ न्याय मन बह प्रिय छे बीरनी दौली ए ज न्याय छे समजब दूलम है ११० पवित्र पृथ्योनी कृपार्ग्य ए ज सम्मन्त्रान छ

56

धणी अर्घ्वजानदशा यता सुधी वर्षे छे ११२ कोई धमधी है विषद्ध नधी सर्वे धर्म ह पाळ छ समें सपळा धर्मधी विषद्ध छो एम बहेबामां मारी उसम हेतु छ ११३ समारी मानेली धम मने क्या प्रमाणधी बोधो छो से

१११ अतहरिए कहेली स्याग विश्वद बद्धियी विवास्ता

मार जाणवु जरूरमु छे ११४ शिथिल बच दिष्टिया नीचे आवीने ज विसराई जाय (--जो निजरामा आव तो)

११५ कोई पण शास्त्रमा मने नहां न हो ११६ द सना मार्यो वराग्य लई जगतने आ लोको

धमाव छे ११७ अत्पार ह भीण छ एन मने पूण भान नधी

११८ त सत्पूष्पनो शिष्य छे

११९ ए ज मारी आकाशा छे

१२० मने कोई गज<u>न्द</u>ुमार जेवो वसत आवो १२१ मोई राजेमती जेवो वरूत आवो

१२२ सत्पुरुषो कहेता नथी, वरता नथी, छता तेनी सत्पृश्यता निर्विकार मुखमुद्रामा रही छ १२३ सस्यानविचयम्यान पूर्वधारीओने प्राप्त घत हुई। एम मानयु योग्य लागे छे तमे पण तने ध्यावन करो

१२४ आरमा जैवो कोई देव नयी १२५ गोण माग्यशाळी ? अविरति सम्दर्गिट ने विरति ?

१२६ कोईनी आजीविका तोडशा नही वि॰ स॰ १९४३ फार्तिक

()

थोष्टा याक्यो १ विशाळ मुद्धि, मध्यस्यता सरळता अने जितेंद्रियपण

आटला गुणो जे आत्मामा होय स सत्व पामबान सत्तम पात्र छे २ जगतमा भीरागीत्व, विनयता अने

नहीं मळवायी आ आरमा अनान्निळ्यी रसहयो पण निरपायका यह त यह हवे आवणे पुरुपार्य नरवी उचित छे जब बाली !

३ परमारमाने ब्याववाची परमारमा व्याय छ, वच ले ब्यावन, आरमा सत्युष्पना चरणवमळनी विनयी पासना विना प्राप्त करी शवको नथा ए निर्यन्य मगवाननु सर्वीत्वय्ट चननामृत छे

अ बाह्यभावे व्यावनां वतीं वन अंवरंगमां एकाव घावली भूव-निरुष रही ए ल मान्यता वने बेंधवता छे ५ क्या कारत् कोई आणी तथी विविध्व कारायों तथा तथा मनुष्यप्राणी रोक्शवेनु छे क्या, अर्था व्या सूपी क्युच्य छे रथा सूपी से प्राणी कपोन्तिवत्

च्या सूचा अपूर्व छ त्या सूचा व प्राणा जनान्याचनत् छे इच्छा जयवाळ प्राणी कन्यंगामीवत् छे ६ तने मीह चो, अने तेन चोक चो, वे जे सवज एक्स (प्राप्तात्मकरूप) ने ज जप छे

६ तन महि धो, अनं तम द्यांक घो, व अ सवण एक्स (परमात्मस्वरूप) ने ज जुए छे ७ कुपानुरने पायानी महेनत करजो अतुपानुरन

 प्वातुरने पायानी महेतत करको अतृपातुरत प्यातुर पवानो जिज्ञासा गेण करको जैन से येदा न पाम सबु होय तने माटे जदासीन रहेको ७१ ८ देफिनिय गया पछी गमे से बास्त्र, गमे से अपर, गमे

१० गमें तेरली विपत्तिओं पडे तथापि गानी द्वारा धाराणिक पळनी इच्छा गरनी मोग्य नमी ११ जेंनी प्राप्ति पत्नी अन्यवशळ्य साथनपण्य गरी सव नाजने माट अयावनपण्य प्राप्त होत्य छे एवो जो कोई होय सो ते तरणतारण जाणीय छीए, तीन मजो

१२ सर्व प्रकारना भयने रहेवाना स्थानकरूप आ सप्तारने

विषे मात्र एक वैराग्य व अभय छे

रैं केने मुपूनी साथे नित्रता होय, अपवा वे मृत्यूपी
भागी छूटी शके एम होय अववा हु नहीं व मह एम वेने निश्यत होय ते मले सुखे मुए

—(श्री तीवकर-छ जीव निशाय अध्ययन)

जैने निर्मय होय ते मेळ तुखे सूए

-(धी तीयकर-छ जीव निकाय अध्ययन)

रे वियम मावना निर्मित्तो बळवानण्ये प्राप्त प्या छता

जे "तिपुरूर कवियम उपयोगी बदया छ वर्ते छै, अने
प्रविद्याल के वर्ते है नहीर वारवार नामकार

97 १५ परममित्तयी स्तृति करनार प्रत्ये पण जेने राग नथी

अने परमञ्जूषी परिषठ-उपसर्ग करनार प्रत्ये पण जेने द्वय नथी, ते पुरुषरूप मगवानने बार्रवार ममस्टार ! १६ जेने बोई पण प्रस्य रागन्य रह्या नथी से महान्माने

बारबार नमस्कार ! १७ बीतराग पुरुवना समायम बिना, उपासना बिना आ जीवने मुम रता बंग उत्पन्न बाय ? सम्यक्तान नयांची

याय? सम्यक्दणन भयाची याय ? सम्यक्चारित्र स्यांची थाय ? नेमने ए अणे वस्तु अन्य स्थानके होती नथी

१ प्रमादने रोध आरमा मळेलु स्वरूप मुली जाय छे रास्या रही ३ कमे बरीन पछी तेनी सिद्धि करो

२ जे जे बाळे जे जे करवान छे तेने सदा उपयोगमा

४ जल्प आहार, अरूप विहार, अल्प निदा नियमित वाचा नियमित काया अने अनुकुळ स्थान ए मनने वश करवाना जनभ साधनी हो

(6)

छे क्दापि से जिज्ञासा पार न पढी योगण जिज्ञासा ते पण से ज अधावत् छे ६ नवा कर्म बाधवा नहीं अने जूना भोगवी लेवा एवी जेनी अवळ जिज्ञामा छे ते, स प्रमाण सर्वी शके छे

८ मन जो चनाशील यह मनु होम तो हम्यानुयोग' विचारवो योग्य छे प्रमादी यह गमु होय तो 'परणकरणानुयोग विचारवो योग्य छे, वले क्यायी परणकरणानुयोग विचारवो योग्य छे जह यह महा को योग्यानुयोग विचारवो योग्य छे जह यह यह मन् होग्य तो गणिवानुयोग विचारवो

 कोई पण कामनी निराशा इच्छवी परिणामे पछी जेटकी मिट धर्ट केटको लाम, आम करवाथी सतीयी

 जे हृत्यनु परिणाम घम नधी, ते तृत्य भूळघी ज करवानी इच्छा रहेवा देवी जोईती नधी

रहेवाची १० पृथ्वी मबधी क्लेश याय तो एम समजी साथे आववानी नयी, ऊल्टो हु तेने देह

योग्य छे

७४ ष्टु बळी ते वई मूज्यवान नयी स्त्री शवधी वरेण, शकामाव बाय तो आग समजी आज मोना प्रत्य हसजे वे ते मळमत्रनी साममां मोही पडयो (अ

तु नि स्पर्ही पर्द धकी।

१ तेनो हु बोध पात के जनायी समाधिमरणनी प्राप्ति
याय

२ एक बार जो समाधिमरण ययु तो सर्थ काळना
अससाधिमरण टळने

३ सर्वेताम पद सरवाणीन छ

बन्तुती आपणे नित्य त्यांग बरीए धीए समा 1) धन सबसी निराशा न करेश थाय तो त ऊची जातना बांकरा छे एम समजी सतीय रासजे अस बरीने तो

> (८) सत्पुरुषोने नमस्कार

बारतक १९४३

अनतानुबधी क्रोध अनतानुबधी मान अनतानुबधी गाया अने अनतानुबधी स्टोम ए चार तथा मिथ्यास्व गोहिनो. मिखागोहिनी सम्यनस्वमोहिनी ए त्रुप एम ए गांव प्रकृति ज्या सुधी शयोधराम, उपशाम व साथ बढी निर्मा त्या सुधी सम्मन्द्रित्य बनु ममजनु नदी ए साय प्रकृति जेम प्रवाद स्वादाने पामे तेम तेम ता सम्मन्द्रत्तो उपय प्रकृति जेम प्रवाद स्वादाने पामे तेम तेम ता सम्मन्द्रत्तो उत्तर पामे हे ते प्रकृतिकांनी चित्र प्रदेशी पराम दुख्या छे जेमी त प्रविच प्रमुद्ध स्वादान स्वादान

एन पतु अटबपु छे तेनी प्राप्ति करीने ससरतापमी अटब्स वसम्यान आस्ताने सीतळ करनी ए अ इत इरवात छे
'धर्म' ए सस्तु बहु गुन्त रही छे ते बाह्य सखीयनमी मळवानी नमी अपूर्व अदर्सधीमनभी ते प्राप्त
पाप छे ते अदर्मधीमनभी ते प्राप्त
पाप छे ते अदर्मधीमनभी हे अपूर्व

सन्ग्रहना उपनेश विना अने जीवनी सत्पात्रता जिना

एवं भवना घोडा मुख माटे अनत भवनु अनत -नहो वधारवानु प्रयत्न सत्युच्यो वरे छे धर्मप्रयत्नमां, बात्मित्र हितमा अय उपाधिने आधीन धई प्रमाद स् धारण करवी ? जाम छे छतां देण बाळ पात्र माव जोवां जोईए

सत्पृथ्योन् योगबळ जगतन् बस्याण वरो प्रणाम-नीराग थेगी समुक्यये

दवाणिया महासद १४ वय १९४५

(*) नीचेना दोष न आववा जोईए -

रै कोईघी महा वि"वासघात २ मित्रयी विन्वासंघात

३ मोर्डनी भाषण ओळववी ४ व्यसनन नेवन

५ मिथ्या आळन मुक्त् ६ सोटा लेख करवा ७ हिसाबमा धववन

८ जुलमी भाव बहेवी

१० 'यूनाघिक तीळा आपवु ११ एक्ने बदले बीजु अथवा मिश्र करीने आपर्वु

१२ कर्मादानी घषो १३ लाच के अदत्तादान

र इलाव क अदतावान ए बाटेबी कई रळवू मही ए जागे सामा य व्यवहार शुद्धि उपजीवन अर्थे कही गयो (अपूर्ण)

ववाणिया, माह १९४५

नीरागी महात्माओंने नमस्कार वर्म ए जड बस्तु छे जे जे बारमाने ए जडबी जेटली

जेटां आरमबृद्धिए समागम छे तेटां तेटां वाटानी एटा अवोचवानी ते आरमाने प्राप्ति होग, एम अदुमन याय छे आरचयता छे ने पीते जड छता चेताने अचेता मनावी रह्या छे। चेता चेतानान मूली जई तेने स्वस्य स्प ज माने छे जे पूरायो ते जाममयोग अते तेता उदये उद्यक्ष प्रयोग पर्यायोने स्वस्यस्य नथी मानता अने प्रव स्योगी स्वतामा छे, तेने अवस परिणामे मोनवी गुप्त आचरणा छे आ नी तो क^{र्र} कहा जाय तेन भयी अने आम कर्याविनातारो कोई काळे छटको बनार

एक सन्पुरुपने राजी करवामा, तनी सर्व इच्छाने प्रश्नमवामा, ते ज सत्य मानवामा आशी जिंदगी गई तो उत्कृष्टमा उत्कृष्ट पदर भव अवश्य मोदो जईन मोहमयी आसो बदी रै॰, द्यानि, १९४५

नथी. आ अनुसवप्रवचन प्रमाणिक गण

(१३) निरावापपणे जेनी मनोवृति वह्या कर छे, सकल्प विकल्पनी मदेवा जन वर्द छे पचविषयधी विरक्तक्रक्रिया

अकुरो जेने पूटचा छे बरेशना कारण जेणे निमूळ कवा छे, अनेवात बष्टियुक्त एकातदृष्टिने जे सेन्या करे छे, जेनी मात्र एक सुद्ध वृत्ति ज छे, स प्रवापी पुरुष जयबान वर्ती

वर्तों आपणे तेवा बवानो प्रयत्न करवो जोईए वि० स० १९४५

22 भाई, आटमु तारे अवस्य करवा जेवु छे .--

^१ देहमा विचार बरनार बठो छ ते देहपी भिन्न छे ? ते मुली छे थे दुसी ? ए ममारी ले रे हुँ स मामा ज अने दुःसना कारणो पण सने दृष्टि

गोचर वन तम छता बदाजि न बाय सी मारा० नोई मागने बाची जा एटले सिद्ध परी त टाळवा माटे जे चपाय छ न एटलो ज के तैयी बाह्याम्यतर ^{के} रहित बनाय छे और दगा अनुभवाय छे ए प्रतिमा

र ते सामन माटे सबंसगपरित्यामी प्रवानी आव पहला छ निषाय सद्गुरना चरणमा जईने पहतु योग्य छे जबा भावची पडाय तथा भावची सब काळ रहेवा मार्रेनी विचारणा प्रथम करी हर को तने पूरका बळवान लागता होय वो अध्यामी, हेनस्यामी रहीने ६ प्रथम गर्मे तेम करी तुं वार्र भीवन जाण वाणवु का

पण त बस्तुने विमारीश महीं माटे के भविष्यतमाचि एका अन्यारे लत्रमाबी

७ से आयायनी मानसिक आत्मीपयीग सी निर्वेदमी

८ जीवन बहु टूकु छे, उपाधि बहु छे, अने त्याग धई शबे तम नथी ता नीचेनी बात पून पून स्टामां राध १ जिलासा से बस्तनी राखनी २ ससारने बपन मानव

राध

तेम छता प्रवक्तमं नड तो शोव करवो नहीं ४ देहनी जटली चिंता राख छै सटली नहीं पण एषी

अन ए अरधम

अनल गणी चिंता आत्मानी राख कारण अनत भव एक भवमा टाळवा छे ५ न चाले तो प्रतिश्रोती या

रै पूर्वकर्म नथी एम गणी प्रत्यक सम सेव्या जवो

13

 ८ अनुसरवासी थईने वर्ते ९ छवटन समये समये चुनीश नही ए ज मळामण

वि० स० १९४६

६ जेमाथी जेटल बाय सेटल कर ७ परिणामिक विचारबाळी या

समजीने अल्पभाषी धनारने परचालाप करवानी थोडो ज अवसर सम्रवे छे

है नाय ! सातमी समतमप्रभा नरवनी वेदना मळी होत सो बसते सम्मत करत. पण जगतना मोहिनी।सम्मत

पवी नधी पुवना अन्नम कर्म उदय आश्ये धदता जो शीच करी छो तो हवे ए पण ध्यान राखो के नवा बाघता परिणामे

तवा तो बधाना नची ? आत्माने बोळखवो होय तो आत्माना परिचयो चनु,

परवस्तुना त्यागी चव जेटला पोतानी पुद्रगलिक मोटाई इच्छे छ तेटला

हरका समव प्रशस्त प्रथमी मिल करो, तेनु स्मरण करो, गुण चित्रत करो

मुंबई, वि० स० १९४६

(१६) सहज जे पुरुष वा प्रथमां सहज नोच करे छे, ते पुरुष माट

प्रथम सहज ते ज पुरुष छसे छे तेनी हमणा एवी दशा अतरगमा रही छे के कईन विना सब ससारी इच्छानी पण तेणे विस्मृति करी

नाशी छे ते कईक पाम्यो पण छे, अने पूणनो परम मुमुनु छे, छेल्ला मार्गनो नि शक जिलातु छे

हमणा ज आवरणो तने उदय आव्या छ ते आव रणोपी एने खेद नमी, परतु वस्तुभावमा पत्ती मदतानो खेद छे

से घमनी विधि अधनी विधि, शामनी विधि, अने सेने आघारे मोशानी विधिने प्रकाशी शके सबी छे घणा ज घोडा पुरुषोंने प्राप्त घयो हुवे एवी ए काळनी समोपदामी पुरुष छे

तेने पौतानी स्मृति माटे शव नची, तक माटे गर्व नची, तेम ते माटे तेनो पनपात पण नची तम छता कईक बहार राखवु पडे छे, तेने माटे खेद छ

64

तेनं अत्यारे एक विषय विना बीजा विषय प्रति

वात न करवी जोईए २ बहेनारनी बात पूण सामळवी जोईए ३ पोने घोरजयो तनो सदत्तर आपवो जोईए ४ जेमा आत्मरलाघा के आत्महानि न होय ते वात

उच्चारवी जोईए

तथापि ते तीरण उपयोग बीजा कोई पण विषयमा वापरवा ते प्रीति घरावतो नथी

ठेकाणु नयी ते पुरुष जीने तीक्षण उपयोगवाळी छे.

(20) नीचेना नियमो पर बह लक्ष आपव ---१ एक बात करता तेनी अपूणतामा अवस्य विना भीजी

५ घर्म सबमी हमणा बहु ज ओछी बात करवी ६ लोकोची धर्मै व्यवहारमा पडवुं नही

मुबई, पोष सुद , बुध, १९४६

हानो १-४

15 (22)

महाबोरना बोधने पात्र कोण ?

१ सत्पूरपना चरणनो इच्छक

२ सदैव सुदम बोधनो अभिलापी ३ युण पर प्रधस्तभाव राखनार

४ बहाबतमां प्रीतिमान

५ प्यारे स्वदोध देखे स्थारे तने धेन्वानो अध्योग रासनार.

६ उपयोगची धन पळ पण मरनार

७ एकातवासने बलाणनार, ८ तीर्पादि प्रवासनो उछरगी

९ आहार विहार निहारनो नियमी १० योवानी गुरुवा दबादनार

एवो कोई पण पुरुष ते महाबीरना बोघने पात्र छै सम्पनदशाने पात्र हो पहेला जब एक्के नयी

मुबई, पागण सूद ६, १९४६

(१९) हे जीव, तु अमा मा, तने हित यह छु अतरमां सल छे अहार घोषवायो मट्टरो नही

अतरमां सुल छे बहार रोघवायी मळशे नही अतरन् सुल अतरनी समयेणीमा छे स्पिति यदा नाटे बारन् पुण्योंनु विस्मरण कर, आश्चर्य मूल

गट बाह्य परायानु विस्मरण कर, आश्चय मूल समप्रेणी रहेवी बहु दुल्म छे निमित्ताचीन वृत्ति करो करी चल्ति धई जसे, म धवा अच्छ गगीर उप-योग राख

योग राख आ क्रम यथायोग्यपणे पाल्यो आ यो हो हार्जीवन स्याग नरतो रहीश, मुझाईश नहीं, निर्भय पर्देश भ्रमा मा तने हित कहु हु

अने पत एवं हुए कहु हु आ सार छे एस भावनी ब्यास्या प्राये न कर. आ सेतु छे एम मानी न वेस आ माटे बाम करवु छ ए सविष्यनिर्णय न करी राक्ष

श्च अया माटे आम न चयुहोत तो सुख यात एम स्मरण कर

न कर आटलुआ प्रमाणे होयाची सार्वणम आग्रहान -

आटलुआ प्रमाणे होय तो सार एम आग्नह् नरी राक्ष र शोख आणे मारा प्रति उचित नमु एवु स्मरण न राख आ मने अग्रुन निभित्त छे एवी विकल्प न कर आ मने शुम निभिक्त छे एवी दुइता मानी न बेस

आ मने सुमें निमित्त छे एवी दुइता मानी न बेस आ न होत तो हु बगत नही एम अनळ ज्याख्या नहीं करीन

पूबकमें बठवान छे मारे आ वधी प्रसग मळी आखी एवु एकासिक प्रहण करीश नही पुरुषाचनी जय न पथी एवी निरागा स्मरीश नही

बीजाना मोचे सने क्यन छे एम मानीश नही सारे निमित्ते पण बीजाने दोष करती मूळाव सारे दोषे तने बणन छे ए समनी पहेली फिला छे तारो दोष एटछी व के बन्यने पोतानु मानवु, पोन पोताने मुकी खब

ए बंघामां ठारी रगाणी नधी भाटे जुदै जुरे स्वळे में सुखती करपना वरी छे हे मूढ ! एम न कर---ए तमे लें हित कहा अतरमा सख छे

८९ जगतमा कोई एवं पुस्तक वा लेख वा कोई एवी साक्षी त्राहित तमने एम नथी वही शक्तो के आ सखनो

माग छे, वा तमारे आम वतव वा सबने एक ज क्रमे कगव, एज सचये छै के त्या कई प्रवळ विचारणा रही छे एक मौगी थवानी बोघ करे छे एक योगी थवानो बोध करे छे ए बेमायी कोने सम्मत करीश ? बने शामाटे बोध कर छे ? धन्ते कोने बोध करे छे? कोना प्रेरवाची करे छे ? कोईने कोईना अने कोईने कोईनो बोध का लागे छे?

एना कारणो वा छे?

तेमो साक्षी कोण छे ? समे श वाच्छो छों[?] ते क्याची मळशे वा शामा छे ?

ते कोण सेळवडी ? क्या थईने लावशो ? लाववान कोण शीखवरो.?

43

२ दृष्टि एवा स्वच्छ करो के जेमा सून्ममा सून्म दोष पण देलाई नके, अन न्सायाची क्षय चई धकें मुबई अपाष्ट बद १२ रवि १९४६ (२२)

सहज प्रकृति १ परहित ए ज निजहित समजवु अने परदःश ए पोवानु दु श समजब

२ सुख दुख ए बन्ने मननी कल्पना छे ३ क्षमाएज मोक्षनी भव्य दरवाजो छे

४ सपळा साथे नम्नभावयी बसवु ए ज श्रद भूषण छे

५ दात स्यभाव ए ज सज्जनसानु सर मुळ छे ६ खरा स्नहीनी चाहुना ए सञ्जनतानु खास रुदाय छे

७ दुजननो ओछो सहवास ८ विवेषवृद्धिथी संघळु आचरण करव्

९ द्वेपमाव ए बस्तु झेररूप मानवी १० धर्मक्रममा वृत्ति राखवी

११ नीविना बाधा,पर पग्र न मूक्को

१२ जिलेंद्रिय थव्

१३ ज्ञानचर्चा अने विद्याविलासमा तथा चास्त्राध्ययनमा ग्यावु

१४ गभीरता राखवी १५ ससारमा रह्या छता ने ते नीतिथी भोगवता छता,

१६ परमात्मानी मक्तिमा गुबाव १७ परनिंदा ए ज सबळ पाप मानव

विदेही दशा राखवी

१८ दूजनता करी फाबव ए ज हारबु एम मानवु १९ आत्मञान अने मज्जनमगत राखवा

(२३) **बचनावली**

१ जीव पोताने मुली गयो छे, अने तेथी सन्सूखनी तेने वियोग छे एम सब धर्म सम्मत कहा छ

२ पोताने मुली गयारूप बजान, ज्ञान मद्भवायी नाहा थाय छे, एम नि शक मानव

व ज्ञाननी प्राप्ति ज्ञानी पासेथी यवी जोईए, ए स्वामाविक समजाय छे, छ्वां जीव स्रोक्सरजादि अनतानवधी क्यायन मळ छे

४ भाननी प्राप्ति जेणे इच्छवी, तणे भानीनी इच्छाए वतन एम जिनागमादि सर्व शास्त्र कह छै पालानी इच्छाए प्रयत्तता अनादि काळची रसहची ५ ज्या सुधी प्रत्यश पानीनी इच्छाए, एटले आचाए नहीं बर्ताय, ह्या सुधी अभाननी निवृत्ति धवी समवती

नयी ६ कानीना आ शानु आ रापन स करी गने के जेएक निष्ठाए, तन, मन, धननी आसत्तिलो स्थाग करी तनी भक्तिमा जोडाय

७ जोके ज्ञानी मिक्त इच्छरा नथी परंतु मोक्षा मिलापीन से क्या विना सपदेन परिणमतो नयो. अने मनन तथा निदिध्यासनादिनो हत् घतो नथी. माटे मुमक्षए ज्ञानीनी भक्ति अवस्य क्तेंब्य छे एम

सत्पदपोण कहा, छे

८ आमा क्हेली वात सर्व शास्त्रन मान्य छ ९ ऋषभदवजीए अट्ठाणु पुत्रीने स्वरायी मोक्ष थवाना

ए ज उपदेश कर्यो हतो

49

अधिकारी थवा माटे कही छे, मोक्ष यवा माटे जानीनी अव्यव आना आरापवी जोईए १३ बा जानगामनी श्रेणी कही, ए पाम्या दिना बीजा मामधी माक्ष नगी १४ ए मुन्त तस्के जे आराधे छे, स प्रत्यक्ष अमृते पामी

१२ शास्त्रमा क्हेली आजाओं पराय छे अने ते जीवने

अभय थाय छे इति शिवम् मुबई, माह सुद, १९४७

वर

पुराणपुरुषने नमोनम आ लोक त्रिविघ तापयी आकुळव्याकुळ छे झाझवामा

आ लोक त्रिविध तापयी आकुळव्याकुळ छे झाझवाना पाणीने लेवा दोडी तुषा छिपाववा इच्छे छे, एवो दीन छे अज्ञानने छीचे स्वरूपनु विस्मरण यह अवाधी भयकर कनुमने थे, एवी भारणजावादा का जानने एक सह्यूप्त ज सरण छे सद्यूपनी बागी विना कोई ए वाप करें नृता छंगे सो में नहीं एम नित्रपर छे माटे क्ये करी करी करी सद्यूपना मरणनु अमे स्मान करीए छीए बता देवळ अगातामन छे कोई पण प्रामीने अस्य पण साता छे, ते पण सन्यूपनो ज बतुपह छे कोई पण प्रकारता पुष्प विना सातानी प्राप्ति नथी, जने ए पुष्प पण सद्युपना स्वर्ण विना कीर्यूप प्राप्त प्रमु

जाणे से संगादिकची प्राप्त गयेछ लागे छे, पण एतं मुळ एक सरपुषय व छे सारे असे एस व बरागीर छीए के एक अंदा शावाधी करीन पूजकायता मुधीनी सब समाधि छो सरपुष्ठण ज कारण छे, आटली संग्री छचचेंठा छवा जेने कर्ष पण कराया है, अमता नामी पीवापण गयी गव

संदुष्य ज नारण छ, आटटा बघा छमयता छता जन कर्द पण स्नृहा नथी, ज मत्तता नथी पौतापणू नथी गव नपी, गारव नथी एवा आयचयनी प्रतिमारूप संद्युद्धन अमे करी करी नामक्ष्ये स्मरीण शीण

त्रिलोकना नाम यश मया छ जेने एवा छता य

7 ९७
एवी कोई अटपटी दशाभी वर्ने छे के जेनु सामा स मनुष्य
ने ओळनाग पत्नु दुलम छे, एवा सन्मुप्पने बसे फरी करी
स्तवीण छोए
एक समस पण बेचळ असगरणाची रहेतु ए जिलोकने
वा करना करना पण विकट नाय छे, तेवा असगरणाची

अमे परमाश्चर्य पामी नमीए छीए
हे परमामा । असे ता एम ज मानाए छीए के आ
काळमा पण जीवनी मोन्य हाय तम छता जन प्रयोगा
प्रवित्त प्रतिपादन चयु छ ते प्रमाण का बाळे मोन न
स्वा तो आ सने ए प्रतिपादन तु राख अने असन मोन्य
वापना करता सरलस्या ज चरणनु ध्यान करीए अने

हे प्रपर्राण! अमे तारामा अन सत्पृष्यमा वर्द

त्रिकाळ जे रह्या छे, एवा सत्पुरुपना अत करण. ते जोई

भद हाय एम समजवा नथी तारा करता अमने तो सत्पुरुप ज विधेष जाये छे कारण के तु पण तेने आधीन ज रहाे छे, अने अमे सत्पुरुपने ओठस्या विना तने ओळसी राक्या नहीं, ए ज तार दुण्टपण अमने सत्पुरुप प्रत्ये प्रेम उपजावे छे कारण के तु वस छवा पण तेशे

ज़ेनी समीप ज रहाए एवा याग आप

हे नाथ ! तार मोटु न लगाडबु म अम तारा बरसा पण सत्पुडपने बिनाय स्तबीए छीए जगत आमु सने स्तब छे, तो पछो अमे एक तारा सामा बठा रहीन तेमा तमने क्या स्तवननी आकाना छै अन बमा तने प्यनपण पण छ?

के ईश्वरी इच्छा ज एवी छे क अमृत पारमाधित वात सिवाय शारी बीजो जिलाळित वात प्रसिद्ध न पर, अन

क्या स्तवनना आक्षाना छ अन क्या तन सन्यगुपण छ । क्षाना पुरुषो विकाळनी स्वात जाणवी छता प्रगट करता नथी एम आपे पूछच त सबसमा एम ज्ञाय छै

तेम गरीए

(२५) जीव स्वभावे (पोताना समजणनी भुले) दापित छे. त्या पछी तेना दोप भणी जीव ए अनुक्पानी त्याग करवा

जेव थाय छै अने मोटा पुरुषो तेम आचरवा इच्छता नथी क्ळियगमा असत्सगयी अने अणसमजणयी भलभरले रस्ते न दोराय एम बनव बह मश्कल छे

(२६)

मबई असाड बद ४. १९४७

जे जे प्रकार आत्माने चितन क्यों होय से ते प्रकारे ने प्रतिभासे छे

विषयात्तपणाथी मृहताने भामली विचारशवितवाळा जीवने बात्मान नित्यपण भासत् नथी एम घण करीने देखाय छे, तेम बाय छे ते यथाय छ नेमके अनित्य एवा विषयने विषे आत्मबृद्धि होवाथी पोतानु पण अनित्यपणु भासे छे

विचारवानने आत्मा विचारवान रागे छे श यपणे चितन करनारने आत्मा शून्य लागे छे, अनित्यपणे चितन

१०० करनारने अनित्य लागे छे, नित्यपणे चितन भरनारने नित्य लागे छ हा गो १६०

(२७)

ह परमङ्गाळू देव । जाम जरा मरणादि सर्वे हु सोनो अरयत धाव करनारो एवो बीतराग पुरुषनो मूळ मार्ग आप सीमण्डे अनत ङ्गा करी मने आप्यो ते अन्य उत्तकारोग प्रतिचणनार बाळ्या हु सबया अरामण सु बळी आप सीमन कर्ड पण लेवान नवमा नि स्पष्ट स्टो जेपी हु

मन बचन, कायानी एकाब्रवाची आपना चरणारितन्द्र्या नमस्कार कह छु आपनी परमभन्ति अन बीतराग पृहचना मूळ्यमैनी चपासना मारा हुन्यन विषे भयपयत अबह जाम्रव रही एटलु मागु छुत सफळ पांत्री। ॐ सानिः

जाप्रत रही एटलू मागु हुत सफळ याओ । ॐ दानि दांति गाति - आन्विन १९४८

(२८) मुमुशु जीवने आ काळने विषे ससारनी प्रतिकृत्व बवाओ प्राप्त पथी त तने समारणी तरवा सरावर छे अनंतराळपी अम्पासेलो एषी आ सुबार स्पट्ट विचारवालो नित्य चित्रविचित्रपण् छे मान कल्पनाए तेमा सुख अने कल्पनाए दु व एवी तेनी स्थिति छे अनुकूळ कल्पनाए ते

बेबत प्रतिकूळ प्रसमे विशेषे होय छे, ए वात निश्चय करवा याप्य छे ए (प्रतिकूळ) प्रसम जो ममता^न वेदवामा आवे तो जीवने निर्वाण समीपन सावन छे याजहारिक प्रसमीप्

अनुकूळ भासे छे प्रतिकूळ कल्पनाए ते प्रतिकूळ भासे छे, अने भानीपुरुषोए त वेष कल्पना करवाना ना कही छे विचारवानने सोक घटे नही, एम श्री सीयकर कहेता हता

> (२९) नित्यनियम ॐ शीमत्सरमगुरुस्यो नम

मबई, फागण १९५०

ॐ श्रीमत्तरमणुक्यो नम सवारमा उठी ईयाँपविषी प्रतिक्रमी रात्रि दिवस जे कर्न अगर पापस्थानक्या प्रवृत्ति धई होय, सम्यम्गन देशन-चारित सबमी तथा पचप्रमण्द सक्यी जे कर्द अपराष ययी होय, बोई पण जीव प्रति विचित्तात्र पण श्री सत्पुरपना दर्नन करी चार घडी मारे सर्व मावच व्यापारची निवर्ती एक आसन पर स्थिति करवी त

धसते पण ए अ प्रमाणे करव

समसाम 'परस्पपुर' ए "-"नी वाच माळाली गणी ब घडी सुधी त्युचास्त्र क्षम्यमंन करयु रवार पछी एक वाले स्मातिलाँ करी थी सत्युच्योना वचनोत्न से कामोत्सर्यमा रठण करी सद्वतित्यु अनुमाना नर्यु त्यार पछी अरघां पढीमा मनिन्नी बीत ज्ञमाळ करतारा एवा गणी (जाचा सुगार) डच्चारवा अरघी घडीमा चरमाच साळ्यु कामोत्स्यक्ष्मे रटण कर्यु अने सबसदेव ए नामनी पाच माळा गणवी हाळ अस्प्यन बरवा योग्य शास्त्री -वैराप्यम्तक

इद्रियपराजयसक नातमुघारस अध्यात्मकृत्यन्य योग यृष्टिसमुख्यय नवनत्व मृळपढीत कर्मयथ घमविद् आत्मानुनासन भावनायोध मोश्नमागप्रकान मोशमाळा उपिमितिमवप्रपच अध्यात्मसार थी आनद्द्यनजी

103 षोवीतीमाथी नीचेना स्तवनो १३, ५, ७, ८, ९, १०, १३ १५, १६, १७, १९ २२ सात व्यमन (जुगटु, मास मदिरा वेश्यागमन,

धिकार, चोरी, परस्त्रा) नी त्याग 'जुबा, खामिय, मदिरा दारी आहेटक चौरी परनारी. एहि सप्त ब्यमन दुम्हदाई

दरितमळ दगतिके जाई? ए सप्तव्यसनना त्याग रात्रिभोजननो त्याग अमुक

सिवाय सर्वं बनस्पतिना त्याग अमक तिथिए अत्याग वनस्पतिनो पण प्रतिवध अमक रसनो त्याग अब्रह्मचर्य नो त्याग, परिप्रहपरिमाण धरीरमा विरोध रोगारि उपद्रवधी, बेमानपणाधी,

राजा अथवा दवान्नि। बळात्मारयो अन्ने विदिन करेल नियममा प्रवर्तवा अशक्त थवाय ता ते माटे पश्चातापन् स्यानक समजबु स्वेच्छाए करीने ते नियममा चुनाधि

कता वर्ष पण करवाना प्रतिना सत्पृत्पनी आनाए ते नियम

मा परपार वरवायी निवमभग नही वनाख, १९५०

पर पम मनीने प्रवृत्ति सद्दे न समने पण व्या भोगादिने विषे सीन्न व-मयपणे प्रवृत्ति धाय रया भानीनी आगानी बर्द अनुगता समय नही निर्भवपणे भागप्रवृत्ति समये जे निष्यस परिणान नहा छे सवा परिणाम वर्ते स्था पण

'अनतानुक्षी रामय छे तम ज हु समजु छु जने बाध नयी' प्रवा ने एवा क्लममा दहे अन भोगगी निवित्त पटे छे अने कड़ी कर्तमण पुरुष्य कर हो पह शक्त सोत्य छता पण मिध्याजानथी नानन्ना मानी भोगारिक मा प्रवतना पर स्था पण अनतानुष्यी कमर छे

मा प्रवतना वर स्था पण अनतानुवधी कमय छ जाप्रतमा जैम जैम उपयोगन गुद्धपणु याय तेम तेम स्थनन्यानु परिभीणपणु समये मुबई अवाह १९५१

(१३) प्रथम पत्मा एम कहा छे के ह मुमुनु ! एक आत्माने जाणता नमस्त लोकालोकने जाणीन अने मर्व

आत्माने जाणता समस्त होत्रालीकने जाणीन अने सर्व आण्यानु कळ पण एक आत्मप्राप्ति छे माटे आत्माची जाणवानु कळ पण एक आत्मप्राप्ति छे माटे आत्माची जुदा एवा बीजा भावी जाणवानी बारवारनी इच्छायी सु गानिओए कहा छे, तथापि उपयोगपूबक त सम्जाबु
दुक्त छे ए माग जुदो छे, जते तत् सक्क्ष्य पण जुद छ,
जन माज क्यानानिओ कहे छ तम नया माग्य ठकाण
ठकाणे जर्दने का पूछ छे? कमक त अपूक भावतो अय
जाण ठेकाणेथी प्राप्त थवा यांच्य नयी
बीजा पदना सहाय काय हे मुमुतु। यमनियमादि
जे साधनो सर्व गाल्यमा इहा छ के ते उप नहेला अपयो
निष्फळ ठरते एम पण नथी कमक त पण बाराणने अये
छ ते कारण आ प्रमाणे छे आत्मान रही गहे एसी
पात्रा प्राप्त चया तथा तथा त्यात साथ संवी योग्या
वावा एकारण । उपनेया छे तथवानीआए एपी

ण्वा हेतुयो ए साधनो कहा। छे, पण जीवनी समजणमा सामटो फेर होसाया त साधनोमा ज छटनी रहा। वयदा ते साधन पण अभिनिवेद परिणामे महा। आगळीची जेम बाळको बद्र देसाडदामा आवे तेम तत्कतालाला ए तत्त्वनु छत्व कहा, छे 'बवाणिया, आवव० १४, १९५१

एवभूत दुष्टियी ऋजुसूत्र श्यिति रूर ऋजुमूत्र दृष्टियी एवमूत स्थिति कर नगम दुष्टियी एवमूत प्राप्ति वर एवभूत दृष्टिथी मैगम विगुद्ध कर सग्रह दुष्टियी एवभूत था एवभत दिष्टिथी संब्रह विशुद्ध नर व्यवहार दुष्टिथी एवभूत प्रश्य जा एवभूत दुष्टिची व्यवहार विनिवृत्त १र शम्द दिष्टिषी एवमूत प्रत्ये जा एवंमत दृष्टियी या द निवित्र लप कर समभिरूढं दृष्टियी एकमृत अवलोक एवमूत दब्दियी समभिरूढ स्थिति कर एवमुत दिष्टिधी एवमुत था एवमूत स्यितियी एवमूत दृष्टि शमाव 🗱 दाति दाति दाति

हा० नो० २ १६

8 ₹₹₹ (34)

समस्त बिस्व धणु करीन परक्या तथा परवृक्तिः।

^{बहु} जाय छे तमा रही स्थिरता न्यायी प्राप्त थाय ? वावा अमूह्य मनुष्यपणानां एक समय पण परवृत्तिए जबादेवायोग्य नयो अन वई पण तम यया कर छ तनो चपाय कई विभावे करी ग्रवयवा योग्य छ

भानीपुरपनो निरचय थई अवमेंद न रहे तो आत्म प्राप्ति साव मुलम छे, एवु जानी पाकारी गया छता बैम लोको मल छे २ . मुंबई, आसो सुद १३, १९५१

(35) ^{क्र}रना योग्य कई कहा होय ते विस्मरणयोग्य न होय एटको जपयोग करी कमें करीन पण तमा अवस्य परिणति ^बरवी घटे स्याग वराग्य चपराम अन मनित मुमुनु बीवे पहन स्वमावस्य करी मुख्या विना आत्महणा केम आव ?

पण चिचिन्यणायी, प्रमादयी ए बान विस्मृत यह जाय छ मुनई आसी सुद १३, १९५१ 888

(05) जाननुषळ विरति छे वीतरायनु आ बचन सब मुमुधुओए निय समरणमा राखवा योग्य छे जी बाचवायी, समजदाया तथा विचारवापी आत्मा विभावधी, विभा बना बार्योची अने विभावना परिणामचा चदास न चयो. विभावना त्यामी न ययो विभावना कार्योनो अने निमा बना पळनी त्यागी न बयो त बाचबु, त विचारबु अने त समजबे अज्ञान छे विचारवृति साथै ध्यागवृति उत्पन्न

करबी त ज विचार सफळ छे एम बहुबानी ज्ञानीनो (36)

ववाणिया, फागण बद ११ १९५३

८≯ नम सव जीव मध्यने इच्छ छ

देख सर्वेन अप्रिय छ

दुःसधी मुक्त यवा सर्व जीव इच्छे हे

बास्तविक तन् स्वरूप न समजावाची त द ख मटत

तथी

परमार्थं छे

ते द्रश्वना आत्यतिक अभावनु नाम मोग कहीए छीए

अत्यत बीतराग थया विना आत्यतिक मोश होय नही सम्यन्तान विना बीतराग थई शकाय नही सम्यग्दर्शन विना ज्ञान असम्यक महेवाय छे

वस्तुनी जे स्वभाव स्थिति छ ते स्वभाव ते वस्तनी स्थिति समजावा तेने सम्यग्ज्ञान कहीए छोए

सम्यग्नानदशन्थी प्रतीत यमेला आत्मभावे वतव ते चारित्र छे ए त्रणेनी एकताची मोक्ष थाय

जीव स्वाभाविक छ परमाणु स्वाभाविक छे जीव अनत छे परमाण अनत छै जीव अने पुद्रगलनी संयोग अनादि छ

ज्या सधी जीवने पदगलसबध छे. त्या सधी सकमें जीव कहेवाय

भावकमना कर्ता जीव छ भावकमन् बीजु नाम विभाव वहीवाय छे भावकर्मना हेतुची जीव पुद्गल ग्रहे छे

तेयी तजमादि घारीर अने औदारिकादि धारीरनी योग थाय छे

मावकमधी विमुख याय तो निजभावपरिणामी थाय

111

सम्पर्णान विना बास्तवित्रयणे श्रीव भावत्रमधी विमुख न पई शवे सम्पर्णान घवानो मुख्य हेतु जिननवनची तस्वाध प्राप्ति धवी ते छे हा नी ३ ६

(25)

(i)

सत्पुदयोगा अगाध गभीर सयमने नमस्तर व्यविषम परिणामधी जेमणे काळकूट विष पीधु एवा की व्यवमानि परमपुरुषोने नमस्कार

पण्णिममा तो ज अमृत ज छ पण प्रथम दशाए काळकूट विषयी पठ मृश्व छ गवा थी सममने नमस्कार से ज्ञानने, त दशनने अन ते चारित्रन वारवार

(2)

जेनी मन्ति निष्नाम छे एवा पुरुषोनी सरमग के ए महत् पुष्परूप जाणवा योग्य छे

पारमाधिक हेर्नुविशेषधा पत्रान्ति लखवानु वनी राकत् नथी जे अनित्य छ जे अमार छे जने ज अशरणरूप छे ते था जीवने प्रोतिन बारण वेम थाय छ ते वात रात्रि दिवस विचारवा योग्य छे

छाक्ट्रिश्चन मानीनी दृष्टिने परिचम पूर्व जटले वेशावत छे गानीनी दृष्टि प्रथम निरालयन छ रचि चेत्पन करती नधी, जीवनी प्रकृतिन मळता क्षावती नधी, तथी जीव ते दिष्टमा रुचिवान धतो नधी, पण जे

जीवोग परिपह वरीन थोडा बाळ सुचा त दृष्टिनु काराघन क्यु छे त सर्वे दु सना क्षयरूप निर्वाणने पाम्पा छ, तना ^{चेपायने} पास्या छ चीवन प्रमा^{त्र}मा अनादियी रित छ पण तमा रित रिवा योग्य काइ दलातु नधी 22

मुनई आसी सुद ८ रवि, १९५३

315 (Yo)

बारमदनान पामी निद्व प्रपणे यचाप्रारका विचर हो एवा महारमाओनी योग कावने दरभ छे

तेवो माग बन्य जीवने से पुरुपनी ओळगाण पहती मधी अने तथा€प कोळखाण पदचा विना ते महारमा प्रस्पे दुवासम् धनो नधी

ण्यां सुधी आश्रम दढ न धाय स्था सुधी उपनेना परिणाम पामतो नधी उपदेन परिणम्या विना सम्यान्यनतो सीम बनतो

नपी सम्यग्दर्शनी प्राप्ति विना जामादि द खनी आस्पतिक

तिवृत्ति बनवा योग्य नथी सेवा महात्मा पुरुषोनो योग तो दुर्जम छ तीमा महाय

नधी पण आरमार्थी जीवोनो योग बनवो पण करण छ

क्षोपण क्वचित् क्वचित से योग वनमानमां बनवा योग्य छे

सत्समागम अने सत्यास्त्रनो परिचय क्संब्य छे 🕉

मुबई कार्तिक बद १२ १९५४

११९ (४१) अपार महा मोहजळने अनत अतराय छता घीर रही जे पुरुष तर्या ते श्री पुरुष भगवानन नमस्कार

अनुत्व प्रता है आ पुष्प नगमाना गनस्कार अनत काळपी ज जान भवहेनु धतु हुन त नानने एक समयमानमा जात्वातर करी जेणे भवनिवृत्तिरूप नयु ते क्ल्यागर्शीत सम्यवदानने नमस्कार

निवृत्तियागमा सत्समागमनी वृत्ति राखवी योग्य छे मुबई, अयाड सुद ११, गुरु, १९५४

(४२) हेकाम । हेमान ! हेसगडदय!

हे वधनवर्गणा । हे मोह । हे मोहत्या ।

हे विक्लिता! तमे था माटे अंतराय करो छो ? परम अनुबह करीने हवे अनुबूळ याओ । अनुबूळ याओ प्रानी २१९

(8\$)

हे सर्वोत्हरू मुखना हेनुभूत सम्यान्तान ! तने अस्यत. मिक्तपी, नमस्कार हो १२० आ अनादि अनत ससारमा अनत अनत जीवो सार आध्यय विना अनत अनत दुसने अनुभव छ

तारा परमानुषद्वयी स्वस्वक्ष्यमा होच यई परम् बीतराग स्वभाव प्रस्ते परम निश्चय आस्यो कुनकृत्य ययाना माग प्रदूष पर्यो वित्र बीतराग । तमन अत्यत भक्तियो नमस्यार कुरु मा सो स्वर्ण पर्यो अतन अस्यत स्वर्ण स्वर्ण कुरु

न इ छ तमे आ पामर प्रये अनत अनत जवकार नयों छे हे हु-कुदादि आचार्यों ! तमारा सवनो पण स्वस्था नुसंघानन विप आ पामरने परम जयकारमूत थया छे ते माटे हु तमने अतिगय मिक्यी नमस्कार क इ छ

(४४) जेम भगवान जिने निम्पण वयु छ तम ज सर्व पदासनु स्वरूप छ मगवान जिन उप²गेणे आत्मानो समापिमाग श्री गुक्ता अनुबद्धी जाणी परस प्रयत्नथी उपासना करो १२१ (४८) (१) सवनोपदिष्ट आत्मा सदगुम्बुपाए जाणीने निरसर

अहो । ते सर्वोत्हुष्ट गातरसप्रधान मागना मूल सबज दव —

वहा ! ते सर्वोन्हस्ट शात रम मुप्रतीत कराव्यो एवा परमक्ताल सनगहन्त्र—

परमङ्कपाळु सद्गुरुदव--आ विस्वमा सवकाळ तमे जयवत बर्तो जयवत वर्ती

हानो ३२२

(84)

(१) प्राणीमात्रनो रशक, बघव जने हितनारा एवी कोई उपाय हाय तो स बीतरागनो घम ज छे

(२) सतज्ञा । जिनवर्रहीए शानादि जे स्वरूप निष्पण क्या छे ते आख्वारिक भाषामा निरूपण छे, जे दूण बोगाम्याम विना शानगोचर यथा योग्य नथा भाटे तम तमारा अद्रुण नानन आयारे बातरागना वाषयोगी



१२३ (४८) अनन्य झरणना आपनार एवा श्री सद्गुरदेवने

अनन्य शरणना आपनार एवा आ सद्गुरुदवन अत्यत भक्तिय नमस्कार

्राढ आत्मस्वरूपने पान्या छ एवा ज्ञानीपुरपोए नीचे कहा। छे ते छ पत्ने सम्यदर्गनना नियानना सर्वोत्हप्ट स्यानक शहा। छ

प्रयम पद —

'कारमा छे' जेम घटपटखादि पदार्घो छ, तम आरमा पण छे अमुक गुण होबाने लोचे जेम घटपटखादि होबानू ममाण छे तम स्वपरप्रशासक एवी चतन्यस्ताना प्रत्यश गुण जेने विषे छे एयो आरमा होबानू प्रमाण छे बीनु पद —

'आमा निय छे' घटपटआदि पदार्थों अमुन शाळवर्ती छे आत्मा तिशळवर्ती छे घटपटादि समोग करी पदार्थ छे आत्मा समावें करोने पदाय छ नैमके तेनी उत्पत्ति माटे कात्मा समावें करोने पदाय छ नैमके तेनी उत्पत्ति माटे कार्या पेननचता प्रगट यवा योग्य नगी, माटे जनूरनन छे अयमेगी होनापी अवितानी छे नेमके जेनी बाई समोग्यी उराति न होय, तेनो नोईने विये क्य पंच होग नहीं, पद अस्पत संनेहरहित छे, एम परमप्रय निरूपण क्यू छे

ए छ पदनो विवा जीवने स्वस्वरूप समजवान अर्थे कहा छे अनादि स्वप्नदगाने लीच उत्पन्त वयेला एवी जीवनी अहमाव, ममत्वभाव से निवृत्त बवाने अर्थे आ छ पदनी ज्ञानीपरुपोए देनना प्रकाशी छ त स्वप्नत्नाची रहित मात्र पोतान स्वरूप छे, एम जो जीव परिणाम करे सी सहजभात्रमा से जागत गई मम्यकदशनन प्राप्त गाप. सम्पनदगनने प्राप्त यह स्वस्वभावरूप माक्षने पाम कोई विनाशी, अनुद्ध अन अन्य एवा भावन विष तन हर्ष, शोक सयोग उत्पन्न न बाब से विचार स्वस्वरूपन विधे ज गुद्धपुण, सपूर्णपुण, अविनानीपुण, अत्यत आनद्दपुण, अंतररहित तना अनुभवमा आव छे सर्थ विभावपर्यायमा मात्र पोतान अध्यासयी अवयता यई छ तेथी नेवळ मोतानु भिन्नमम् ज छ, एम स्पष्ट-प्रत्यक्ष-अत्यव प्रत्यक्ष-अपरोक्ष तन अनुभव थाय छ विनाशी अधवा अ'य पदाधना संयोगम विषे तमे इप्टअनिष्ट्रपण प्राप्त बत नपी जाम, जरा, मरण रोगादि बाधारहित सपूर्ण माहा

छे जे जे पूरपोने ए छ पर सप्रमाण एवा परम पूरवना वचने आत्माना निरचय थयो छे त त पूरवी सव स्वरूपने पाम्मा छ, आंबि, ब्यापि लगामि तव समग्री रहित थया छे माय छे, अने भाविनाटमा पण तेम ज यरो जे सल्एरोए जम्म जरा मरणनो नादा नरवानाळो,

स्वयन्त्रमामं सहन अवस्थान पवानी उपन्या कहो। छे, ते ग्रपुरोगे तथ्यत मिलपी नामलार छे तेनी निष्कारण नरणान निष्प प्रत्ये निरदार स्तववामा पण आत्मस्वमाव प्राये छे, पूषा तव सत्युरण तेना चरणारविंद सवाय हृदयने विषे स्थापन रही।

चे छ पदमी सिद्ध छे एवं आत्मस्वरूप त जैना ववनने अगीकार क्यें सहज्ञमा प्राटे छे, जे आत्मस्वरूप प्राट्यामी सर्व काळ जीव समूण आनदने प्राप्त पर्दे निमय साथ छे ते वचनना क्नेतार एवा सत्यूचना गूणनी व्याच्या करवाने अग्रतिक छे केनके जेनी प्रत्यूचनार न वर्षे धन एवो परमात्माव त जाण कर्ष पण इच्छ्या विना मात्र निकारण करणातीक्वायी आप्यो, एम छ्वा पण जेणे अम्ब जीवने विषे आ मारो विषय छे, अथवा भिना बत्ता है मार पाने हे एम बना बोचू नयी, एवा जे मतुरुव तन अया भीतार परी परी ममस्वार है! । जे मतुरुवार सम्यूचन भीता निरुप्य करी है है भीत माब गियाना बन्यायन वर्षे बही है जे मैनिव प्राप्त पंचाची मतुरुद्धा आरंशनी पेटान विश्व वृक्ति गहे अपूर्व गुण बिटारीबर या अया बन्दार गटे अने सहते आरंगोय पान पम जाणीन जानित निस्माय बचु है, त भतिन अने त राजुरुवीय वरों करी विशास सम्बन्दर है!

भतिन अने त सन्यूरपोन करो करी विकास नमस्कार है! ।
यो बदी प्रतरक्ष कर्ममानाम केन्द्रकाननी लगिति
धई नभी चण जेना बचनना विचारपोने सन्तिगर वेचळ ज्ञान छे गम स्पर्ट जाण्यु छे प्रदारण वेचळज्ञान ध्यु छे विचाररणाम चेचळज्ञान चमु छ इन्त्राप्टरणाम वेचळज्ञान धमु छे, मुख्य नम्यान हुन्यों केनळ्ञान चि छे त वेचळज्ञान सन अप्यादाय सुन्तु प्रतट बरनार जेना मोभ सहस्र मात्रमा जीव पाण्या मोम्म धमा ते सन्द्रुपना उपस्रास्त धर्मोस्तर अनिय नमस्कार हो । नमस्वार हो । ।

मुंबई कागण, १९५०

(१) प्रत्यारम (सार्ट्रविकीटित वृत्त) ययारम प्रत्या रण मरवा, बोडे कर कामना,

१२९

प्रवारम प्रत्न राम भरता, बाह वर कामना, बोगु घमद मर्म मर्म हरता छे अयया वाम ना, मानु मान्य सुदोष घम धनना, जाडे वयु कामना, एमा तस्त्र विचार सस्त्र सुखदा, प्रेरी प्रमुकामना

> (२) (छप्पय)

नामिनदर नाथ विश्ववदन विज्ञानी
भवतनना पर, करण शहन सुसदानी
प्रथ पय आजत, स्वत हेन्क मण्यता,
स्वति अदिहत, ततहारान अपयता,
या मरणहरण ताम्यतरण, विश्वोदारा अप हरे,
हे म्हपननेव परमगपर, रायवद यदन करे,

230 () प्रभुप्रायना (दोहरा)

अबहुळ ज्योति स्वरूप तु, वेवळ ब्रुपानियान, प्रम पुनित तुत्र प्रेरजे भयभजन भगवान र निय निरंजन निष्य छो, गजन गज गुमान, अभियदन अभिवदना भयभजन भगवान २ धमधरण तारणवरण धरण घरण सामान

विध्नहरण पावनवरण भयमजन भगवान है मद्रभरण भीतिहरण सुधासरण घुमवान, मरेशहरण चिताचरण भयमजन भगवान ४ अविनानी अरिहत सु एक असड अमान, क्षजर क्षमर अगजाम तु, भयमजन भगवान ५ धानदी अपवर्गी सु अक्ट गति अनुमान. आशिष अनुकुळ आपजे भयमजन भगवान ६ निराकार निलॅप छो, निमळ नीतिनियान

निर्मोहक भारायणा भयभजन भगवान ७ सवराचर स्वयम् प्रमु सखद सोंपजे सान स्टिनाथ सर्वेश्वरा, भयभजन भगवान ८ सकट गोक सकळ हरण, नौतम नान निदान, इण्डा विश्व अचळ करी, सयभजन भगवान ९ आधि व्याधि उपाधिने हरो तत तोपान, करुणाळ करुणा करो भयभजन भगवान १० किंकरनी ककर मिन मुल मयकर भान, गवर ते स्नेहे हरो मयमजन भगवान ११ निक्त शिनुने आपशी, मिक्त मुक्तिनु दान, तज जक्ति जाहेर छे भयभजन भगवान १२ नीति प्रीति नम्रता, भरी भक्तिन भान. वाय प्रजाने वापशो, भयभजन भगवान १३ दया गाति औदायता. धर्म मर्म मनध्यान. सप जप वणक्प दे भयभजन भगवान १४ हर आळस एदीपणु, हर अघ ने अज्ञान, हर भ्रमणा भारत तणी, भयभजन भगवान १५

पन मन धन ने असन्, दे सुख सुधा समान, आ अवनीनु नर भलु मयभजन भगपान १६ विनय विनति राजनी, घरो कृपाधी ध्यान; मान्य करो महाराज ते, मयभजन मगदान १७ १३२ (४) (बगतविल्लावृत्त)

सरारमा मन अर वयम मोह पामे? वराग्यमा सट पड़पे गति एज आमे माया अहो गणी सटे दिल आप आवी 'आवाण-पूज चवी सध्यमुना वयावी

> (५) मुनिने प्रणाम (_{मनह}र छ्द)

पानित धार सह नीविषे नागर नह स्वाने सागर पान स्वानने निमान हो, गुढवृद्धि बहाचारी मुनवानी पूर्ण प्यारी सवनने हितनारी धर्मक ज्ञान हो रामद्वेपमे रहित परम पुनित नित्य

नुद्वचात्र श्रामारी भूगमारी सवनने दिएनारी धर्मने उद्यान ही रागद्वेपने रहित परम पुनित नित्य गुनते समित रित्त, सञ्जन समान हो, रायचद धैयपाल, धम्बाल क्रीपकाल, मुनि सुम आग सेर, प्रनाम लमान हो

(सार्द्रलविन्नीहित) माया मान मनीज मोह ममता, मिख्यान मोडी मुनि, घोरी यम बरल घ्यान धरधी, धारेल धैर्ये घुनी, छ स्तोप सुज्ञील सौम्य समवा ने पीयळे चहना, नीति राय दया क्षमामर मृति, कोटी कर बदना (६) काळ कोईने नहिं मुके (हरिगीत) मोवीतणी माळा गळामा पूल्यवती मल्यन्ती, हीरावणा शुभ हारची वह बठकावि शळक्ती, आनुषणीधी ओपता मास्या सरणाने जोईने, अने जागीए मन मानीए नव बाळ मुने कोईने १ मणिमय मुगट माथे भरीने वण कुडळ नालता, काचन कड़ा बरमा घरी बशीए बचारा न रासता, पळमा पढपा पथ्यीपति ए भान भूतळ खोईने, अन जाणीए मन मानीए नव बाळ मत्र कोइने २ देश क्षामळीमा मागळिक मुद्रा जहित माणिवययी, जे परम प्रेमे थे रता पाची कळा बारीकथी.

न्तिकर विना जेवी, दिननी नेनाब दीछे, दादी विना जेवी रीत दावरी गृहाय छे, प्रजापति विना जैवी प्रजा पुरतणा पेसी सरस विनाति जेवी वविता वहाय छे सहिल विद्वीन जेवी सरितानी घोमा अने भर्तार विहोन जवी मामिनी मदाय छै,

बदै रायवद बीर, सद्धर्मने धार्या विना, भारती महान संध, बन्दर्भी कळाय छै है चतरो चोपेधी चाही चितामणि जिस गणे, पहिलो प्रमाणे हो पारसमणि प्रमथी. कविश्रो व याणवारी बस्पतक वसे जेने

सूपानी सागर क्ये साथ गुभ क्षेमधी, बात्मना उद्घारने उमगयी अनुसरी जी, निमळ थवाने काले नमी नीति नेमयी, बने रायचन्द बीर एवु धमरूप जाणी, "धमवृत्ति घ्यान घरो, विलयो न वे'मधी 😮

धर्म विना प्रीत नहीं धर्म विना रीत नहीं, धम विना हित नही, क्ष्म जन कामनू,

वर्म विना टेक नही, घम विना नेक नही, धम विना ऐक्य नही, धर्म धाम रामन, थम बिना ब्याम नहीं, धर्म बिना नान नहीं. धर्म विना भान नहीं, जीय कौना कामने ? धर्मे विना तान नहीं, धर्मे विना सान नहीं.

घर्म विना गान नही, बचन समामनु घमें बिना धन धाम, धाय धळधाणी घारो, धम विना घरणीमा, धिक्तता घराम छे.

धम विना धीमतनी, घारणाओ धोखो घरे, धम विना धायु धर्य, धुझ थ धमाय छे, घर्म विना धराधर घुतारी, न घामधूमे, धम विना ध्यानी ध्यान दोग दगे धाय छे.

घारो घारा धवळ, सुधमनी धरघरता. घय । घय । घामे घामें घगेंथी घराय छे ६

(2) सबमान्य धम

(घोपाई) घमतत्त्व जो पूछमु मने तो सभळाव स्नेहे तने.

सवमाय गहने हितनार. १ भास्य भाषणमा भगवान. धर्मन बीजो दया समान, अभयदान साथे सतीय, धो प्राणीने, दळवा दोप २

275

मध्य कील में सचला दान दया हो में रह्या प्रमाण. दया नहीं तो ए नहिंगक. विनासर्य निरण नहि देख ३ पुष्पपासदी उया दुभाय, जिनवरनी स्या नहि आज्ञाय, सव जीवन इच्छो सुख

महावीरनी निना मह्य ४ सव दर्शने ए उपन्श.

ए एकाते नहीं विशेष सव प्रकार जिलती क्षीप दया दया निर्मेळ अविरोध! ५

ए भवतारक सुंन्र राह्, घरिये तरिये गरी जत्साह, षम सकळनु ए गुम मूळ, ए वण धर्म सदा प्रतिकृळ ६ वस्त्रस्या ए बोउसे ते जन पहोचे गारवत सुखे, शाविनाय मगवान प्रनिद्ध राजच्द्र बहणाए मिद्र ७ विस १९४० (8) भक्तिनी उपदेश (वोदव छ=) पुम शीतळतामय छाप रही, मनवाछित ज्या फळपक्ति बही, जिनमिन पही तहकन्प अही, मजीने भगवत भवत हहा १

136

निज आत्मस्वरूप मुना प्रगटे मनताप स्वाप तमाम गरे. श्रति निर्जरता वणनाम ग्रही मजीने भगवत भवत रही २ सममावी सदा परिणाम बने श्रद्ध सदक्षधोगति जागजी

दाम मगळ का परिपूण चहो, भाजीने भगवत भवत छहा है शभ माव वडे मन शुद्ध करो नवकार महापत्ने समरो, निह एहं समान सुमत्र पही,

नरशो क्षय नेवळ राग मधा धरशो सुभ शत्वस्वरूप यया. नृपच प्रपच अनत दहा.

भजीने भगवत भवत रही ५

विसं १९४

भजीने भगवत भवत रही ४

1 Y T (20) ब्रह्मचर्यं विषे सुभाषित

(बोहरा) नीरखीने नवयौवना, लेश न विपयनिदान गणे नाष्ठनी पुतळी, ते भगवान समान १ बा समळा ससारनी, रमणी नायकरूप, ए त्यागी त्याग्य बन्न नेवळ शोकस्वरूप २ एक विषयने जीतता जीत्यो सी ससार. नपति जीतता जीतिये दळ, पुर ने अधिकार ३ लेश मदिरापानथी छाने ज्यम अज्ञान ४

विषयरूप अक्रयी टळे ज्ञान ने घ्यान मुदर शियल सुरतर मन वाणी ने देह, जे नरनारी सेवसी, अनुपम पळ ले तेह ६ पात्र विना वस्तु न रहे पात्रे आरिमक शान, पात्र थवा सेवो सदा ब्रह्मचय मतिमान ७ विस १९४०

जे नव बाड विशुद्धधी, घरे नियळ सुखदाई, मव तेनो लव पछी रहे, तत्त्ववचन ए भाई ५



283 (१२) तृष्णानी विचित्रता

(मनहर छद) (एक गरीबनी वधती गयेली तब्जा) हती दीनताई त्यारे तानी पटेलाई अने. मळी पटेलाई त्यार ताकी छे गठाईने,

सापडी गेठाइ स्यार ताकी मत्रिताई अने. आवी मत्रिताई त्यार तानी नुपताईने, मळी नृपताई त्यारे साका देवताई अने,

दीठी दवताई त्यार ताकी शकराईने. थहो ! राजचद्र मानो माना शकराई मळी. वधै तुपनाई वाय जाय न मराईने बरोचली पड़ी दानी हाचातणी दाट वळ्यो. माली केशपटी विषे स्वेतता छवाई गई. सूचयु सामळवु, ने देखवु त माडी वाळ्य. सेम दात आवरी ते. खरी के खवाई गई. कळी केंड वानी, हाड गया, अगरग गयी, कटवानी आय जता लाकडी रेवाई गई.

277 श्ररे ! राजधद्र एम, युवानी हराई पण, मनयी न तीय रोड ममता मराई गई २ करोडोना करजना, शिर पर डना वागे, रोगयी स्थाई गय, शरीर सुकाईने,

परपति पण माथे पोडवाने धाकी रह्यो, पेट तणी बेठ पण शके न पुराईने, पित अने परणी ते. मचावे अनेक घघ. पत्र पत्री भासे खाउ साव द सनाईने. अरे ! राजचह लोग जीव झावा दावा करे. जजाळ छहाय नहीं सजी सपनाईने है

चई शीण नाडी अवाचक जेवो रह्यो पडी धीवन दीपक पाम्यी केवळ झलाईनै मो या विना बेस बाळ तारी चतुराईने ! अरे! राजचाद्र देखों दावी आगापान वेखी ?

छेल्ली इस पडची माळी माईए त्या एम भारुयु, हवे टाडी माटी याय तो ता ठीक भाईने हायने हलावी त्या को सीजी बुदद सुचव्य ए

जता गई नहीं डोशे ममता मराईने ! भ

१४५ (\$\$)

अमूल्य तत्वविचार

(हरिगीत छद) बहु पुण्यकेरा पुजयो शुभ देह मानवनो मळयो,

होंचे बरे! मवजननी आदो नहि एको टक्रमो, मुस प्राप्त करता मुख ठळे छ लेश ए लगे रही क्षण क्षण भयवर भावमरणे का अही राची रही? १ ल्ल्मी अने अधिकार धवता, शब मृते तो वहीं?

नु फुटुब के परिवारपी, वधवापणु ए नव ग्रही, बधवापणु ससारनु नारदेहने हारी जवी, एनो विचार नहीं श्रहोती । एक पळ तमने हवी ।।। २

निर्दोप सुख निर्दोष बानद ल्यो गमे त्याथी भले, ए दिव्य शक्तिमान जेपी जजीरेपी नीकळे, परवस्तुमा नहि मूसवो, एनी दया मुजने रही,

ए स्थागवा सिद्धात के परचान्तु ल ते सुन नही हुकोण छु? स्थापी थमो ? द्युस्य रूप छे मार्घ सह? कोना समये बळगणा छे ? राखु वे ए परहरू ?

146 एना विचार विवनपूर्वंक दाति भाव जो कर्या, तो सर्वं आदिमक् ज्ञाननां सिद्धाततस्य अनुभव्या

ते प्राप्त करवा बचन मीनु सत्य मेवळ मानवु ? निर्देश तरत अधन मानी 'तह 'नेण अनुभव्य'. रें । आत्म वारो।आत्म तारो । नीच्च एने ओळखी. सर्वोत्ममा समद्भि स्रो आ धचनने हृदय लखी ५ विस १९४० (28)

जिनेइवरनी बाणी (मनहर छद)

अनत भाव भेदधी भरछी मली. अनत अनत नय निधपे व्याह्यानी छे.

सकळ जगत हितकारिणी हारिणी मोह. तारिणी भवाधि मोशचारिणी प्रमाणी छे. सपमा आप्यानी जैने तमा राखवी ते अयदा. आपवाची निज मति मपाई में मानी छे.

बहो ! राजचन्द्र, बाळ स्थाल नधी पामता ए. जिनेश्वर सणी वाणी जाणी सेणे जाणी है

विस १९४०

(84) पूरामालिका मगल (चपञाति) वपोपघ्याने रविष्ट्य ए साधीने सोम रही सुहाय, महान ते मगळ पिक पाने आवे पछी त युधना प्रणामे १ निप्रय ज्ञाता गृह सिद्धिदाता, ना तो स्वय चुक प्रपूण स्वाता, त्रियोग त्या केवळ मद पामे, स्वरूप सिद्धे विचरी विरामे, (१६) अनित्य भावना (उपजाति) विद्युत ल्ह्मी प्रमुता पतग, आयुष्य ते तो जळना तरण, पुरवरी चाप अनग रग, शु राचाए त्या क्षणती प्रसम ।

अशरण भावना (उपजाति) सर्वेननो धम सुराण जाणी, आराध्य आराध्य प्रमाव आणी. अनाच एकात सनाच याशे, एना विना कोई न बाह्य स्हारी

(सपजानि) धरीरमा ज्यापि प्रत्यक्ष चाय, ते कोई अन्ये रुई ना दावाय. ए भीगवे एक स्वआत्म पोते. एकत्व एथी नयसूत्र गोते (गाद्रलविकीडित)

एकत्व भावना

राणा सर्वे मळी भूच दन घसी ने चचवामा हती बुझ्यो स्या ककळाट ककणतणो श्रीती निम भूपति, सवादे पण इद्रथी दढ रह्यो एकत्व साचु बयु

एवा ए मिथिलेशन् चरित आ, सपूण अने चयु

अन्यत्व भावना

(गार्नुलिक्कीलित) ना मारा नुत्र क्लेडिंग स्वतन ना पुत्र के झात ना, ना मारा मृत क्लेडिंग स्वतन ना गात्र के झात ना, ना मारा का नाम योवन करा, ए मोह अज्ञालका, र! गंजीब विचार एम ज यहा ज मलदा सावना

(गार्ड्लिक्किडित) देखी आगळी आप एक अडबी, वैराय्यवेगे गया, छाडी राजसमाजन मरतजी भवन्यभानी यया, जोषु जिल्ल पतिल ए ज चरित पाम्य अही पूजता, गानीना मन तेड रजन करो, वैराग्य भाष यथा

अञ्चि भावना

(गीतिवती)

लाण मूत्र ने मळनी रोग जरानु निवासनुधाम बाया एवी गणीने, मान त्यजीने कर सायव आम

१५० निवृत्ति योध

(नाराच छद) अनस सौस्य नाम दुःच स्था रही न मित्रता !

अनत तुल्य नाम दुश त्या रहा न स्वरता । अनंत तुल नाम सौल्य प्रेम त्या विचित्रता । उपाड न्याय-नेत्र ने निहाळ ते । निहाळ तु, निवृत्ति सोझमेन पारी ते प्रवृत्ति बाळतु

दोहरा

ज्ञान, च्यान वैशायमय उत्तम बहा विचार, ए भावे गुम भावना, ते उत्तरे भव पार

₹

कानी ने अज्ञानी जन सुल दु'ल रहित न कोय, कानी मेंदे चैगपी अज्ञानी मेंदे रोग

शना वद धम्या अज्ञाना बद रा

मत्र तंत्र बौषय नहीं, जेमी पाप पराय बीतराग बाणी विना, अवर न कोर्न छपाय

गरण तेना वे महाा, राग इप अणहेनु वचनामृत वीतरागना परम शातरस मूळ, बौपन जी मनरोगना, कायरने प्रतिकृत्र

"पुषको सहेलो है अवेली उदासोनता" (10)

वच्यात्मनी जननी ते उदासीनता ल्यु वयची अद्भुत ययो तत्त्वज्ञानमो बोघ,

ए ज सूचन एम के, गति आगति का शीप ? १ जे सस्नार पत्नो घर, अति अम्यासे काय, विना परिश्रम त चयो भवणका सी त्याय ? २ जम जैम मिंत अल्पता अन मोह जयोत, वेम तेम मवसकता, अपात्र अतर ज्योत ३ करी बल्पना दुढ बर, नाना नास्ति विचार पण अस्ति ते सुचय ए ज सरो नियटि ४

सामव बण भव छेनही ए ज तर्व अनुकूळ, विचारता पामी गया झात्मघमनु मू*र* ५ वि स १९४५

(14)

भिन भिन मत देखीए भेद दृष्टिनो एह एक तरवना मुळमो, ब्याप्या मानो तेह १ ऐह तत्वहप वृगनु आत्मपम छे मूळ, स्वमावनो सिद्धि वरे धम से ज अनुकुळ २

प्रयम आत्मसिद्धि पदा क्रोए ज्ञान विचार, अनुमयी गुरने सेवीए बुधकतनो निर्धार है क्षण क्षण जे अध्यस्ता जने विचादिक मोह, ते जेनामाची यया से अनुभवी गुरु जोय ४

बाह्य तम अन्यतर ग्रथ प्रांध नहिं होय परम पुरुष तमे वही, सरळ दिल्ल्यी जीय ५ कि.स. १९४५

```
843
                 (28)
               ( चोपाई )
     ' लोक पुरुपसस्याने कह्यो
        एनी भेद तमें कई लक्षी?
       एन बारण समज्या काई
       के समजाव्यानी चतुराई ? १
       शरीर परथी ए उप<sup>3</sup>ग,
      मान दर्शने वे उट्या,
     जैम जणावा मुणीए तम
     का तो ल्झा दईए क्षम २
  २ शु करवाया पोल मुसी ?
    शु करवाथी पात दुःसा ?
    पोते तु ? नयाची छे आप ?
   एनो मागो शीध्र जवाप १
वै ज्या भवा स्या गण सताप
  भान तहा "ाना नहिं स्थाप,
  प्रमुमक्ति स्या उत्तम ज्ञान,
 प्रमु मळनवा गुरु भगवान १
```

हे ओव ! नया इन्छत हुने ? ह इक्छा दु अपून, जब इच्छावा मादा तब मिटे डागार्ट मूल एती बहांसे भित मई, आप आप है नाहि, आपनामु जब मूल गये अवद कहाँसे लाई आप गाए शोपर्यं, आप आप मिल जाय, आप मिलन नय बापको,

हानो १~१२

(२३) ॐ बीजा सामन बहु कर्यां करी स्ट्यना आप अयवा अखद्गुरू पकी ऊख्टो बच्यो उताप प्रव पथ्यना उन्यापी, मळमी खद्गुरू योग,

वचनसुधा श्रवण जता, धमु हृदम गतनीम निरुचय एषी अश्वियो टळवे अही उताप निरुचय एषी अश्वियो टळवे अही उताप निरुप वर्मो सरसम में, एक रूपमी आप भोरबी आसी, १९४६

149 (RY) क्ष सन (दोहरा

बिना नयन पाव नहीं, बिना नयनकी बात, सेव सद्गुरुके घरन सो पावे साहाात् १ बूबी बहुत जो प्यासको, ह बूबनकी रीत, पाव निहि गुरुगम बिना पही अनादि स्थित २

एही नहिं है बल्पना एही नही विमग, कई नर पचमकाळमें देखी वस्तु अमग ३ नहिं हे तु जपदेशहु प्रथम लेहि जपदेश, सबसें स्थारा अगम ह को ज्ञानीका देश ४

बप, तम और व्रतादि सब, तहा लगी भ्रमहप, षहा लगी नहिं सतकी, पाई इतपा अनूप ५ पायाकी ए बात है, निज छदनको छोड, पिछे लाग सत्पुष्पके, तो सब बधन तोड ६

मुंबई, अपाड, १९४७

240 (२५) (दोहरा) है प्रमु, ह प्रमु, सु बहु, धीनानाथ दयाळ, हती दीप अनंतनं भाजन ए करणाळ १ पुढ भाव मुजमा नधी, नदी सर्व तुज रूप; नमी लपुता के दीनता, गुक्छ परमस्वरूप? २ नयी आजा गुरदेवनी अपळ गरी उरमांही, आप राणो विश्वास दुढ न परमान्द नाही रै जोग नयी सत्मगनी नयी सरावा जोग, केवळ अर्पणता नयी नयी आश्रय अनुयोग ४ 'हपामर शुक्ती भक्ते? एवो नयी विवेक. चरण दारण धीरज नथी मरण गुधीनी छेक ५ अधित्य तुज भाहातम्यनौ नधी प्रपृत्तित भाव. क्षण न एके स्नहनो न मळे परम प्रमाद ६ अषळरूप आसक्ति नहि नही विरहनो ताप; क्या अलम तुज प्रेमनी नहिं तनो परिताप ७ मिल्लामा प्रवेग नहि नही मजन दढ भान.

समज नही निजधर्मनी, नहि पुम देशे स्थान ८

155 काळदोप कळियी यमो, नहि मयांना घम, तीय नहीं व्याष्ट्र दता, जुओ प्रमु मूज कर्म ९ धेवाने प्रतिकृळ जे, त बधन नधी त्याग, देहिंडिय माने नहीं, कर बाह्य पर राग १० तुज वियोग स्फूरतो नयी, बचन नयन यम नाही,

निह उदास अनमक्तमी सम गृहादिक माही ११ अहमावयी रहित नहिं स्वघमं सचय नाही, नधी निवृत्ति निमळपणे अय धमनी बाई १२ एम अनत प्रकारयो साधन रहित हुय, नही एव सद्गुण पण मुख बताबु गुम ? १३ वैवळ वरुणामूर्ति छो दीनवयु दीननाथ, पापा परम बनाय छु यहाँ प्रमुजी हाथ १४

अनत माळथी आयडयो विना भान भगवान, सेव्या नहिं गुरु सतने मूक्यू नहिं विभिमान १५ सत चरण आश्रय विना, सापन क्याँ अनक, पार न तैयी पामियों कम्यों न अद्य निवन १६ सह सायन बयन थया रहाो न कोई उपाय, सत्तापन समज्यो नहीं, त्या वधन शु जाय ? १७

क्षप्रमाधम अधिको पतित, सक्ल जगतमा हुय, ए निरुचय आज्या विनाः साधन करते शय ? १९

पडी पडी सुज पन्पवजे भरी भरी मागु ए ख. सदगुर सत स्वरूप सूज, ए दृहता वरी दे अ २० राळज मा सूद ८, १९४७ (38) 🗱 सत् (बोटक छ्रा) यम नियम सजम आप कियो पनि त्याग विराग अयाग रूह्यो. धनवास लियो मुख भौत रहाो दढ आसन पद्म लगाय दियो १

> मन पौन निरोध स्वबीध नियो, हडजोग प्रयोग स सार भयो.

भप भेद जपे तपत्यों हि तपे, उरसेंहि उदासी लही सवप २ सब झास्त्रमके नय धारी हिये. मत महन खड़न भेद लिये. वह साधन बार अनत कियो तदपि कछु हाय हजुन पर्यो ३ अब भगीं न विचारत हमनसें. कछ और रहा उन साधनसें?

दिन सद्गुरु कोय न भेद लहे, मख आगल ह वह बात कहे? ४ करना हम पावत हे तुमकी, यह बात पही सुगुर गमकी,

पल्में प्रगटे मुख आगल्सें, जब सदगुरुचन सुप्रेम बसें ५ त्तनसें, मनमें घनसें, सबसें, गुरुदेवती आन स्यआत्म बर्से.

चब कारज सिद्ध बने अपनी, रस अमुत पाविह प्रेम घनो ६

बह सरव सुधा दरखावहिंगे. चत्ररागुल ह दुगमें मिल्हे रसदव निरजन को पिवही. गहि जोग जुगोजुग सोजीवही ७

275

परप्रमद्रवाह बढ़े प्रमसे. सब बागमभद सुदर बसें, वह वदएको बीज ग्यानि कहे. निजको अनुमी बतलाई लिये ८

> राळन, मा सुद ८, १९४७ (20)

(दाहरा)

(१) जह भावे जह परिणमे चेतन घेतन भाव, नोई नोई पलटे नही, छोडी आप स्वभाव १ जह से जह त्रण बाळमा चेतन चेतन सम,

प्रगट अनुमवस्य छे. सनम तेमा केम ? २

औ जह छे त्रण काळमा, चेतन चेतन होय.

१६५ बंध मोदा संयोगथी, ज्या लग आत्म अभान, पण महि त्याग स्वभावना भाखे जिन भगवान वर्ते वध प्रसगमा, ते निजपद अज्ञान, पण जडता महि आत्मने, ए सिद्धात प्रमाण ग्रहे अरूपी रूपीने, ए अचरजनी बात, जीव बघन जाणे नही, वेचो जिन सिद्धात

प्रथम देहदिष्ट हती तथी मास्यो देह, हुवे दिष्ट यई आत्ममा, गयो देहयी नेह जह चेतन सयोग आ, खाण अनादि अनत,

कोई न क्त्रीं तहनो, भाखे जिन भगवत मूळ द्रव्य उत्पन्न नहि, नही नाश पण सेम, अनुभवयी से सिद्ध छे. माखे जिनवर एम

होय सेहनो नाश नहि, नही तेह नहि होय. एक समय ते सी समय, भेद अवस्था जीय १०

.२) परम पुरुष प्रभु सद्गुरु, परम ज्ञान सुखबाम, जेण आप्य भान निज, तेने सदा प्रणाम १

राळज, मा सद ८. १९४७

225

जिनवर कड़े छे ज्ञान सेने, सब भव्यो सामळी जो होय पूर भणल नव पण जीवने जाण्यो मही, वो सर्व से अज्ञान भारुप, सानी छे आगम अही ए पूर्व सब कहा। विगेषे, जीव करवा निमळी

जिनवर कहे छे नान तेन, सर्व भव्यो सामळी १

(26) (हरिगीत)

नहि प्रथमाद्दी ज्ञान भारत् ज्ञान नहि कविचातुरी, नहि मंत्र तथो भाग बास्या, जान शहि भाषा ठरी. नृद्धि अन्य स्थाने चान भारम् ज्ञान ज्ञानीमा कळी जिनवर वहे छ ज्ञान तेने, सब मध्यो सामळी २ आ जीव ने आ देह एवं। भेद जो भाम्यी नही, पचलाण बीधा त्यां सधी, मोलाई ते भास्यां नही. ए पाचमे अमे महाो, उपनेश केवळ निमळो, जिनवर कहे छ ज्ञान सेने सब भव्यो साभळा ३

तो भान तेने भाषिषु जो सम्मति आदि स्वळो, जिनवर कहे छे नान तेने, सब भायो सामळो ५ आठ समिति जाणीए जा, ज्ञानीना परमायथी, ता नान भास्य तेवने अनुसार ते मोदाायथी.

(२९) अपूर्व अवसर एको स्यारे आवने ? क्यार गईन काह्यांतर निग्रम जो? सर्व सथपन् यमन तीवण छेदीने विचरणुक्त महत्पुरपने पय जो ? अप २ सर्वं भावयी औदासीन्य युक्ति करी मात्र देह से सयमहेल हीय जो, अय कारणे अयक्षा कल्पे नहीं, देहेपण विचित् मूर्छानव जोयजो अपूर्वं०

116

६ दर्भनमोह ब्यतीत चई ऊपज्यो बोध जे, देह भिन्न बेवल चत यन ज्ञान जो, तेथी प्रधीण चारित्रमोह विक्रीकिये. वर्ते एवं धुद्धस्यरूपनु ध्यान जा अपूर्व० बात्मस्यिरता त्रण सन्तिष्त योगनी

मस्यपणे सी वर्ते देहपयत जो. धोर परीपह के उपसर्ग भन्ने करी.

आची शके नहीं ते स्थिरतानो अत जो अपूर्व

१६९ हेतुची योगप्रवर्तना, स्यरूपल्से जिनआज्ञा आधीन जो, ते पण क्षण भण घरती जाती स्थितिमा,

वते याये निजयबस्पमा छीन जो अपूर्वे॰ ६ पच विषयमा रागद्वेष विर_ितना, पच प्रमादेन मळे मननो सोम जो, हूव्य क्षेत्र ने काठ, भाव प्रतिवध वण, विचरत् उदयापीन वण बीतलोम जो अपूर्व॰ क्रीय प्रत्ये तो वर्ते को घस्वमावता,

मान प्रत्ये तो दीनपणानु मान जी, माया प्रत्ये माया सान्तामावती, होम प्रत्ये नहीं लोग समान जो अपूर्व ८ बहु उपसर्गक्ता प्रत्ये पण क्रोध मही, वरे पत्री तथापि न मळे मान जो,

अवत्योवन आदि परम प्रसिद्ध जी

देह जाय पण माया चाय न रोममा, शोभ नहीं छो प्रवछ सिद्धिनिदान जो अपूर्व o 🐧 नम्नसाव, मृहमाव सह अस्नानता,

१७० वेना रोम, नख वे अग म्हगार मही, क्रिक्टमाव स्थममम निष्ठम सिद्ध जो अपूर्वक १० सत्र मित्र प्रत्ये वर्ते समर्थीनता

मान अमाने वर्षे से ज स्वमाव जो जीवित के सरण नहीं जूनाधिरवा, मव मारे पण युद्ध वर्षे सम्माव जो अपूर्व० ११ एकाची विचरतों बळी स्मानमा, करी व्यवसा बाप सिंह समीप जो,

बहोल आसन ने मनमा नहीं शोमता परम मित्रनों जाज पाम्या मीग भी अपूत्रक रैर घोर सपस्पर्यामा पण मनने ताज नहा सरस अन्ते नहा मनने प्रसप्तभाव भी, रजनण के रिद्धि वैमानित वयनी.

सरस अने नहीं मनने प्रमानाय थी,
रजनण के रिद्धि वैमानिन स्वनी,
सर्वे मार्चा पुर्वे एक स्वभाव जो अपूर्वं
रेडे एम पराजय नरीन चारितमाहनी
बावु स्वा ज्या करण अपूर्व मान को
श्रेणी शपतायी करीने आस्दता
अन्य विस्त विदिध्य राद्यानाय जो अपूर्वं

१४ मोह स्वयमूरमण समुद्र वरी करी, स्थिति स्याज्या सीणमोह गुणस्थान जो, वत समय स्या पूणस्थरूप बीतरान धर्य, प्रगटाचु निज वैवलज्ञान निधान जो अपूष्र

808

१५ चार वम प्रमणतो ते व्यवच्छेर ज्या, भवना बीजवणी बाल्यिक नारा जी, सब भाव पाता इच्टा सह पृद्धता, हुण्हरण प्रभु वीय अनत प्रवाश जो अपूर्वेण १६ बेरमीयादि चार कमें बर्वे जहाँ, बळी पीरपीवत आकृति मात्र जी.

ते देशपुर आधीन जेनी स्थिति छैं जामुप पूर्णे, मिट्यो देहिक पात्र जो अपूषक १७ मन बचन काया ने कर्मनी बगणा, छूटे जहा सक्छ पुरान्य सबस जी, एस् अयोगी गुलस्थानक स्था बर्तेतु महामाप्य सल्दासक पूर्णे अवस जो अपूर्ष

एवं अयोगी गुणस्थानक त्या वर्ततु महामाय्य सुलदायक पूर्ण अववा जो अपूर्यः १८ एक परमाणुमात्रनी मळे न स्पन्ता, पूर्ण करक रहित अडोल स्वरूप जो, गुद्ध तिरुजन चतायमूर्ति अनन्यमय, अगुरुलपु अमूस सहअपन्रस्प जो अपूर्वः

१९ प्रवप्रयोगादि कारणना योगयी कथ्वगमन गिद्धालय प्राप्त सुस्यित जो.

सादि अनत अनत समाधिसूलमा अनत दर्गन गान अनत सहित जो अपूर्व २० जे पद श्री सर्वेण दीठ ज्ञानमां,

रही "स्या नहीं पण ते श्री भगवान जी सेह स्वरूपने अप वाणी स सुवह⁹ अनुभवगोचर मात्र रह्य से ज्ञान जो अपूर०

२१ एह परमपद प्राप्तिनु क्यु ध्यान में गजा बगर ने हाल मनोरयरूप छो. तीयण निन्वय राजवद्र मनन रहाो,

प्रभुआपाए बाश् त ज स्वरूप जो अपर्वं० ववाणिया. १९५३

(30) मुळ मारग सामळी जिननो र. करी वित्त अलड स मख, मळ०

₹0\$

नी य पुजादिनी जी कामना रे, नो'य व्हाल अतर मवद स मुळ० १ करी जोजो वचननी सुल्ना रे

जोजो शोधीने जिनसिद्धात मुळ० मात्र वहेव परमारयहेत्र्यी रे, बोई पामे मुमुधु वात मुळ० २

ज्ञान, दर्शन, चारित्रनी शद्धता रे एकपणे अने अविरुद्ध, मुळ०

एम कहा सिद्धाते बुध मुळ० ३

जिनमारग ते परमाथधी रै.

लिंग अने भदो जे बतना रे.

इ.य देश काळादि मेद, मुळ०

पण नानादिनी जे शुद्धता रे, ते तो अणे माळे अभेद मुळ० हवे ज्ञान दलतादि राज्नो रे. सदीव सूणो परमाथ, मूळ॰ तेने जोता विचारी विशेषधी रे. समजादी उत्तम आत्माय मूळ० ५ छे देहारियी भिन्न जातमा र,

108

एम जाणे सद्गुरु उपदेनचीर, कहा नान सनुनाम सास मूळ० ६ जे नाने करीने जाणिय रे, तनी वर्ते छे शुद्ध प्रतीत मूळ॰ कहा भगवंते दशन सहने रे,

जपयोगी सदा अविनाश, मुळ°

जेनु बीजु नाम समकित मूळ० ७ जेम आवी प्रतीति जीवनी रे जाच्यो सर्वेंची भिन्न असग, मृळ०

ज्यारे वर्ते हे बारमारूप, मूळ०

तेवो स्थिर स्वमाव ते ऊपजे रे, नाम चारित्र से अपलिंग मूळ० ८ ते वणे अभेद परिणामधी र,

तेह मारग जिननी पानियो रे. रिवा पाम्यो ते निजस्बरप मळ० ९ एवा मूळ ज्ञानाति पापवा रे, अन जत्रा अनादि वध, मूळ० उपदेग मद्गुरुना पामवा रे, टाळी स्वच्छद ने प्रतिवध मुळ० १० एम दव जिनंदे भाखियु रे, मोगमाग्गन् गुद्ध स्वरूप मूळः भव्य जनोना हितने कारणे रे. सक्षेप वहा स्वरूप मूळ० ११

१७५

आणव, आसो सुद १, १९५२ (38)

(गीति)

पद परमपद बोध्यो जेह प्रमाणे परम बीतरागे,

ते अनुसरी बहीय प्रणमीने ते प्रमु मक्ति रागे १

१७६ मुळ परमपद कारण, सम्यक दशन ज्ञान घरण पूर्ण, प्रणम एक स्वभावे. शुद्ध समाधि त्यां परिपूर्ण २ जे चेतन जह भावो अवलोक्या छे मनींद्र सर्वेने. तेवी अतर आस्पा, प्रगटने दणन कहा, छे छल्वते १ सम्यक प्रमाण पुतक. से ते माबो ज्ञान विषे भासे, सम्बग्जान यहा ते सगय विभ्रम मोह त्यां नास्ये ४ विषयारम निवृत्ति. राग-देपनी अभाव ज्यां याय,

सहित सम्यक्दशन,

श्रवचरण त्या समाधि सद्भाय ५ त्रणे अभिन स्वभावे. परिणमी आत्मस्वरूप ज्यो चाय.

र ७७ पूर्ण परमपद प्राप्ति. निश्चयधी स्या अन य सुन्दाय ६ जीव, अजीव पटार्थी, पण्य, पाप, आसव तथा वध, सवर, निजरा, मोक्ष, तत्व यद्या नव पदाथ सबघ ७ जीव, अजीव विषे ते. नवे तस्वनी समावेश थाय. बस्तु विचार विरोधे भिन्न प्रवा या महान मुनिराय ८

ववाणिया, कार्तिक, १९५३

(32) घय र दिवस का वही.

आगी रे शांति अपूर्व रे, दश वर्षे र भारा उलसी. मट्यो सदयकमनी गव रे, ध य० १ ओगणीससें ने एकत्रीसे.

भागो अपर्वे अनुसार रे.

स्रोगणीसर्से ने बेतारीसे अद्भुत वराग्य घार र घन्य०२ ओगणीयसँ ने सहवालीसे समक्ति शुद्ध प्रकाश्यु रे, श्रुत अनुभव वषती दशा, निज स्वरूप अवभास्य र धन्य० ३ त्या क्षाब्यो र छदय कारमो,

200

परिव्रह काय प्रपंच र. जेम जेम ते हडसलीए, तेम बधेन घटे एक रच रे. धन्य॰ ४ वधतु एम ज चालिय हवे दीसे कीण नाई रे कमे करीन रे ते जभी,

यथाहेतु जे चित्तनो.

एम भासे मनमाही र धाय०५

सत्य धमनो उद्घार रे. थरो अवस्य आ देहची.

एम थयो निरमार रे घन्य०६

१७९ भावी अपूर्व वृत्ति अहो, अप्रमत्त योग रे, ल्गमग मूमिना, देह वियोग रे घय० ७ कर्मतो भोग छे. भोगवनी क्षवशेष तेची ^{हेह एक ज धारीने}, स्वदेश है. धय० ८ हा नो १-वर जाग्र स्वरूप (\$\$) जड ने चतन्य ब ने द्रव्यनो स्वमाव मिल, मुप्रतीवपणे बन्ते जेने समजाय छै, स्वरूप चेतन निज जह छे सबध मात्र, अथवा ते शेम पण परद्रव्यमाय छे, एवो अनुमवनी प्रकाश उल्लासित धर्मो, जहमी उदासी तेने आत्मवृति बाय छे, कायानी विसारी माया, स्वरूपे

निर्पत्यनो प्य भवल

\$ 1.0 देह जीव एक्ष्पे मासे छे बजान वडे, क्रियानी प्रवृत्ति पण तेथी तेम शाय छे जीवनी उत्पत्ति अने रोग, शोब, दु स, मृत्यु,

देहनो स्वमाव जीव पदमा जगाय छे. एवो जे जनादि एक्छपनो मिच्यात्वमात. शानीना बचन वहें दर पई जाय है.

भासे जह चतायनो प्रगट स्वमाव भिन्म ब ने द्रव्य निज निज रूपे स्थित धारा छे

म॰ का॰ वद ११ मगळ, १९५६ (38)

सद्गुहना उपदेशयी, समजे जिनन रूप तो से पामे निजद^{मा} जिन छे आत्मस्यरूप

पाम्या शद स्वभावने, छे जिन तेथी पुज्य. समजो जिनस्बभाव ता, आत्मभाननो गुज्य २

स्वरूपन्चित इच्छारहित विचर पुरप्रयोग.

अपूर बाणी परमध्त सदगुर लक्षण योज्य ३ नडियाद, आसी बद २. १९५२

161 (३५) స్థ

थी जिन परमात्मने नम

 इच्छे छे जे जोगी जन, अनत सुखस्यरप, मूळ गुद्ध से आ मपद, संयागी जिनस्वरूप १ आत्मस्वभाव अगम्य ते अवलवन आधार,

जिनपदची दर्गावियो तह स्वम्य प्रकार जिनपद निजपद एवता. भेदमाव नहि काई, रुख बवाने तेहनो नह्या नास्त्र सुखदाई

जिन प्रवचन दुगम्यता थाके अति मतिमान, जवल्बन थी मह्गुरु सुगम अने सुखवाण वपासना जिनचरणनी अतिगय भक्तिसहित.

मुनिजन सगित रित अनि सयम योग घटित

पूर्व चौदनी लक्षित्, उदाहरण पण

गुणप्रमोद अतिगय रह, रहे अतर्मुख माग, , प्राप्ति थी सदगुरु वह जिन दशन अनुयोग ' ६ प्रवचा समृद्र विदुषा, ऊलटी आवे एम,

परिणामनी वियमता सेने योग अयोग ८ मद विषय में सरळता सह आजा सुविचार, बरुणा बीमळतादि गुण, प्रथम समिका घार

123 विषय विकार सहित जे, रह्या मतिना योग,

रोक्या शम्मारिक विषय सयम साधन राग. जगत इच्ट नहि बात्मधी मध्य पात्र महाभाग्य १० नहि सच्या जीव्यातणी मरण योग नहि सोम, महापात्र से मार्गना परम योग जितलोम ११

(२) आध्ये बहु समदेशमां, छाया जाय समाई आब्ये तेम स्वभावमा मन स्वरूप पण जाई ऊपजे मोह विकत्पधी, समस्त आ ससार,

अतमुख अवलोकता, विलय यता नहि वार २

सुसधाम अनंत सुसत चही, दिन रात्र रहे चदुष्यान मही

परशान्ति अनत सुघामय जे

प्रणम पन से बर से अप से १

राजकोट, धैत सूद ९ १९५७

१८३ (३६) ॐ **आस्मसिद्धि** जे स्वच्य समज्या विना पाम्यो दु स अनत,

जं स्वरूप समग्रा । वना निर्मा स्वर्ग स्वर्ग सम्बन्ध ते वद नम्, श्री सद्गुर भगवत १ वर्तमान आ काळमा मोक्षमार्ग बहु छोप, विवादवा आत्मार्थीन, भास्त्री अत्र कमोप्य २

कोई क्रियाजट वर्ष रह्मा गुण्नातमा कोई माने भारत मोमनो करणा क्रपले जोई बाह्य क्रियामा राजता, अतर्भद न नाई शानमाम नियेचन, तेह क्रियाजट जाई ४ क्रानमाम नियेचन, तोह क्रियाजट जाई ४

बा मोश छे बल्लना, मासे वाणीमाही, बर्च मोश्र छे बल्लना, मासे वाणीमाही, बर्च मोश्रमेश्वामा, पुम्लमानी ते आही वेराम्यादि सफळ दो, जो सह आतमझान, रीम ज आतमझाननी, प्रातिकाण निवान स्याप विराग न चित्ता, बास न दोने झान, ' बर्दले स्याप विरागमा, तो मुळे निजमान अपूर्व वाणी परमध्त सद्गुर रूपण योग्य १० प्रत्यक्ष सद्गुरु सम नहीं परीण जिन उपनार

एको लग थया विना ऊगे न आत्मविचार ११

समाया थण जपकार हो ? समाये जिनस्वरूप १२ बात्मानि अस्तित्वना जेह निरूपक शास्त्र

सद्गुदना उपनेन वण, समजाय न जिनरूप प्रत्यम सद्गुरु सोग नहि स्या आघार सुपात्र १३

166 ज्यां ज्या जे जे योग्य छे, सहा समजब् सह,

पामे ते परमाधन निजपदनो छे छक्ष ९ शास्त्रमान समर्थनिता बिचर सदयप्रयोग

अथवा सत्पृष्ए कह्या जे अवगाहन काज त ते नित्य विचारवा करी मतांतर त्याज १४ रोके जीव स्वच्छद तो. पाम अवन्य मोना

पाम्या एम अनत छे, भारुपु जिन निर्दोप १५

प्रत्यक्ष सदगुर योगधी, स्वच्छन्त रोकाय, अप उपाय वर्मा बकी, प्राये बमणी बाय १६

224 स्वच्छद मत आग्रह तजी वर्ते सद्गुरलक्ष,

समिवित सेने भाखिया, कारण गणी प्रत्यक्षा १७ मानादिक दात्रु महा निजछदे न मराय जाता मद्गुर गरणमा, अल्प प्रयासे जाय १८ जै सदगर उपनेशधी पाम्यो केवळजान, गुरु रह्या छन्नस्य पण विनय करे भगवान १९ एवी माग विनय तणी भारूयो श्री बीतराग मुळ हेलु ए मार्गनी समजे कोई सुभाग्य २०

असदगुर ए विनयनो लाभ लहेजो वाई. महामीहनीय कर्मथी युडे भवजळ माही २१ होथ ममल जीव ते समजे एह विचार. होय मतार्थी जीव से, अवळो ले निर्घार २२ होय मतार्थी तहने, याय न आतमलग तेह मतार्थी लक्षणो, अही कह्या निपक्ष २३

भतार्थी-लक्षण

जे जिनदेह प्रमाण ने, समक्सरणादि दिवि, वणन समने जिनन दोनी रहे निज बृद्धि दे प्रस्त प्रमान स्वापन स्य

क्षपता निष्यस मय पहें नाम धान्दनी माय कोने सदक्षणकूरने छापन रहित बाद २९ मानदसा पाने नहीं साधनदरा न बाई, पामे तेनो साम जे स बुद्ध मतनाही ३० पूपम जीव मताबाती, निजमानादि काज

ए पण जीव मतापमां, निजमानारि काज पाने निह्न परमार्थने अन् अधिकारीमा ज ३१ निह्न क्याम उपनातना, निह्न अत स्तिप्त, सरक्रमणु न मध्यस्थता, ए मतार्थे दुर्मान्य ३२ स्थाण काम सर्वार्थाना, सतार्थे जाव काज,

हवे वहं आत्मार्थीना, आत्म-अय सुखसाज ३३

120

आत्मनाम त्या मुनिपणु ते साचा गुरु होय, बाकी कुळपुर कल्पना, आत्मार्थी नहि जीय ३४ प्रत्यन सद्गृह प्राप्तिना, गण परम उपकार, त्रणे योग एकरवयी, वर्षे आनाधार ३५ एक होय त्रण काळमा परमारथनो पथ प्रेरे ते परमायने, ते व्यवहार समत ३६ एम विचारी अतर, शीधे सद्युरु योग, वाम एक आत्मार्थनु, बीजी नहि मनरोग ३७ वयायनी चपपातवा मात्र मोग अभिरूप भवे खेद, प्राणीदवा त्या आत्माथ निवास ३८ दशान एवी ज्या मुधी जीव रुहे नहि जीग मोलमार्ग पामे नही, मटे न अंतर रोग ३९ आवे ज्या एवी दशा, मदगुरुवीय सहाय. ते बीधे सुविचारणा, श्र्या प्रगटे सुसदाय ४० ज्यो प्रगटे सुविचारणा, स्यां प्रगटे नित्र ज्ञान.

जे नाने शय

गुरुशिष्य मवादयी भाष्ट्र घटपद बाही ४२ घटपदनामकथन

बात्मा छे' 'ते नित्य छ 'छे क्त्ती निजकर्म. 'छे भोता बली मीय छे मीय उपाय सुधर्म ' ४३ चटरयानक संधीपमा पददर्शन पण सह. समजावा परमाथन, वहा। शानीए एह ४४

(१) शका-शिष्य उदाच नधी दिप्टमा सावतो नधी जणात रूप

बीजो पण अनुभव नहीं तेथी न जीवस्वरूप ४५ अयवा देह ज आतमा, अधवा इदिय प्राण, निथ्या जुदो मानवो, नही जुदु अँघाण ४६ बळी जो बारमा होय सी. जणाय से नहि क्म ? जणाय जो त होय हो, घट पट आदि जम ४७

माटे छे नहि आतमा मिच्या मोक्ष उपाय, ए अतर शका तणी, समजावी सदुपाय ४८ मास्यो देहाच्यासयी, आत्मा दह समान, यणत बने भिन छे प्रगट रूपणे मान ४९ मास्यो देहाच्यासयी, आत्मा दह समान,

पण से बन्ने भिन छ, जेम असि ने म्यान ५० जे इप्टा छे दृष्टिनो, जे लागे छे रूप, अबाप्य अनुभव जे रहे, ते छे जीवस्वरूम ५१

अवाष्य अनुमय जे ५६, घ छ आयाय छे इदिय प्रत्येगने, निज निज विषयनुं ज्ञान, पाच इदीना विषयनु पण झारमाने मान ५२ देह न जाणे तेहने, जाणे न इदी, प्राण, आरमानी सत्ता बढे, तेह प्रत्यें जाण ५३

आत्मानी सत्ता बहे, तेह प्रवर्ते जाण पर सर्व अवस्थाने त्रिपे मारो सदा जगाम, प्रगटरूप चतन्यमम ए ऑवाण सदाय प्रभ घट, पट आदि जाण पु, तेथी तेने मान, जाणनार ते मान महि, महीप बेचू मान ? प्रभ

जाणनार से मान नाह, वहाय ने इसार ने परम बुद्धि क्या देहमा, स्यूळ देह अदि जल्प, देह होय जो आसमा, घटें म जब चेतननो भिन्न छे पैचळ प्रगट स्वमाब, एक्पनु पामे नहीं, त्रणे काळ द्वय भाव ५७ आरमानी द्यका कर, आरमा पीत आप, द्यकानो करनार हो, अपराज एष्ट आमाप ५८

(२) शक्य-शिष्य ज्यास आरमाना अस्तिरवना, आपे महाग प्रकार, समय तनी पाम छै, अतर मर्चे विचार ५९ सीजी श्रम पाम रवा, आरमा नहि अविनाश, देहसोगरी कार्जे. देहसियोंने नाय ६०

भववा बस्तु शिकि छे शण शमे पलटाय ए अनुभवधी पण मही, आसा नित्य क्याय ६१ (२) समाधान-सद्गुत खवाच बहु सात्र ससीग छै, नळी जड रूपी दृष्य

चेतनना उत्पत्ति रूप, कोना अनुमव वृत्य ? ६२ जेना अनुभव धश्य ए, उत्पन्न रूपनुनान, ते तेथी जुदा बिना, माय न केमे मान ६३ १९६' भे स्वोगो देखिन, त ते अनुभव दस्य, ' अपने महि स्वोगची, आत्मा नित्य प्रयम ६४ बाजी चेतन अपने. चेतनची जह पाम.

एते क्ष्मुंत कोर्से, क्यार कदी न गाय ६५ कोई स्पोगोधी नहीं, जेती उत्पत्ति चाय, गाउ न तेनो कोर्देगा, तेवी नित्य यत्राय ६६ होनादि उद्याचना, स्पोदिक्सी माय, पूर्वम सलार ते, खीवनित्यन स्पाय ६७ बाल्या स्थे नित्य छे, पर्याप पण्टाय,

बाला इसे नित्य छे, पसीचे पण्टाम, बाजारि वय प्रस्मान, जान एकने पान ६८ क्यवा आन शनिकन, जे जाणे परानार, बेरतारीत शक्तिक सहि, बर अनुसब निर्मार, ६९ क्यार शर्र बलुला, वेबळ होय ज नाउ, बतन पान नाउ ती, केमा मळे बनाउ ७०

(न) दाकर-दिष्य छवाच वर्षा जीव न कमनो, कम अ वर्ता इसे, बचना सहन स्वमाय का, वस जीवनी वर्म ७१ माटे मोन उपायनो, कोई न हेंदु जजाय, कर्मवणु कर्तापणु का नहि बा नहि जाय ७३ (वे) समाधान—सद्युद उवाच होम न चेतन भेरणा, कोण यहे तो कर्म र अदस्त्रमात नहि प्रत्या, जुओ निचारी यम ७४ को चेतन करत नधी नधी चढा सो कम.

111

फैनळ होत अधन जो, भारत छने न केम ? अमन छे परमाधवी, पण निज्ञ मान सेम, ७६ वक्तां ईरवर कोई नहिं, ईन्यर तुद्ध स्वभाव, अपदा भेरक स गण्ये, ईरवर दोषक्रमाव ७७ केतन जो निज्ञ मानमा, क्ली आए स्वभाव, वर्षे नहिं निज्ञ भानमां, कर्ली काए स्वभाव,

तेथी सहज स्वभाव नहि, सेम ज नहि जीवचम ७५

13 १९३ (४) शका—शिष्य उवाच जीव कर्म क्लॉ क्हा, पण भाका नहि सोय,

धु समजे जह मम के एळ परिणामी होय ? ७९ फळनाता ईस्बर गण्ये भानगण्यु सधाय, एम कह्ये ईस्वरतण्यु ईस्वरपणु ज जाय ८० ईस्बर सिद्ध धया बिना जानत नियम नहिं होय,

पछी गुमागुम कमना, भोग्यस्थान नहि मोय ८१ (४) समाधान-सदगुठ उवाच

भावनर्थं नित्र बन्ता माटे चेतनरूप, जीववीयती स्कृष्णा, ग्रहण वरे व्हाय्प ८२ शेर मुगा समज मही जीव साम प्रक्रमान, एम गुभागृत वन्ममू भोनायण जणाय ८३ एन राव ने एव नृष, ए जादि जे भेद, बारण विना न वाय त ज सुमानुस वेय ८४

पक्ताता ई बरतणी, एमा नधी जरूर; कर्म स्वमावे परिणमें, धाय भोगशी दर ८५

275 ते ते भीग्य विरोधना, स्थानव द्रव्य स्वभाव, गहन बात छे निष्य आ वही सहीपे साव ८६

(५) शका—शिव्य उवाच कर्ताभोक्ता जीव हो पण सेनो नर्डिमोश. बीत्यो काळ अनत पण वतमान छ दोप ८७

शम करे पळ भागवे, देवादि गतिमाय, अनुभ कर नरकादि पळ कम रहित न क्याय ८८ (५) समाधान-सदग्र उवाध जेम नुभानुभ कर्मेपद जाण्या सफळ प्रमाण

तम निवृत्ति सपळता, माटे मोश सुजाण ८९ बीत्यो बाळ बनतस, कम गुभागुम भाव, वह शुभागुम छन्ता उत्पन्ने मोक्ष स्वभाव ९०

देहादिक स्यागनो आत्यतिक विगोग. सिद्ध मो । शान्त्रत पने, निज अनत सुखभोग ९१

(६) शका--शिष्य उवाच

होय बदापि मोक्षपन, नहि अविरोध उपाय. वर्मो बाळ अनतना, शाधी छैदा जाय? ९२

184 अथवा मत दशन घणा कहे उपाय अनेक, तेमा मत साची क्यो, बने न एह विवेक ९३ वई जातिमां मील छे क्या बयमा मोल, एनो निन्चय ना बने घणा भेद ए दोष ९४ तेथी एम जणाय छे मळे । मोन उपाय, जीवादि जाण्या तणो गो उपकार जथाय ? ९५ पाचे उत्तरधी थयु समावान सर्वांग, समजु मोन उपाय ता, चदय उदय सद्भाग्य ९६ (६) समाघान—सद्गुरु उवाच

पाचे उत्तरनी पई आत्मा विप प्रतीत, षासे मोनोपायनी सहज प्रवात ए रीव ९७ वर्मभाव अनान छे माध्यभाव निजवास अधकार अज्ञान सम, नाने नानप्रकास ९८ ज जै कारण बधना तह बधनो प्रय

ते बारण छेन्क दमा मोनपुष भवअत ९९ राग, द्वेष अज्ञान ए मुस्य कमनी ग्रथ, थाय निवृत्ति जेहथी, ते ज मोक्षमी पय १००

वर्ग अनत प्रवारता सभी मुबरे आठ तैया मुख्ये भोठनीय, हणाय ते बहुं वाठ १०० वर्ग मोलनीय भेद ये दान स्वारत नाम हुने बोध बीडरामता अबून उपाय आग १०३ वनस्य क्रीधाल्यो हुने धामदिल तेह प्रयास आप १०३ वनस्य क्रीधाल्यो हुने धामदिल तेह प्रयास अपना वर्षन, प्रया नी सेह है रे ४ छोडी मत दान उन्नो आग्रह तम विकल्प कहो। माण आ माणी जम तहना तल्य १०५

225

पट्चन्ता पटप्रना सें पूछपा करी विवार से पन्नी सर्वोगता मो माग निर्दोर १०६ जानि वपनो भद नहिं कहो भाग का साथे साथे से मुक्ति ल्हे एमा भद न कोय १०७ कथायनी खणात्वरा, मात्र मोश अभिजाय,

क्यायनी उपनातवा, मात्र मोक्ष अभिलाप, भव खद अतर दया, त वहीए जिज्ञास १०८ त जिज्ञासु जीवने, पाय सद्गुरवाध सो पामे समक्तिने, वर्ते अतरहोष १०९ 190

वर्धमान समस्ति यई, टाळ मिथ्याभास, उत्य याम चारित्रनो, बीतरागपत वास ११२

मेचळ निजस्त्रभावतु अस्तर वर्ते नान, नहीए बबळनान त, देह छठा निर्वाण ११३ नीट वपनु स्त्रम्न पण आग्रत चढा शमाय, सम विभाव अनादिना, गान चता दूर याय ११४ पट्टे देहाध्यान तो, निह नती तु वम, नहि भोत्ता सु तहनी, ए अ धमनो मम ११५

ए ज धर्मयी मोत्र छ, तु छा मोत्र स्वरूप, अनत दान जात तु, अयावाध स्वरूप ११६ मुद्ध बुद्ध बत्यपन स्वयुद्धाति मुख्यान, बीजु नहीए बेटलू ? तर विचार तो पान ११७ निरुच्य सर्वे आतातो आधा क्षत्र समाय, धरी मोता एम कही, सहजसमाधि माय ११८

१९८ शिष्य-द्रोघबीअप्राप्तिकयन सद्यक्ता उपदेगवी बाब्यु अपूर्व मान

निजयन निजमांही लहा दूर यय अगान ११९ भारत निजस्तक्ष से सूद्ध सदनाहण अजर अपर अधिनागी ने यहातीस तक्ष्य १२० क्या भोका कमनो, निभाव वर्षे व्याय मृति बही निजमावमा, ययो अक्सीत्याय १९१

अधवा निजपरिणाम जे, शुद्ध घेननारूप

क्ता भीका शहनो निविज्यस्य स्टब्स् १२२ भोक कही निज्युद्धा ते पामे ते पण सम्बाध्यो तो तमा सक्त मान निवच्य १२३ कही नहीं भी सद्युद्ध क्याध्यानुक्यार सामानस्य समुक्यों, कही न्याध्यानुक्यार सुप्रमुक्यण्य को एक आस्मायी सी हीन

ते तो प्रमुए आपियो बतु चरणाधीन १२५ आ दहा^{(२} आजमी बर्तो प्रभु आधीन दास, दास टू दास छु, तेह प्रमुनो, दोन १२६ म्यान यतो तरवारवन, ए उपनार अमाप १२७

उपसहार

दर्शन पटे समाय छे. सा वट स्थानक माही, विचारता विस्तारथी सशय रहेन काई १२८

थारमञ्जाति सम रोग नहि सदगुर वद्य स्जाण, गुरुआज्ञा सम पथ्य नहि औपत्र विचार ध्यान १२९ जो इच्छी परमाय ता बरो माय पुरवाय भवस्थिति आदि नाम गई, छनो नहि आत्माप १३०

निरचयवाणी सामळी साधन धजवा नो य. निश्चय राखी लक्षमा माधन करवा सोय १३१

नय निश्वय ध्वातथी आमा नथी बहेल, एकात व्यवहार नहि बने माय रहत १३२ गच्छमतनी जे बस्पना त नहि सद पवहार,

भान नहीं निजन्पन्, त निश्चय नहिं सार १३३ लागळ जानी थई गया, वतमानमा हाय, याशे बाळ भविष्यमा मार्गभद नहि बोम १३४ भानी र्मान गप्तरहित वर्से

१० ते आतरणा पान नहीं अन वराग्यारि भाषत देशा पंगतत नथा, जेया तथा जीवनी गर्ग बाजा जे जीवने पास ते पण भवतागरमां हुव जीवने पास ते पण भवतागरमां हुव

११ ए औद रण मनार्थमां व सर्वे छे देमके उपर बह्मा जीव सन जम मूळ्यमंत्रियों महामंता छे सब बाने जानी गणाववाना माननी हाजायी योगाना गुण्यम्बन्ती झारत है, मारे से यण रासार्थने गामे मही बाने बन् बहितारी एटरे जेने दिये जान गरिणाम पामवा योग्य मही सब बोनोमा से पन गणाय

३० अने बांच मान माया, कोमरूप बचाय पाठडा वडपा नमी तैम अने अंतर्वसाया उत्तरान ययो नही, सारमामा गुग पहण बरवाडप सट्टपण जेन रहां नयी तैम सरवारत्वनुकत करवाते जन अरगरातदुर्दर नथी तै मनार्यो जाब दुर्भाग एटके जन्म जरा मर्चने

छैन्दादाजा मोगमार्गने पामवा योग्य एव सनु माग्य स समझव ३३ एम मतार्थी जीवना रूमण कहा। ते पहेबानों तेतु ए छे के कोई पण जीवनों ते जाणाने मताय जाय इस बातार्थी जीवना रूपण कहीए छीए—ने रुसण वैद्या छे ? तो के बात्माने श्रव्यादाय मुखनी सामग्रीना हेनु छे

१४ ज्या आत्मज्ञान होय त्या मुनिपण होय

₹0€

14

अपनि आतमान न होय त्या भूतिपणु न ज समवे 'ज समति पास्तु त मोशित पास्तु न प्या प्रमित्त ए एके आत्मतान छे त्या मृतिपणु आणी एम 'बाचारण मूत्र' मा नहा छे एटळे जेना आत्मतान होय ते साचा गृह छे एम जाणे छे, जो आत्मतानरहित होय तो पण 'गितान गुळता गुस्ते छत्तुम मानय पाम पण्या छै, ती भी मह से मान एम आत्मता छै, ती भी मह से मान पण्या छै, ती भी मह से मान पण्या छै, ती भी मह सम्बन्धेर १ पास एम आत्मार्थ छए छै

३५ प्रत्मन सद्गुप्ती प्राप्तिनी मोटो उपकार जाणे, अर्थात् साक्ष्मारियों जे ममाधान बई धनवा मोग्य नयी, जने जे दोषो सद्गुष्ती आज्ञा धारण वर्षी विना जना नपी ते सद्गुष्त्योगयी समाधान थाय, अने ते दाया टळे, माटे प्रत्यक्ष सद्गुष्त्यो माटो उपकार जाणे, अने ते तृद गुरु प्रत्ये मन, बचन, कायानी एक्छाची आज्ञाक्तिपणे बर्ते ३६ त्रण बाळन विये परमार्थनो पथ एटले मोहानो मार्ग एक होवी जोईए अने जेथा स परमाथ सिद्ध बाय से श्यवहार जीवे मा य रालयो जोईए बाजी नही ३७ एम असरमां विचारीने जे सद्गुरुना योगनी शोध करे, मात्र एव आत्मार्थना इच्छा राखे पण मान पुत्रादिक सिद्धिरिद्धिनी वणी इच्छा रासे नही-ए रोग जैना मनमा नधी ३८ ज्या नवाय पातवा पहचा छे. मात्र एक मोनपद सिवाय बीजा काई पटनी अभिलापा नची. ससार पर जेने वैराग्य वर्ते छे अन प्राणामात्र पर जन दया छे. एवा जीवने विच आत्माधनो निवास चाय

210

स्यां मुधी सने भोगमार्गनी प्राप्ति न बाव अने आस्य भौतिक्य अनत दु जती हेतु वनो अतररोत्त न मटे ४० एवो बात क्या आने स्या महत्तुकती बोध घोमे क्यान् परिचान वासे अने ते बायना परिचानसी सुख साम एकी शुक्रमारस्था मण्डे

३९ ज्या सुधी एवा जीगण्या जीव पाने नहीं.

बाप करे ते जानची मोहनो क्षय करी निर्वाणपदने पामे

४२ जेपी ते सुविचारदवा उत्पन पाय, अने मोश

माग सकत्रवाम आव ते छ पदस्त्रे गुदिगिष्यना सवादयी

करीने बही यह छु

४४ आस्मा छै, 'ते आस्मा नित्य छै', 'ते आस्मा

मोल बाय छे', श्रेन ते मोलना उपाय एवो सत्यम छे'

४४ ए छ स्थानन अथवा छ पद अही सलेपमा
कहा छे अने विचार नरवाची पटदरान पण त ज छे
परमाय समज्याने माटे पानापुर्व्य ए छ पदी कहा। छे

पोताना कभनो कर्ता छे' ते कर्मनी भोक्ता छे , 'तेथी

४५ दृष्टिमा आवडी नधी, सेम जेनु कई रूप जगातु नधी, तेम स्पादि बीजा अनुभवधी पण जवाबापणु नधी, माटे जीवनु स्वरूप नधी, अर्थात् जीव नधी

शीव नवी

४६ अथवा देह छ से ज आरमा छे, अथवा इंद्रियो

छे ते आरमा छे, अथवा स्वामोच्द्रवास छे से
अर्थात् ए यो एकना एक देहरूने छे, माटे

४० अने के अन्या होय गांत करूप दा करे ब्रहा ? को यर नर श्राहि परायों श हो श्रेत कराय श्र लेश आप्या होय हो दा मारे म जनाय ? ४८ मार्ग साम्बाधिकरा सने सामा नवी गारने मेना क्षेत्रजा क्रमें "लाब करवान योवन्ध स कारा असरती रावाणी व * पर राष्ट्राध्य राजवाची सामे राजाबन्द हिन्य हो। बरो ८९ देशध्याच्यी एर समान्शिक्षां स्थानने शीचे हेट्यो परिचय सा लया बाल्या है। अबो क्रव्यन तने देह माणा हो गा सामा अने देह बाल जुना छ देमने वयं जन जुना ए एन्या प्रत्य मानमा अपने ध ५० अनान्स्रिक्ष्यं अल्पनन क्षेत्र क्षेत्रा सर्वस्थी देहच आभा भारताश अवदादह जेवो आस्त्रा

भारतो धे पण अम तत्रवार न त्यान त्रतानहण सारतो राजो बन्ने कुनां कुनो धे तेय सारमा सने देह बन्ने क्या

ने देश काम्बोर्ग विच्या के अपने । राजम् अनुवेदान्य करी

विशा नदी

जुना धे

भान छे अर्थात जेत पाचे इद्वियोना ग्रहण करेला विषयने जाण छे ते आत्मा छे, अने आत्मा विना एकेक इद्विय एकेक विषयने ग्रहण करे एम कहा, ते पण उपकारमा कहा, छे

यनु नान नयी अने आत्माने तो पाचे इद्वियना विषयनु

५३ देह तेने जाणता नधी इदियों तेने जोणती नधी अने स्वामोन्छ्वासम्प प्राण पण तन जाणनी ते सी एक आत्मानी सत्ता पामीने बढपणे पडचा रहे छ, एम जाण व्यवस्थाने जे जाण छ एवा प्रगटस्वरूप चतःयमय छे, अर्थात जाण्या म नर छे एवा जेनो स्वभाव प्रगट छे, अने

ए तेनी निनानी खदाय बतें छ कोई दिवस से निवानीनी भग बतो नवीं ५५ चन पट शानिने तु पोत जाणे छे ते छे एम सु माने छे जने जे सं घन पट आदिनो जापनार छे सेने मानदो नवा गानात तेन वन्त्र ? ५६ दवळ देहने विषे परम बदि आदामा आल छ

५७ कोई काळ जेमा जाणवाना स्वभाव नणी से जड, अने सदाय ने जाणवाना स्वभाववान छ ते चेतन, एवी धेयनो केवळ जुदो स्वभाव छ, अने स कोई पण प्रजारे

अने स्यूल दहने विषे बाडी बद्धि पण जीवामा आव छे जो देह ज आत्मा होय ता एवी विकल्प एट॰ विरोध

चवानी वलत न आवे

५८ आत्मानी शका आपा आपे पोते करे छै जे

६१ अथवा बस्तु क्षणे भणे बदलाती जीवामा आवे छे, तेथी सब बस्तु क्षणिप छे, अने अनुभवधी जोता पण्

६२ दह मात्र परमाणुनी नयीग छे, अयवा सयोगे करो सारमाना संबंधमा छे बळी ते देह, जड छे, रूपी छे

ष अनुभवाय छे

भारमा नित्य जणातो नची

धनानो करनार छे ते ज आह्मा छे ते जणातो "स्पी, ए माप न पर्दे शके एषु आह्मय छे ५९ आह्माना होबाएणा विय आपे जे जे प्रकार कह्मा तेनो अञ्चरमा विचार करबाधी सम्भव घाय छे ६० पण बीजी एम हाका धाय छे, वे आहमा छे हो पण कि अधिनाश एटके निस्य नची, जणे काळ होय एसो पदार्थ नची आहमा हाल स्वामाणी उदान्त धाय, अने विद्योग विचारण पारे

योग्य नयी अने उत्पत्ति धवा याग्य नयी तथी चेतन तेमा नाग पण पामवा योग्य नथी बळी ते देह रूपी

एटले स्पूजी परिणामपाठी है, अने चेतन ह्रद्या छ रवारों तेना समोगधी चेतननी उत्पत्ति सी रीत बाव रे अबे तैमा लग पण पम धाव रे देहुमाथी चेतन उत्पन्न साम छे अन तमा ज नाश पासे छे, ए बात कौना लनुमनने बता रही रे अर्थान् एम केले जाण्यु कैसक लामनार एवा चेतननी उत्पत्ति देहुबी प्रथम है नहीं, छने नाग तो नथी पहला छ त्यार ए अनुसन्न यथी

क्षते माना तो नधी पहला छ त्यार ए अनुभव ययो कोते? ६२ जेना अनुभवमा ए उत्पत्ति अने नासनु ज्ञान वर्षेत मान तथी जुना विना कोई प्रशार पण सम्भवतु नधी अर्थात चेतनना संपत्ति रूप काय छ एको कोईने

पण अनुभव थवा योग्य छ नही

एवा आत्माना दूश्य एटले तने आत्मा जाणे छे अने ते सयोगनु स्वरूप विचारता एवी बोई पण सयोग समजातो नषी के जेथी आत्मा उत्पत्न चाय छे माटे आत्मा सयोगची नहां उत्पत्न चयेलो एवी छे, अर्वात अस्पीगी छे स्वामाविक पदाप छे, माट ते प्रत्यून नित्यं

समजाय छे ६५ जडघी चेतन ऊपजे अने चतनघी जड उत्पन्न याय एवो योईने क्यार कटी पण अनुभव याम नही

षाय एवी घोईने क्यार कटा पण अपूर्ण जान नहीं ६६ जेनी उत्पत्ति कोई पण सयोगोधी षाय नहीं, तनो नारा पण कोईने विषे षाय नहीं माटे आत्मा

निकाळ नित्य' छे ६७ कोबादि प्रकृतिजानु विशेषपणु सर्व वगेरे प्राणीमां जनमी ज जोबामा आये छे बर्तमान देहे तो त सम्यास कमों नवी, जमनी सामे ज त छ, प्टले ए

त ब्रम्यास क्यों नथी, जमना साथ जिल्ला पूर्वजमनी ज सत्वार छे, जे पूर्वजम जीवनी नित्यता सिद्ध करें छे ६८ झारसा बस्तुपणे नित्य छे समये समये गुना परिणामना पल्टवाची तना पर्यायनु पल्टवामुग्र 33·

७१ जीव वमती वर्ताण्यी कमना वर्ता वम छ ब्रद्धवाधनायान संध्यां भरे छ गम नहीं ने जीव ज तनी क्लां छै एम कहो तो प्रधाने जीवनो पर्मण छै अर्थात धर्म होवाची नयाग्य निवृत्त न याय ७२ अथवा एम नहीं दो आरमा गणासगग छ

अन सत्वानि गुणवाळी प्रपृति कमनो वय कर छ, तस नही को जीवन कम करवानी प्ररणा न्यर कर छ नथी **ईदवरण्टास्य हावायी ओव न वभयी अवय** छ ७३ माटे जाव नोई रीत कमनी कर्ला पई शक्ती

नची अन मोलनो उपाय शरवाना बोई हुनु जलातो नधी, को जीवने कमनु क्लापण नधी अने जी क्लापण होय तो नाई रीन स सना स्वभाव मटवा योग्य नयी

७४ चतन एरले आरमानी प्रेरणारूप प्रवृत्ति न श्लोय ती वर्मने वाण पहण वरे ? अहनो स्वमाव प्ररणा नधी. जह सन चेतन बयना घम विचारी जुजा

७५ आत्मा को कम करतो नधी, तो त बता नधी,

पाय नहा एटले ए भाव टळी शक्छे, माटेत आ मानो स्वामाविक धम नहीं ७६ क्वेज को असग होत अर्थात क्यार पण तन क्मनु करवापणु न होत ता तने पोताने ते आत्मा प्रथमयी नेम न भासत⁷ परमाध्या ते आत्मा असग छे, पण ते तो ज्यारे स्वरूपनु मान बाय त्यारे बाय ७७ जगतनो सपना जावाना समनो ईरवर कर्ती कोई छे नहीं, सुद यात्मस्वमाव जेनी थयो छे त ईश्वर छे, अने तने जो प्रेरक एटले कमकत्ता गणीए तो तने दोपनी प्रमाव थयो गमाता लाईए, माटे ईरवरना प्रेरणा जीवना वर्म वरवामा प्रमृष्ट्वाय नही ७८ आत्मा को पीताना शुद्ध चता यादि स्वमावमा

वन तो ते पोताना त प स्त्रनादना कर्ता छे अर्थात ते व स्वरूपमा परिणमित छ अन् त गुद्ध चत यादि भानमां बततो न हाय त्यार वर्मभावनो कर्ता छै

पळ देशमां परिणामी साय ? अर्थान् फटराँडा पाय ? ८० पटरांडा ६वर मारीए ता मोन्डारण् सामी रातील, बर्धान् औरने ६वर कर्म मोगवारे सबी जीव नानों मोन्डा गिळ साम, गण परने पळ प्रसीतवाळी हैन्यर गणीए सी नेतृ ईन्यरण्य म रहत् नची

एम पण पाछो विरोध आव छ

से प्रहण कर छै

२२२ ७९ जीवी कमानेवर्तावर्धाएठोपास वर्मनी भोवतायोवनहो ठर वस्याजक स्वस्थान सुसमजेवी छै

जगतनो नियम पण नोई रह नहीं अने गुमानुम नर्म भोगवाना नोई स्थानक पण ठरेनद्वा एटले जीवन न मनुं भोक्नुल नया रहा," ट मावकर्ष जीवने पोतानी भाति छे, माटे पेतनक्ष छ अने स भातिने अनुवासी वई जीवकीय स्पुरायनान साथ छ सथा जह एवा हस्यकर्मनी वर्गमा

८१ तथी पळवाता ईव्बर मिद्ध यती मधी एटले

८३ धर अने अमृत पोत जागता नदी ने समारे सा जीवन पळ आपयु छे, सापण जे जीव साय छे, तन से फळ षाय छे एम शुमाराम कर्म, आ जीवने आ फळ आपनु छे एम जाणता नयी, तापण ग्रहण करनार जीव क्षेर अमृतना परिणामनी रीते फळ पामे छे

८४ एक राज छे अने एक राजा छे, ए आदि घट्यो गीचपण, ऊचपण, कृष्णपण, सुम्पपण, एम पणु विचित्रपण छे, अने एसी ज भद रहे छेते, सबसे सामानता नयो, ते ज सुमानुभ वर्मन, मामापण, छ, एम सिंद्ध करे छे, कैमके कारण दिना नामनी उत्पत्ति बती गयी

८५ फळदाता ईस्वरनी एमा कई जरूर नथी सेर अने अमुतनी रीत ग्रुमागुन कम स्वमाव परिणमें हे, अने नि सत्त्व चयेषी होर अने अमृत पळ दता जम निवत्त चाय है, तेम शुमागुम कमन भोगववाषी त नि सस्व चये निवृत्त वाय है

८६ उत्हर्प्ट शुभ अध्यवसाय त उत्हर्प्ट शुभगति छे, अने उत्हर्प्ट अगुभ अध्यवसाय ते उत्हर्प्ट अशुभगति छे, शुभागुभ अध्यवसाय मिश्रगति छे, अने ते जीवपरिणाम ते

तुभानुम् अध्यवसाया मिश्रमात छ, अन त जापपारणाः ज मुस्यपणे सो गति छ, तथापि चरङ्ग्ट गुम्न कर्ष्यममन, चरङ्ग्ट अशुभ द्रव्यतुं अग्रोगमन,⁴

२२४ मध्यम्बिति एम द्रव्यनी विदोष स्वमाव छे अने स आदि हेतुची स से भीग्यस्थानक होवा योग्य छ ह शिव्य ! जड चैतनना स्वभाव सयोगाति सुदमस्वरूपनी अत्र घणी

विचार समाय छ, माटे व्या बात गहन छे तीपण तने साब सक्षेपमा बन्नी छ ८७ कर्ला मोला जीव हो, पण तेवी सेनो मोडा यदा योग्य नथी, नेमने अनत पाळ चयी वीपण कर्म करवारूपी दौप हुजु तेने विष वर्तमान ज छे ८८ शुम कर्म कर तो तथी देवादि गतिमा तेनु शुम फ्ळ भोगव, अने अनुम कम करे हो नरकादि गतिन विषे रोत बनुभ पळ भोगवे, पण जीव कमरहित कोई स्पळे होय नहीं ८९ जेम शुमानुभ कमपद त जीवना करवाथी सें थता जाण्या, अन तथी तनुभीक्तापणु जाण्य तम नही करवायी अथवा त कर्मनिवृत्ति करवाथी त निवृत्ति पण बना योग्य छे, मार त निवृत्तिनु पण सपळपण छे, अर्घात्

जेम ते शुमापुम कम अफळ जता नथी, तम तनी निवृत्ति पण अफळ जवा योग्य नथी माटे त निवृत्तिरूप मोटा छे

एम ह विचक्षण । त विचार

774 ९० वससहित अनन्तवाळ बीत्यो, से से श्रमानम इस प्रत्येनो जीवनो बासिन ने लोधे बोस्यो पण तेना पर

15

उदासीन धवाणी से व मफ्ट छेनाय, अने सथा मोदास्वमाव भगट याय

९१ देहादि सयोगनी अनुत्रमे वियोग सी यया नरे छै, पण से पाछा ग्रहण न याय ते रीते वियोग नरवामा बाव तो सिद्धस्यरूप मोशम्बमाव प्रगरे, अने शाव्वत ^{प्रने} बनत सात्मानद भोगवाय

९२ मोशपद बदापि होय तोयण ते प्राप्त यवानी कोई अविरोध एटले ययातथ्य प्रतीत पाय एवी उपाय जणानी नथी, केमके अनत काळना क्मों छे ते आवा अपापुष्यवाळा मनुष्यन्हणी नेम छेदा जाय ?

९३ अथवा कदावि मनुष्ये हुना अस्पायुष्य वर्गेरेनी शका छोड़ी दईए तोवण मन अने दशन घणा छे. अने ते मोलना अनेव उपाया कहे छे, अर्थान काई कई बहे छे अने नाई कई कह छ, तमा कयो मल राघो ए विवेक

बनो शके एवो नयी

यई राके प्रमु तभी माने जीवानिन स्वरूप आणवामी रण तु उपकार थाय ? अर्थान ज पदन अर्थे आणवा ओर्नेप है पदनी उपाय प्राप्त थवी अशक्य देवाय छ ९६ आपे पाने उत्तर व क्या तभी सर्वीत पटले वर्धी रीत मारि गकानु समायान यमु छ पण जो मोशानी उद्यास समनु हो सद्भाग्यनी उन्य-उन्य याप 'अव उन्य 'उदय वे सार रान्न छै त पान उत्तरना समायानयी

९७ पाचे वत्तरती तारा आत्माने विषे प्रतिति पर्दे हो हो मोपना उपात्मी पण एज रीत वने सहसमा प्रतीति पर्दो अने बते अने 'सहस एक' पर्दु पर्दे कहा हते अने पाचे पन्नी चाना निद्युत पर्दे हो तेने मोपायाय समझाबी सर्दे सठण ज नयी एम दर्शावता, तया जिय्यत

षयेली मोत्रपटनी जिलामानु तीव्रपण दर्शाव छ

क्षाप्त छे

९८ कर्ममाव छे ते जीवनु अनान छे अने मोक्षमाव
छे ते जीवना पाताना स्वरूपने विषे स्थिति पवी त छे
जाननो स्वराम अपनार जवी छे वीभी नेम प्रसास
पता पणा काळनो अपकार छना नाग पाने छे तेम

ज्ञानप्रकाश यता अभान पण नाश पामे छे

९९ जे जे कारणा कर्मवयना छे त ते कमवयनो
माग छ, अने ते ते कारणाने छदे एको ज दशा छे ते
मोभना माग छ, अवनो अत छे

१०० राग द्वेत अने अनान एनु एक्टब ए कमनी मुख्य गाठ छे, अर्थात ए जिना कमनो वघ न पाय तेनी जैयी निवृत्ति पाय ते ज मोलना माग छे

जैयी निवृत्ति याय ते ज मोगना माग छै

र ॰ र 'सत्' एटले अविनागी', अने चत्र यमय
एटने सब भावने प्रकाशवास्य स्वनावस्य अय सब
विभाव अने रहादि समोगना आमासको रहित एवो

विचळ एटके नुद्ध आत्मा पामीए तेम प्रवर्धिय ते मीक्षमाग छे १० १० वस्य अनतः प्रवास्ता छ पणतेना सुख्य मानावरणानि आठ प्रकार याग छ तेमा पण मुख्य मोक्रतीयरण छे ते मोक्रतीयरण हणाय वनी पाठ गट छ

226

१०६ ते मोहनीयवर्ग व मेरे छ - एव दर्शनमीह नीय' एटके 'परमापने विश्व अपरमायवृद्धि अने अपरमाय ने विवे परमायवृद्धिम्म, बीओ चारिनमोहनीय तथा रूप परमायने परमाय आणाने आरमस्वमायमा जे नियरता याम ने नियरतान रोमल तथा प्रवेशनकरास्थ्य क्याय

क्षने नोषपाय त चारित्रमोह्तीय

हरानमोहनीयने आत्मकोध, अने चारित्रमोहनीयन
वीतरागपण् मार्च कर छ आम तना अचून उपाय छे
केमें मित्रमाक्ष्मेय त दशनमाहनीय छ तनो प्रतिपदा स्वारम्याकोष त दशनमाहनीय छातो प्रतिपदा स्वारमयोग छ अन चारित्रमोहनीय रागादिक परिणामस्य छे तेनो प्रतिपन बीतरागमाय छे एटके अधकार जेल

प्रकाश यवायी नास पाने छ—त तनी अयूक स्पाय छे,—तेम बोध अने बीतरागता दर्शनमोहनीय अने रोनी शकाम छे, सरळताथी माया रोना शनाय छे, सतीपयो छोम रोनी शनाय छ, एम रसि, अरसि जादिता प्रतिपमयो ते ते रोपो रानी शकाम छे, तेज ननसबनी तिरोव छे अने ते ज तेनी निवर्तत छे वळी सबने आ बाठनी प्रयक्ष अनुमव छे अथना सबने प्रयम अनुमव पई शके रसु छ कोषादि रोनवा रोनाय छे अने समंबबने रोने छे त अनर्मदानानी मार्ग छे ए माम परनेने नहीं, पण अने अनुमवमा आने छ ता एमा

१०४ क्रोघादि भावधी कमवष थाय छे, अने क्षमा दिक मावधी ते हणाय छे अर्थात क्षमा राखवाथी क्रोध

सदेह वो बरवा? १०५ आ मारो मत छे, माटे मारे बट्टमी ज रहेनुं अपना आ माड दशन छे माटे गमे तेम मारे ते सिद्ध बर्ग्यू पूरी आएड अपना (यहा विकस्पन छोडीने आ जे मामं वहात छे ते साधने, तना उत्त्य अपन जानमा

अही जन्म' शब्द बहुवचनमां वापर्यों छे, ते एटलु ज

११४ करोडो वयनु स्वप्न होय दो पण आग्रत यतां रत शमाम छे तेम अनादिनो विभाव छेत आत्मज्ञान ता दूर याय छे

१९५ हे सिष्य ¹ देहमा ज आरमवा मनाई छै अने ति कीमे स्त्री पुत्रानि सम्मा अहममत्वपणु वर्ते छे, दी गत्नवा जो आरमामा ज मनाम अने से देहाच्यास एटके

ात्मता जो बारमामा ज मनाम अने ते देहाच्यास एटले हिमा बात्मवृद्धि तथा बात्मामा दहबुद्धि छ त छूटे सो षु हमना क्लों पण नथी, अने भोवता पण नथी, अने ए

ाषमनो मर्ग छे ११६ एज धमधी मोटा छ अने छुज मोदास्वरूप

ो, अर्थान् शुद्ध आस्मपद ए ज मो र छे व्यनत ज्ञान ज्ञान तथा सऱ्याबाघ सुलस्त्ररूप छो

११७ तु दहादिक सब पदाध्या जुदा छ बीईमा नात्मद्रव्य मळतु नथी, कोई तमा भळतु नथी, द्रव्ये द्रव्य एसार्थयी सदाय भिन्न छे. माटे सुं सुद्धे छो, बोयस्वरूप

हो, चैत मप्रदेशात्मक हो स्वयज्योति एरले कोई वण तने प्रकाशतु नयी, स्वभाव ज तु प्रकाशस्त्रहण छो, अने अध्यावाम मुखनु साम छो बीजू केटलू वहीए ? अधवा यण सु बहेबु ? टूंकामा एटलु व बहीए छीए जो विचार

११८ सर्वे शानीओंनो निष्यम अत्र आवीने समाय कर तो ते पदने वामीश हे, एम बहीने सद्गुर मोनता घरीने सहजसमाधिमा स्थि

वया अर्थात वाणीयोगनी अप्रवृत्ति करी ११९ शिप्यते सब्गुपला उपदेशयी अपूर्व एटके पूर्वे

कीर्द दिवस नहीं आवर् एवं भान आर्थ, अने तेने पीतानु श्वरूप पाताने बिंग ग्रंपातच्य सारग्रं अने देहात्म

१२० पोतानु स्वरूप पृत्व श्रीतमस्त्रिक्ता, अत्रर असर अमिनाची अने देहती स्मष्ट और भारमु स्नु बद्धिहर अज्ञान दर चम्

१२१ ज्या विभाव

मुख्य नययी कमन् स्वभावमा वृत्ति वही तेषी २३४ १२२ व्यवता आत्मपरिणाम जे शुद्ध वैत यम्बरूप छे, तनो निवित्रस्यस्वरूपे शक्तिमोशना यथा १२३ आत्मानु शुद्ध पट छत्त मोण छ, अन ज्यी

से पमाय ते तनो माग छ, थी गद्गृष्ट कृपा बरीन निष्रपनी सर्व माग समजान्यो १२४ अही । अही । बरणाना अपार समुद्रस्यश्य आत्मरुग्मीए मुक्त सद्गुण आप प्रमुए आ पामर जीव पर

आह्वचनारण (को उपनार नर्यों

१२५ हुं प्रभाग वरण आगळ शु पह ? (सद्गुह हो
पदम निकाम ए एक निकाम नण्याभी मान उपनेणान
हाना हो पण शिव्यपमें गिष्य आ वयन बस्तु छ) ज
जे आगतमा पण्या है ते सी आह्वामी अनेणाह निमृह्य

खेवा है, ते आत्मा तो अगे आप्यो तना परण समीप हुं भीजूं पुषक ? गरु प्रभूता परणने आयोन बतु एटल मात्र वरवान्यी बरतान हु समय हु १२६ आ बेहु आदि गन्यी ज वर्ड मार गणाय है ते आजपी करोने सद्गुरु प्रमुने आयोग वर्जे हु तह

प्रभूत। दास छूं दास छू, दान दास छ

१२७ छमे स्थानक समजावीने हे सद्गुरु देव। जारे देहादिया आत्माने, जेम म्यानची तरवार जुदा कांडान बतावाए तेम स्पष्ट जुदो बताव्या, आपे मपाइ गके नही एवा **उपकार क्यों**!

१२८ छये त्यान था छ स्थानकमा समाय छे विनाय कराने विचारवायी को पण प्रकारनो सनय रहे

नही १२९ बारमाने पाताना स्वरूपनु भान नही एवी वाजो कोई रोग नथी सद्गुर जेवा सेना कोई साचा

बयवा निपुण वदा नया सद्गुरुआनाए चालंगा समान बीजु कोई पच्या नयी अन विचार तथा निदिध्यासन जेवु

कोई तन औपव नयी

१३० जो परमायने इच्छता हो, तो साची पुरुषाय करा अने भवस्थित आदिन नाम र ईने आत्मायने छेदो

नहा

१३१ आतमा अवघ छे अमग छे सिद्ध छेएवी निश्चयमुख्य वाणो सामळीन साधन तजवां योग्य नथी

१३२ अत्रे एकारे निश्चयनय शहा नवी, अववा एशति व्यवहारनय शहा नवी, अय ज्या ज्या जम प्रे

निश्वयस्यस्य प्राप्त करवें

तेम साथे रह्या छं

१३ १४० मध्य मतनी महतना छे से सद्दश्यदहार नधी

पण मारामध्योता रूपाणमां मही से बगा अन मोशोपायमां
विकास्त्रमां रूपाणमां मही से बगा अन मोशोपायमां
विकास्त्रमां रूपाण आदि बहुता से सद्दश्यक्तार छ, जे सदे
सी समेवमां बहुँव छे पीतामा स्वस्थ्य प्रान वर्गत,
वर्षाण जेम हे सामसमा साथे है तो सामसामां अनगब

पाम्या विना निश्वय पोशार्या वरे छे त निश्वय सारमूठ नयी १२४ मूतराळमां चे शानीपुरवा वर्ष गया छे, बन गानकाळमां जे छ अन मिक्यकाळमां येने ताने कोईने मानकाळमां जे छ अन मिक्यकाळमां येने ताने कार्य

धयो मधी देहाच्यान वर्ते ही. अने जे येशन्यादि साघन

भागती भड़ नभी अर्घात परमाय से तीती पूर माग ध अने सने प्राप्त करवा योग्य व्यवहार एग से अ परमाप सापरक्षे दगकाळादिने शीधे भेद कहा होच छता एक पळ उत्तम्न करनार होबायी समा पण परमाय भट नथी

१३५ सब जीवने विषे सिद्ध समान सत्ता छे, पण त तो जे समजे तेने प्रगट थाय रा प्रगट थवामा सद्गुरुनी बाजायी प्रवनयु, तथा सद्गुहए उपदेशेत्री एवी जिनदशानी

विचार करवो त वय निमित्त कारण छ

१३६ सद्गुरुआना आदि ते आत्मसाघनना निमित्त कारण छे, अने आत्माना ज्ञान दर्शनानि उपादान कारण छे, एम कास्त्रमा कह्य छ, तेची उपात्रतनु नाम छई जे नोई ते निमित्तने तजरो ते सिद्धपणाने नहीं पामे, अने

भ्रातिमा बर्स्या करसे वेमके साचा निमित्तना निषेधार्थे त उपाराननी व्यान्या शास्त्रमा कही नयी, पण उपादान अजागृत रामवाधी तार साचा निमित्त मळ्या छता काम नहीं चाय, माटे साचा निमित्त मळचे ते निमित्तने अव लबीने उपादान स मुख करव् अने पुरुषायरहित न थव. एवो शास्त्रकारे पहेली से चास्यानो परमाय छे

१३७ मुखधी निश्चयमुख्य वचनी वहे छे, पण अतरपी पोताने ज मोह छूटघी नयी एवा पामर प्राची मात्र ज्ञानी नहेवराववानी कामनाए साचा भानी . द्रोह करे छे

२६८ १६८ दया वारि गमता हामा गम स्वाप अन बराज ए मुगा सम्पृता पत्र्या प्रदाय गुराज घटने बाहुत होय, अर्थात ए गुरु विना ममुपयु यमा हाय

१३९ मोहभावता ज्यां सम समो हाय, अपना पां मोहन्सा बह शील धर्न होय तथा नातीती दणा वहींग

बने बाबी तो जेग पनामां नात मानी तीय छै नन घाति पहीए १४० समस्य जगत अणे एठ जेनु आच्यु श समया स्वप्न जेर्च जगत नन नानमां वर्ते छ से नानानी दना छे, शापी मात्र बाचाजान एटने बहुवा मात्र चाउ है १४१ पाचे स्थानरन विनागिन जे एइ स्थानके बर्ने एटले त मानना जे उपाय शह्या छ समा प्रवर्ते, से पानमुं स्थानक एट कमा ।पट क्षन पाम १४२ पूर्वप्रारमधोग्यी जन नह बने छ पण स देहयी अतीत एटले दहानिनी वस्पनार्राट्त आरमामय जेनी द्या वर्ते छे, स मानीपुरुवना चरचवनळमा अवशित बार

थी सद्गुदचरणार्थं वमस्तु

वदन हो [

२३९ (५०) मोहमबीबी जेजी अमोहपणे स्थिति हो, एवा श्री

माहमयाचा जना अमाहपण स्थात छ, एवा आ ना यथा॰ 'मनने ल⁵ने आ वधु छे' एवा जे अल्यार सुधीनो

थयेला विषय लग्यो. ते सामा य प्रकारे ता यथातथ्य छे.

तमापि मन', 'तन न्देने' अने 'आ बधु, अने 'तेनो निर्णय' प्या जे चार भाग ए वास्त्रना शाय छे, ते चार काळना बोचे जेन छे तेम नमजाय एम आणीए छीए जेने ते समजाय छे तने मन बन' वर्ते छे, बते छे, ए बात निश्चत्रकप छे तथापि न यततु होय तोषण ते आत्म स्वम्यने वित च बत्ते छ ए मन बच यवानी उत्तर च्या रुच्यो छे, ते सबधी मुख्य एवी रुच्यों छे जे शायप रुख्या छे, ते सबधी मुख्य एवी रुच्यों छे जे शायप रुख्या मा आत्म्या छे ते प्या प्रवार विचारवाने मोष्य छे

महात्मानो देह वे भारणने ल्ड्रीने विद्यमानवृधे वर्ते छे प्रारम्भ कम भोगववाने वर्षे जीवाना मस्याणने वर्षे तथापि ए बानेमा ते खालपणे स्दय आवेली वृतनाए बर्ते छे, एम जाणीए छीए प्यान, जम तम, किया मार्च ए मर्च करों अमे जमारण मेर्द बार को दरम फळतूं नारण भारता हो ता निरम्य पये मारता हो तो, पाटळां बुंबि नारतमा पारस्कता पर म कडी होच ता, जाय तो ती भारतबरे गई थे एम भारता हो तो ते सामन्त्रे पणा माराणी भीरवबरे स्वाराचा भारता हो थे न्यानी दृष्णा पाय छ हुनी सामी विगयणे निरम्भने विषे भारता सरवान कराबु अगल जेंबु साम थ, तथानि विश्व अवस्थान्त्रे बर्जनु नारी, एटले ने कराब पूर्ण के अवस्थान्त्रे बर्जनु नारी,

सर्वे प्रशार क्याभियोग सो निवृत्त बर्गा योग्य छे क्यापि जो से क्यायियोग सत्मगारिबन अर्घे व इच्छवामां आवती होय तेम ज पाछी चित्तरियति समयपणे रहेती होय यो त क्यायियागमा प्रवतन स्पेस्टर छ

गमा अवतन् जनसर छ मुबई बधास यद १४ बुघ, १९४८

(५१)

वित्तमां तम परमायनी इच्छा राखी छो एम छ, तथापि ते परमायनी प्राप्तिने अत्यत्वयंगे बाच करवाबाळा एवा जे

